सरस्वती-सिरीज़ नं० ३३

मिस्टर चर्चिल

अनंतप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

सरस्वती-सिरीज़

जीवन-चरित

मिस्टर चर्चिल

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर विंस्टन चर्चिल की मनोरंजक जीवनी, उनकी आत्मकथा के आधार पर।

अनंतप्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०
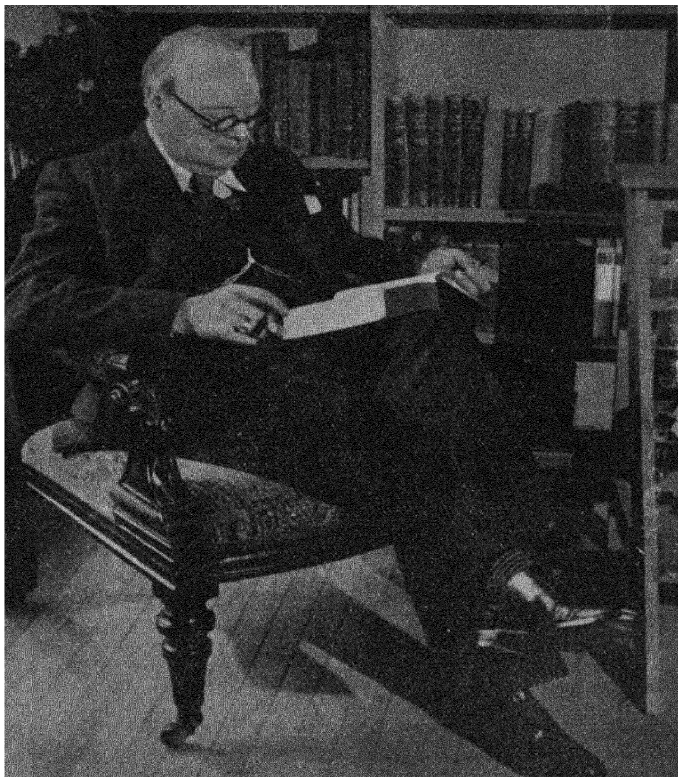
प्रधान मन्त्री मिरटर चाचल अपन घर के पुरतकालय म बठे हुए पढ रहे है ।

देखिए पृष्ठ ४

किशोर चर्चिल अपनी माता लेडी रैंडाल्फ और भाई जान चर्चिल के साथ।

शैशव तथा वंश-परिचय

एक सुन्दर-सा मकान। दो छोटे बालक खेल रहे थे। सामने पन्द्रह सौ टिन के सिपाही हथियारों से लैस खड़े थे। टिन सैनिकों की इस पैदल सेना मे कुछ घुड़सवार भी थे। दो भागों में उन सैनिकों को बाँटा गया था। दोनों फ़ौजें एक दूसरे से युद्ध करने के लिए तैयार दिखाई पड़ती थीं। और दोनों के कमांडर थे वे ही दोनों छोटे बालक—विंस्टन और जैक।

जैक विंस्टन का भाई था। सीधा-सादा और गम्भीर। संधि के अनुसार उसे काली फ़ौज रखने का ही अधिकार था और वह भी एक सीमित संख्या के बाहर नहीं। बेचारे के पास तोपें भी न थीं। परन्तु इसके विपरीत बालक विंस्टन की सेना के पास १८ तोपें तथा अन्य हथियार थे।

और उस दिन फ़ौजें आक्रमण करने के लिए तैयार खड़ी थीं। सेनापति बालक विंस्टन आज्ञा देने ही वाला था; उसकी नसों में रक्त ज़ोरों से प्रवाहित हो रहा था। ठीक उसी समय लार्ड रैंडाल्फ़ ने कमरे में प्रवेश किया। बालक विंस्टन ने गर्व से पिता की ओर देखा फिर बिना कुछ ध्यान दिये अपनी सेना की देख-भाल करने लगा; आक्रमण के लिए दाँव सोचने लगा।

लार्ड रैंडाल्फ़ ने अनुभवी फ़ील्डमार्शल की भाँति पुत्र की फ़ौजों का निरीक्षण किया। फ़ौज के खड़े करने का ढंग देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। बड़े ही क़ायदे से फ़ौज खड़ी की गई थी। लार्ड रैंडाल्फ़ २० मिनट तक ध्यानपूर्वक पुत्र के सेनापतित्व को देखते रहे

फिर थोड़ा गंभीर होकर उन्होंने पूछा—विंस्टन, तुम सैनिक होना पसन्द करोगे?

बालक विंस्टन को सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वह तो जैसे इसके लिए तैयार ही था, जैसे उसने सैनिक होना अपने जीवन का उद्देश्य पहले से ही बना लिया हो; उसने तुरन्त उत्तर दिया—हाँ!

छोटा-सा उत्तर था पर पिता ने देखा बालक की आँखों से दृढ़ निश्चय और वंशगत वीरता झलक रही है; उसका सिर गर्व से ऊँचा हो गया है। लार्ड रैंडालफ़ संतुष्ट होकर अपने कमरे में चले गये।

बस, इसी छोटी-सी घटना ने विंस्टन चर्चिल के जीवन में परिवर्तन ला दिया। माता-पिता ने सोचा था चर्चिल किसी दिन प्रिवी कौंसिल के जजों के कपड़े पहनकर ब्रिटेन के न्यायाधीश के पद पर बैठेगा। उसकी क़लम से न्याय और अन्याय का निर्णय होगा परन्तु भाग्य तो यहाँ कुछ दूसरा ही प्रयत्न कर रहा था। विंस्टन चर्चिल को तो होना था ब्रिटेन और ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षक। उसका मस्तिष्क न्यायालय के लिए उपयुक्त नहीं था। उसके पिता लार्ड रैंडालफ़ ने यह पहले ही समझ लिया था कि विंस्टन 'बार' में अधिक सफल नहीं हो सकता। इस प्रकार चर्चिल न्यायाधीश न बनकर बने एक सिपाही।

साधारण-सी घटना कभी-कभी कितने बड़े परिवर्तन के लिए ज़िम्मेदार होती है! यदि हिटलर एक चित्रकार के रूप में वियना में आकर न बसता, तो सम्भवतः आज इतिहास कुछ दूसरा ही होता।

विंस्टन चर्चिल का जन्म ३० नवम्बर सन् १८७४ ई० को ब्लेनहेम पैलेस में हुआ। विंस्टन के पिता लार्ड रैंडालफ़ ब्रिटेन के उस समय के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों में गिने जाते थे। 'वे ब्रिटिश राजनीति की प्रेरक-शक्ति' समझे थे।

अपनी योग्यता के बल पर उन्होंने एक्सचेकर के चांसलर का पद प्राप्त किया था। इतना ही नहीं वे प्रधान मंत्री के पद के भी उम्मीदवार थे। ब्रिटिश पार्लियामेंट में उनका बड़ा ज़ोर था। लेकिन

लार्ड सैल्सबरी के मुक़ाबिले में उन्हें जो पराजय उठानी पड़ी उससे वे अत्यन्त हताश हो गये। उसके बाद ही जो घातक रोग ने उनको पकड़ा तो उनकी सम्पूर्ण शक्ति—शारीरिक तथा दिमाग़ी—नष्ट हो गई। और अन्त में वह बीमारी उनके प्राण लेकर ही गई।

जिस समय उनकी मृत्यु हुई युवक विंस्टन चर्चिल की आयु केवल २१ वर्ष की थी। चर्चिल को अपने पिता से बातचीत करने का भी बहुत कम अवसर मिला था। शायद जीवन में दो ही चार बार उन्होंने पिता से बातचीत की थी। मिस्टर चर्चिल ने स्वयं लिखा है—

'उनके साथ का, उनके बग़ल में पार्लियामेंट में बैठने का, उनका समर्थन करने का सारा स्वप्न ही भंग हो गया। मेरे लिए केवल उनके उद्देश्यों का अनुकरण करके उनकी स्मृति की रक्षा करना भर ही शेष रह गया।'

विंस्टन चर्चिल का जन्म आक्सफ़ोर्ड शायर के एक प्रसिद्ध ड्यूक-वंश में हुआ। इनके पितामह को मार्लबरो के ड्यूक की पदवी दी गई थी। यद्यपि वे आक्सफ़ोर्ड शायर के ब्लेनहेम स्थान मे अपना मकान बनाकर रहते थे फिर भी उन्होंने मार्लबरो के ड्यूक की पदवी स्वीकार की। यह बात है उस समय की जब इँगलैंड में महारानी अने सम्राज्ञी थीं। मिस्टर चर्चिल के वंशजों ने रानी अने के लिए कई युद्धों में वीरता के कार्य किये थे जिससे प्रसन्न होकर उनकी राजभक्ति के लिए महारानी ने उन्हें ड्यूक की उपाधि से विभूषित किया था।

इस वंश के सातवें ड्यूक के पुत्र थे लार्ड रैंडाल्फ़ जिन्होंने ब्रिटिश ख़ज़ाने के चांसलर का पद प्राप्त किया था। यही थे विंस्टन चर्चिल के पिता।

मिस्टर चर्चिल को यदि वीरता अपने पिता के कुटुम्ब से प्राप्त हुई तो शक्ति तथा युद्ध-प्रियता मा से। विंस्टन की मा जेनी जेरोम एक अमरीकन महिला थीं। लार्ड रैंडाल्फ़ का परिचय उनसे पेरिस में

हुआ था। उस समय कुमारी जेरोम भी पेरिस में अपनी मा के साथ ठहरी हुई थीं। प्रथम परिचय के क्षण से ही दोनों एक दूसरे को प्रेम करने लगे। जेरोम की अवस्था उस समय २१ वर्ष की थी और लार्ड रैंडाल्फ़ की २४ वर्ष की। अन्त में १५ अप्रैल १८७४ ई० को पेरिस के ब्रिटिश इम्बैसी में दोनों परिणयसूत्र में बँध गये।

जेनी जेरोम के पिता अमरीका के प्रसिद्ध व्यक्ति थे। जिस समय जेरोम का विवाह लार्ड रैंडाल्फ़ के साथ हुआ वे 'न्यूयार्क टाइम्स' के सम्पादक तथा स्वामी थे। लियोनार्ड जेरोम ने जीवन में कई बार उत्थान और पतन देखा था परन्तु हताश होना जैसे उन्होंने सीखा ही न था। सदैव उन्होंने परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया और सदैव उन्हें विजय प्राप्त भी हुई।

मिस्टर जेरोम की निर्भयता के सम्बन्ध में एक कहानी बहुत प्रचलित है। जिस समय अमरीका में गृह-युद्ध का तूफ़ान फैला था उसी समय दंगाइयों ने 'न्यूयार्क टाइम्स' की इमारत पर भी हमला किया। मिस्टर जेरोम साधारण व्यक्तियों में से नहीं थे। उन्होंने अपने कारख़ाने के सभी आदमियों को बन्दूक़ें दे रक्खी थीं। मशीनगन भी ख़रीद रक्खी थी। अतएव विद्रोहियों के आक्रमण करने पर उन्होंने उन पर तुरन्त गोली चलाने की आज्ञा दे दी। सन्-सन् करके गोलियाँ छूटने लगीं। विद्रोही आक्रमणकारी कुछ देर तक तो रुके रहे पर अन्त में उन्हें भागना पड़ा।

जेनी जेरोम बहुत ही सुन्दर महिला थीं। उनकी हँसमुख तथा मिलनसार प्रकृति ने शीघ्र ही लंदन के सभ्य समाज में उनको सर्व-प्रिय बना दिया। लार्ड रैंडाल्फ़ के जीवन की सफलता का बहुत कुछ श्रेय इस योग्य महिला पर भी था जिससे उन्हें पल-पल पर प्रोत्साहन तथा साहस प्राप्त होता था।

लार्ड रैंडाल्फ़ की मृत्यु के पश्चात् वे लगभग २५ वर्ष तक जीवित रहीं। प्रथम पति की मृत्यु के पश्चात् पाँच वर्ष तक वे वैधव्य बिताती

रहीं फिर उन्होंने कार्नवालिस वेस्ट से विवाह कर लिया परन्तु कुछ वर्ष बाद सन् १९१३ में उससे उनका सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। इसके बाद उन्होंने एक भूतपूर्व औपनिवेशिक शासक से विवाह किया। जेनी जेरोम की मृत्यु सन् १९२१ में हुई।

विंस्टन चर्चिल पर मा के स्वभाव का बहुत प्रभाव पड़ा है। यह नारी उन्हें सदैव प्रोत्साहित करती रही। प्रत्येक बड़े आदमी के भविष्य निर्माण में मा का स्थान बहुत अधिक होता है। मा जो शिक्षा बालक को अनजान में दे देती है वह बड़े-बड़े शिक्षक वर्षों में नहीं दे पाते। मिस्टर चर्चिल के शैशव जीवन पर उनकी माता की जो अमिट छाप पड़ी उसी ने उनको आज इस पद पर पहुँचाया है।

शिक्षा

विंस्टन चर्चिल की प्रारम्भिक शिक्षा हैरो के स्कूल में हुई। यद्यपि चर्चिल के कुटुम्ब को इँगलैंड के प्रसिद्ध शिक्षा-केन्द्र ईटन में ही शिक्षा मिलती थी परन्तु बालक चर्चिल का हृदय कमज़ोर था इसलिए उनके अभिभावकों ने यह सोचा कि पहाड़ पर शीतल जलवायु तथा मनोरंजक दृश्य उनके स्वास्थ्य के लिए अधिक उपयुक्त होंगे। और इस प्रकार सरिता-तट पर स्थित अपने कुटुम्ब के शिक्षा-केन्द्र ईटन को छोड़-कर उन्हें हैरो की यात्रा करनी पड़ी।

उस समय हैरो के स्कूल के हेडमास्टर डाक्टर वेल्डन थे। डाक्टर वेल्डन बड़े अनुभवशील व्यक्ति थे। उनकी अन्तर्दृष्टि बड़ी पैनी थी और वे अपने विद्यार्थियों को केवल उनकी परीक्षा की कापियों के आधार पर ही नहीं समझते थे। चर्चिल को हैरो में प्रवेश कराने का श्रेय इन्हीं डाक्टर वेल्डन पर था। डाक्टर वेल्डन ने अपने इस नये विद्यार्थी में काफ़ी दिलचस्पी ली।

मिस्टर चर्चिल की डाक्टर वेल्डन पर सदैव बड़ी ही श्रद्धा रही है। हैरो में उन्हें डाक्टर वेल्डन का स्नेह सदैव प्राप्त रहा। अध्यापक तथा विद्यार्थी सभी चर्चिल के मिलनसार स्वभाव के कारण उनके मित्र बन गये। बालकपन से ही चर्चिल के मुखमण्डल पर वह तेजस्विता विराजमान थी जिसे देखकर प्रत्येक व्यक्ति को, जो उनके सम्पर्क में आता, उनसे प्रेम हो जाता।

इतना सब होते हुए भी हैरो में उनका जीवन सुखमय नहीं था। स्कूल की पुस्तकें; साहित्यिक ज्ञानार्जन उन्हें निरर्थक तथा श्रमसाध्य ज्ञात होने लगे। उनको परेशानी महसूस होती और वे बहुधा सोचते कि इन पुस्तकों का पढ़ना, इनको कंठस्थ करना किसी काम का नहीं है। इनसे उनका कोई लाभ न होगा। वे चाहते थे कुछ काम करना। उनका निर्माण ही किसी और उद्देश्य को लेकर हुआ था। इन सबका परिणाम यह हुआ कि चर्चिल की तबीअत स्कूल के कामों से ऊब गई और वे जितनी भी जल्दी हो सके उससे छुटकारा पाने का प्रयत्न करने लगे।

चर्चिल को हैरो का वह जीवन अत्यन्त व्यर्थ प्रतीत होता था। यदि उन्हे किसी के संदेशवाहक का काम करना होता या ईंट ढोनेवाले मज़दूर की भाँति धूप और गर्मी में मेहनत करनी होती तब भी वे अपने को अच्छा समझते। क्योंकि उसमे कुछ यथार्थता तो थी पर इन पुस्तकों का पढ़ना व्यर्थ मालूम होता। बनिये का लड़का कम से कम दूकान साफ़ करके अपने पिता की कुछ तो सहायता कर ही सकता है पर चर्चिल को ऐसा मालूम होता कि उनके बहुमूल्य जीवन के ये वर्ष व्यर्थ ही कट रहे हैं, उनका कोई प्रयोजन नहीं।

परन्तु हैरो में चर्चिल को अपने जीवन के अधिक वर्ष नहीं व्यतीत करने पड़े। हैरो की पर्वतीय जलवायु के कारण उनका स्वास्थ्य भी खूब बन गया और वहाँ से वे सैनिक शिक्षा पाने के लिए

'सैंधर्स्ट' के सैनिक स्कूल में भेजे गये। ब्रिटेन में सैनिक शिक्षा का 'सैंधर्स्ट' सबसे बड़ा केन्द्र समझा जाता है।

'सैंधर्स्ट' की दुनिया ही निराली थी। यहाँ चर्चिल को अपनी इच्छा के अनुकूल काम मिल गया। ये वर्ष उनके लिए शिक्षा-कार्य तथा व्यस्तता के थे। यहाँ पुस्तकों की व्यर्थ रटाई नहीं थी। युवक चर्चिल को अपना समय व्यर्थ जाता हुआ न जान पड़ता और न वे यही समझते थे कि वे संसार के उन प्राणियों में से हैं जिनका अस्तित्व ही व्यर्थ है। लैटिन और ग्रीक के शब्दों को बेकार रटने के स्थान में चर्चिल को अब जो कुछ करना पड़ता उसमें उन्हें उपयोगिता दिखाई पड़ती। उन्हें अब 'टैक्टिक्स' क़िलेबन्दी, सैनिक-क़ानून और सैनिक-नियंत्रण आदि विषयों की शिक्षा दी जाती।

चर्चिल को साहसपूर्ण खेल अधिक पसन्द थे। स्कूल के खेलों में उन्हें तनिक भी आनन्द न आता। वे चाहते थे घुड़सवारी, जिमनास्टिक ऐसे खेल और वे उन्हें सैनिक-स्कूल में ही प्राप्त हो सकते थे।

उस समय सैनिक-शिक्षा आज की युद्ध-पद्धति को देखते हुए अधूरी कही जा सकती है। आधुनिक युद्ध में बम और हवाई जहाज़ों का स्थान सर्वोपरि है परन्तु उस समय बम का प्रयोग युद्ध में करने की प्रथा नहीं थी। वायुयानों का तो युद्ध में कोई स्थान ही नहीं था। यही कारण है कि युवक विंस्टन को बम आदि की ट्रेनिंग नहीं दी गई। फिर भी इससे उन्हें आगे चलकर कठिनाई नहीं पड़ी।

'सैंधर्स्ट' का शिक्षाक्रम सन् १८९४ में समाप्त हो गया। युवक विंस्टन के सम्मुख आशाजनक भविष्य था। उनके साथ १५० अन्य विद्यार्थी थे। इनमें विंस्टन का नम्बर आठवाँ था। उसी वर्ष मार्च के महीने में विंस्टन चर्चिल ने 'फ़ोर्थ हुशर्स' में प्रवेश किया। इस प्रकार चर्चिल की मनोकामना पूरी हुई। शैशव का वह स्वप्न सच करने की आशा लेकर उन्होंने जीवन में प्रवेश किया और भविष्य ने उनकी वह महत्त्वाकांक्षा पूरी भी कर दी।

प्रथम रण-यात्रा

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं चर्चिल को कार्यव्यस्तता अधिक पसन्द थी। सम्राट् की सेना में भर्ती होने पर उन्हें सिवा युद्ध के और कार्य हो ही क्या सकता था। परन्तु वह समय दूसरा था। १९ वीं शताब्दी का अन्त युद्ध-प्रिय व्यक्तियों के लिए अत्यन्त अशान्तिदायक था। १९ वीं शताब्दी तथा विक्टोरिया-युग दोनों शान्ति के साथ अपने-अपने अवसान की प्रतीक्षा कर रहे थे । उस समय तो लोगों की यह धारणा-सी हो चली थी कि युद्ध संसार से उठ ही जायगा।

योरोप में युद्ध का कहीं नाम भी नहीं सुना जा रहा था। सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत युद्ध की आग कही नहीं जल रही थी और न निकट भविष्य में जलनेवाली थी । ऐसे समय में चर्चिल ने सम्राट् की सेना में प्रवेश किया। युद्ध-क्षेत्र में शत्रु का रक्तपात देखने की उनकी इच्छा पूरी करने का कहीं भी ज़रिया न दिखाई पड़ता था। पर उन्हें तो अपनी वह इच्छा पूरी ही करनी थी। एक वीर सैनिक का हृदय बिना युद्ध के शान्त कैसे रह सकता है ।

जब कभी सैनिक चर्चिल किसी के मुंह से यह सुनते कि वह युद्ध-क्षेत्र में रह चुका है तो उनके हृदय में ईर्ष्या उत्पन्न होती और युद्धक्षेत्र देखने की उनकी लालसा और भी तीव्र हो उठती। उन्हें वे शान्तिमय वर्ष भारी मालूम होने लगते जब कि सैनिकों के लिए केवल बैठे-बैठे सिवा सिगरेट पीने के और कोई साधन समय काटने का न था।

पर इससे चर्चिल हतोत्साह होनेवाले नहीं थे। उन्होंने अपनी लालसा पूरी करने के लिए अपने मस्तिष्क का सहारा लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि पाँच वर्ष के सैनिक जीवन में ही उन्हें चार युद्धों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ।

देखिए पृष्ठ ८

बालक चर्चिल सात वर्ष की अवस्था में।   सैनिक चर्चिल २१ वर्ष की अवस्था में।

पत्रकार चर्चिल (सन् १८९८)   दक्षिणी अफ्रीका की सेना में (सन् १८९९)

देखिए पृष्ठ १४२

ब्रिटिश मंत्रि-मण्डल के कुछ प्रमुख सदस्य
(जून १९४०)

लेबर मंत्री मिस्टर अर्नेस्ट बेविन
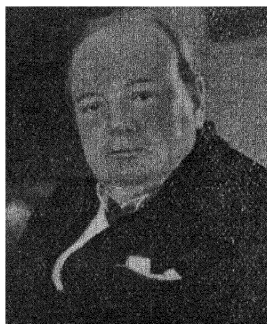
युद्ध-मंत्री एंथोनी एडेन
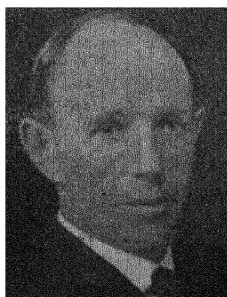
प्रधान मंत्री मिस्टर विंस्टन चर्चिल

वैदेशिक मंत्री लार्ड हेलीफैक्स

लार्ड प्रिवी सील क्लेमेंट आर० एटली

सैनिक जीवन में प्रवेश करने के कुछ मास बाद ही चर्चिल को अपनी इच्छा पूरी करने का अवसर आ गया। क्यूबा के गुरिल्ला लोगों ने विद्रोह किया जिसे दबाने के लिए ब्रिटिश सेना जनरल कम्पास की अध्यक्षता में भेजी गई। चर्चिल ने शीघ्र उस सेना के साथ जाने की कार्यवाहियाँ पूरी कर लीं। 'फ़ोर्थ हुशर्स' से उन्होंने एक लम्बी छुट्टी ले ली थी।

जनरल कम्पास की सेना में भर्ती होने में चर्चिल को अपने पिता के घनिष्ठ मित्र सर हेनरी ड्रमंड ओल्फ़ की बड़ी सहायता मिली। उस समय सर हेनरी ड्रमंड ओल्फ़ मैड्रिड-स्थित ब्रिटिश राजदूत थे। उनका युवक चर्चिल पर बहुत स्नेह था।

क्यूबा की यात्रा करने के लिए चर्चिल को अधिक कठिनाई नहीं उठानी पड़ी। क्योंकि जनरल कम्पास ने सोचा कि यह उनके लिए गर्व की बात है कि उनके गुरिल्ला-युद्ध-पद्धति में ब्रिटिश सेना भी दिलचस्पी ले रही है। फल यह हुआ कि लेफ़्टिनेंट चर्चिल की युद्ध-यात्रा की तैयारी हो गई।

परन्तु अब प्रश्न यह था कि उनका भत्ता (Allowance) केवल ५०० पौंड प्रतिवर्ष था। इतनी थोड़ी-सी आय के साथ वे क्यूबा की यात्रा नहीं कर सकते थे परन्तु चर्चिल का हृदय तो युद्ध-क्षेत्र देखने के लिए विचलित हो रहा था और सभी कठिनाइयों के होते हुए भी यात्रा करने को तैयार थे।

जहाँ पर इच्छा होती है वहाँ पर साधन भी मिल जाते हैं। युवक चर्चिल की आमदनी की समस्या हल हो गई। उन्होंने अपने पिता के आदर्श का ही अनुसरण किया। लार्ड रैंडाल्फ़ ने एक बार जब दक्षिणी अफ़्रीका की यात्रा की थी तब उन्होंने 'डेली ग्रैफ़िक' पत्र के लिए अपना यात्रा-सम्बन्धी लेख लिखकर अपनी आय की वृद्धि कर ली थी। चर्चिल ने भी क्यूबा से एक लेखमाला लिखने का कार्य प्राप्त कर लिया।

सच्चे सैनिक के लिए युद्ध-क्षेत्र का प्रेम कुछ विचित्र ही होता है। क्यूबा में जिस समय चर्चिल का जहाज़ पहुँचा उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। उनका हृदय क्यूबा की पृथ्वी को देखकर उसी प्रकार प्रसन्न हो रहा था जिस प्रकार कोलम्बस पहले-पहल अमरीका की पृथ्वी को देखकर प्रसन्न हुआ था।

जहाज़ से उतरते ही जो सेना वहाँ के निवासियों के साथ युद्ध करने के लिए जा रही थी उसी में इन्होंने प्रवेश किया और युद्ध-क्षेत्र का मज़ा प्राप्त करने के लिए रवाना हुए। चर्चिल को युद्ध में सचमुच आनन्द प्राप्त होता है। एक बार 'आमडरमैन' के युद्ध-क्षेत्र से वापस आने पर उन्होंने एक सैनिक से पूछा था—'कहो, युद्ध में तुम्हें मज़ा आया?' बीस वर्ष बाद पश्चिमी मोर्चे पर उन्होंने फिर एक सैनिक से पूछा था—'तुम्हें इसमें मज़ा नहीं आता क्या'?'

कई दिनों तक यात्रा करने के पश्चात् चर्चिल युद्ध-क्षेत्र में पहुँचे। यहीं पहुँचने के लिए उन्होंने इतनी लम्बी यात्रा की थी, इतने कष्ट सहे थे। युद्ध-क्षेत्र के निकट आते ही उनका हृदय उत्साह से भर गया। किस प्रकार वे युद्ध में पहुँचें यही विचार उनके हृदय को विकल कर रहा था।

घोर जंगल में युद्ध हो रहा था। चारों ओर से सन्-सन् करके गोलियों की बौछार हो रही थी। उसी समय एक गोली सनसनाती हुई चर्चिल के निकट से निकलकर घोड़े के लगी। घोड़े के लगभग एक फ़ुट अन्दर वह प्रवेश कर गई; खून की धारा बहने लगी और चर्चिल ने अनुभव किया कि घोड़ा कुछ क्षण में ही मरना चाहता है। यह था उनका प्रथम अनुभव। इसके पूर्व उन्होंने युद्ध न देखा था। अब उन्हें विश्वास हुआ कि वे युद्ध-क्षेत्र में थे। रक्त देखकर उनका उत्साह और भी बढ़ गया और उन्होंने पूरे जोश के साथ युद्ध शुरू किया।

मिस्टर चर्चिल ने युद्ध के अपने इस प्रथम अनुभव के सम्बन्ध में स्वयं कहा है कि "यह देखकर मुझे यह अनुभव हुआ कि गोली मेरे

निकट से—एक फ़ुट की दूरी से निकलकर गई है। तो मैं युद्ध में था !"

कुछ दिन बाद युद्ध ने अधिक गंभीर रूप धारण किया। सेना तथा गोरिल्ला दोनों पक्षों की ओर से बहुत अधिक संख्या में सैनिक युद्ध-क्षेत्र में डटे हुए थे। गोलियों की बौछार हो रही थी। पेड़ों के बीच से गोलियाँ जब गुज़रती थीं एक अजीब प्रकार की भयंकर आवाज़ करती थीं। आसमान में धुआँ भर गया था। गोली छूटने की आवाज़ से कान फटे जाते थे।

चर्चिल ने यह सब देखा, उनको यह सब ख़तरनाक—अत्यन्त भयानक, प्रतीत हुआ। लेकिन उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। इतना सब होते हुए भी मरनेवालों की संख्या बहुत कम थी।

क्यूबा के युद्ध के समाप्त होने के बाद चर्चिल इँगलैंड वापस आये। अब उन्हें युद्ध का अनुभव हो चुका था। अपने साथ के सैनिकों में वे क्यूबा के गोरिल्ला-युद्ध के अपने अनुभवों का गर्व के साथ वर्णन कर सकते थे। परन्तु उन्हें इतने से ही शान्ति नहीं प्राप्त हो सकी। वे अधिक से अधिक समय युद्ध में व्यतीत करना चाहते थे।

भारत-यात्रा

जिस समय मिस्टर चर्चिल क्यूबा के युद्ध-क्षेत्र से इँगलैंड लौटे उनकी सेना भारत जाने की तैयारी में थी। भारत में उस समय अफ़रीदियों ने कुछ उपद्रव कर रक्खा था और उन्हीं को दबाने के लिए ब्रिटिश सेना भारत भेजी जा रही थी। मिस्टर चर्चिल ने इसे अपना सौभाग्य समझा। भारत के सीमाप्रान्त के अफ़रीदियों के सम्बन्ध में उन्होंने बहुत-कुछ सुन रक्खा था इसलिए उन्हें इस समाचार से बहुत प्रसन्नता हुई।

परन्तु यह प्रसन्नता अधिक समय तक न रह सकी। शीघ्र ही उन्हें यह मालूम हुआ कि उनकी सेना भारत न भेजी जाकर अन्य सेना भेजी जायगी। इस समाचार ने चर्चिल के उठते हुए हृदय पर पाला गिरा दिया। वे बहुत ही दुःखी हुए।

सौभाग्य से जो सेना भारत जानेवाली थी उसके अध्यक्ष थे सर विंडन ब्लड। सर विंडन ब्लड के साथ युवक चर्चिल का परिचय पहले से ही था और वे चर्चिल के युद्ध-प्रेम से परिचित भी थे। उन्होंने चर्चिल से इस बात की प्रतिज्ञा भी की थी यदि कभी उन्हें कोई अवसर मिला तो वे अवश्य ही चर्चिल को युद्ध-क्षेत्र में ले चलने का प्रयत्न करेंगे। चर्चिल ने तुरन्त ही उन्हें एक तार दिया जिसमें उन्होंने युद्ध में जाने की इच्छा प्रकट की तथा सर विंडन ब्लड को उस प्रतिज्ञा का स्मरण कराया।

सर विंडन ब्लड को जब मिस्टर चर्चिल का तार मिला तब तक सेना में सभी जगहें भर गई थी। उन्हें मिस्टर चर्चिल को अपनी सेना में न ले सकने का बड़ा खेद हुआ पर अब हो ही क्या सकता था? अन्त में उन्होंने मिस्टर चर्चिल को तार दिया कि यद्यपि सेना में सभी स्थान भर गये हैं परन्तु यदि वे चाहें तो अफ़सर-संवाददाता की हैसियत से सेना के साथ चल सकते थे।

पर इसके लिए आवश्यकता इस बात की थी कि कोई पत्र उन्हें भेजने को तैयार होता। मिस्टर चर्चिल ने पत्रों से लिखा-पढ़ी की। अन्त में लन्दन के प्रमुख पत्र 'टेलीग्राफ़' ने उनके लेखों पर पाँच पौंड प्रति कालम देने का वादा किया। यद्यपि यह रक़म काफ़ी नहीं थी पर मिस्टर चर्चिल को तो युद्ध-क्षेत्र में जाना था। उन्होंने 'टेलीग्राफ़' के प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार कर लिया और भारत जाने को तैयार हो गये।

अपनी सेना से छुट्टी मिलने में उन्हें कठिनाई नहीं उठानी पड़ी और वे शीघ्र ही मालकंद सेना के हेड क्वार्टर्स में पहुँच गये। यह सेना हिमालय पहाड़ के चन्द प्रमुख दर्रों पर नियुक्त की गई थी।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह नया अनुभव था। ब्रिटिश फ़ौज को अफ़ग़ानों से लोहा लेना था जो कि सभ्यता से अपरिचित थे तथा रक्तपात, लूटपाट और युद्ध जिनके खेल थे। संसार की लड़ाकू जातियों में इनका प्रमुख स्थान समझा जाता था।

मिस्टर चर्चिल जिस सेना के साथ थे वह सेना महमूद घाटी में भेजी गई थी। यहाँ इपी के फ़क़ीर के प्रभाव के कारण अफ़ग़ानों ने कुछ समय पूर्व विद्रोह किया था। इस बार फिर उन्होंने विद्रोह कर रक्खा था। अफ़रीदी जाति ऐसी युद्धप्रिय है कि वह शान्त रह ही नहीं सकती। उसके युद्ध के जोश को चाहे कुछ समय के लिए दबा क्यों न दिया जाय पर उसका सदैव के लिए दमन अत्यन्त असम्भव है।

अफ़ग़ानों के इस युद्ध की एक घटना का वर्णन मिस्टर चर्चिल ने स्वयं अपने शब्दों मे किया है। १६ सितम्बर १८९६ की बात है। ब्रिटिश सेनायें महमूद घाटी में युद्ध कर रही थीं। उनका उद्देश्य बराबर आगे बढ़ते जाना था परन्तु कुछ कारणों वश उनकी प्रगति में रुकावट पड़ गई। हाथोहाथ युद्ध शुरू हुआ परन्तु फिर भी ब्रिटिश फ़ोज को सफलता मिलती न दिखाई पड़ी। फलतः उन्हें भागकर एक पहाड़ी स्थान में शरण लेनी पड़ी। आगे की घटना का वर्णन करते हुए मिस्टर चर्चिल ने लिखा है—

"ऐडजुटेंट के इस युद्ध मे गोली लग गई थी। चार आदमी उन्हें उठाकर ले जा रहे थे। ऐडजुटेंट का शरीर भारी था और वे सब बड़ी कठिनाई से उठाकर ले जा रहे थे। इतने ही में आस-पास के मकानों से आधे दर्जन पठान तलवारें लिये हुए बाहर निकले और उन लोगों पर झपटे। बेचारे ले जानेवाले ऐडजुटेंट के शरीर को फेंककर अपनी जान लेकर भागे। पठानों ने उस गिरे हुए शरीर पर ही तीन बार तलवार का वार किया। उस समय मुझे सब कुछ भूल गया। केवल इसी बात का ध्यान रहा कि मैं उस व्यक्ति को मार डालूं। मेरी कमर में तलवार बँधी हुई थी। मैंने द्वन्द्वयुद्ध का निश्चय किया।"

मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाल ली और उन पठानों के ऊपर आक्रमण किया। उस व्यक्ति ने जैसे ही चर्चिल को आते देखा—दोनों के बीच की दूरी २० गज़ से अधिक न थी—वैसे ही एक पत्थर उठाकर चर्चिल पर फेंका। और अपनी तलवार सँभालकर पकड़ते हुए अपने शत्रु के निकट पहुँचने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके साथी भी उसके पीछे ही खड़े थे।

मिस्टर चर्चिल उस पत्थर के भय से भागनेवालों में से न थे। उन्होंने पत्थर का वार बचा दिया और तुरन्त ही अपनी रिवाल्वर निकालकर निशाना लगाया। एक बार, दो बार, तीन बार। परन्तु कोई परिणाम नहीं। पता नहीं गोली उसके लगी या नहीं पर वह व्यक्ति पीछे एक चट्टान में जा छिपा। उस समय मिस्टर चर्चिल की परिस्थिति का अनुमान किया जा सकता है। उस पहाड़ी भाग के मार्गों से उनका परिचय न था। आसपास कोई साथी नहीं। अकेले वे कई शत्रुओं से युद्ध करने के लिए खड़े थे। गोली का असर शत्रु पर हो नहीं रहा था, तब फिर क्या करें?

मिस्टर चर्चिल आगे कहते हैं—"मैंने चारों तरफ़ देखा! शत्रुओं से घिरा हुआ मैं अकेला था। जितना तेज हो सका मैं वहाँ से भागा। चारों ओर गोलियाँ चल रही थीं। पहले अड्डे के निकट मैं पहुँचा। ओह! उसमें सिक्ख थे। उन्होंने मुझे इशारे करने प्रारम्भ किये और कुछ क्षण बाद ही मैं उनके बीच में था।"

लेफ़्टिनेंट चर्चिल की वीरता का परिचय हमें इस छोटी-सी घटना से मिल सकता है। सर विंडन ब्लड लेफ़्टिनेंट चर्चिल के कार्यों से बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने सरकारी पत्रों में विंस्टन की उपयोगिता का उल्लेख भी किया।

युद्ध में ३८ डोंगड़ा सेना के अफ़सर की मृत्यु हो गई। इस प्रकार एक स्थान रिक्त हो गया। लेफ़्टिनेंट चर्चिल उस पद पर नियुक्त किये गये। यद्यपि देशी घुड़सवार सेना से ब्रिटिश अफ़सर के सम्बन्ध

होने की यह पहली ही घटना थी फिर भी विंस्टन चर्चिल ने इसे हर्ष से स्वीकार किया क्योंकि वे अधिक से अधिक युद्ध का अनुभव करना चाहते थे।

विंस्टन चर्चिल और उनके सैनिकों के बीच मे भाषा की एक खाई थी। न तो विंस्टन को अपने सैनिकों की भाषा समझ में आती थी और न उन सैनिकों को अपने अफ़सर लेफ़्टिनेंट चर्चिल की। फिर भी चर्चिल के व्यवहार से सभी सैनिक उन्हें हृदय से चाहने लगे। 'चलो', 'मारो' आदि दो-चार इने-गिने शब्द ही चर्चिल को मालूम थे और उस युद्ध में उन्हें अधिक शब्द जानने की आवश्यकता भी न थी। सैनिकों को अपने अफ़सर से केवल इन्हीं आदेशों की तो आवश्यकता थी।

मिस्टर चर्चिल के लिए वे दिन बड़े सुख के थे। प्रयाग के प्रसिद्ध अँगरेज़ी पत्र 'पानियर' ने भी उन्हें अपना संवाददाता नियुक्त कर लिया था। इस प्रकार अपने अनुभव वे दो पत्रों—इलाहाबाद के 'पानियर' और लन्दन के 'टेलीग्राफ़'—में प्रकाशित करा रहे थे। परन्तु अधिक समय तक वे अपने इस सौभाग्य का उपभोग न कर सके। उनकी छुट्टी समाप्त हो गई और उन्हें शीघ्र ही अपनी सेना में वापस होना पड़ा। उस समय उनकी फ़ौज बँगलौर में थी और इसलिए उन्हें बँगलौर जाकर फ़ौज में शामिल होना पड़ा।

बँगलौर का सैनिक जीवन कुछ दूसरा ही था। सीमा-प्रान्त के युद्ध-क्षेत्र की-सी दिलचस्पी यहाँ न थी। यद्यपि यह लेफ़्टिनेंट चर्चिल को बहुत ही खला परन्तु इससे लाभ भी कम नहीं हुआ। इसी अवकाश के समय में उन्हें सीमाप्रान्त के युद्ध के अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करने का अवसर मिला। शीघ्र ही उनकी पुस्तक 'मालकंद युद्ध-क्षेत्र' (The Malkand Field Force) प्रकाशित हुई।

इस पुस्तक का बड़ा स्वागत हुआ। साधारण जनता से लेकर सेना के विशेषज्ञों तक के निकट यह पुस्तक बहुत ही लोकप्रिय प्रमाणित हुई। इसकी अत्यधिक बिक्री हुई तथा चारों ओर से लेफ़्टिनेंट चर्चिल

की प्रशंसा और बधाई प्राप्त होने लगी। वेल्स के राजकुमार ने भी पुस्तक के लेखक को बधाई का पत्र लिखते हुए उसे विश्वास दिलाया कि उसकी पुस्तक खूब पढ़ी जा रही है और खूब प्रशंसित हो रही है।

जहाँ पुस्तक को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई वहाँ सेना के अधिकारियों को इस पुस्तक के लेखक के प्रति असंतोष और क्रोध उत्पन्न हुआ। कारण यह था कि इस पुस्तक में विंस्टन चर्चिल ने सेना के अध्यक्ष और अफ़सरों की अनेक युद्ध-कला-सम्बन्धी भूलों की आलोचना की थी। जो कुछ भी लेखक तथा आलोचक की हैसियत से विंस्टन ने अपनी पुस्तक में कहा था उससे उनका आत्मविश्वास प्रकट होता है। उन्हें विश्वास था कि जो बात सेना के कमांडरों को नहीं मालूम वह उन्हें मालूम है। इसलिए उनकी भूलों का दिग्दर्शन कराते हुए वे तनिक भी नहीं हिचके और उनकी कड़ी से कड़ी आलोचना की।

चर्चिल को इस पुस्तक में बड़ी सफलता मिली। साहित्यिक क्षेत्र में तो उन्होंने इस पुस्तक के द्वारा यश प्राप्त ही किया, साथ ही साथ उन्हें धन भी कुछ कम न मिला। पुस्तक की बिक्री खूब हुई और उनको उससे अच्छी आय भी हुई। इस पुस्तक से मिस्टर चर्चिल की लेखन-शक्ति का पूरा परिचय मिलता है। यदि उन्होंने इस क्षेत्र में ही प्रवेश किया होता तो उन्हें इसमें भी उतनी ही सफलता मिलती। लिखने के लिए उनके सम्मुख उस समय भी अनेक विषय थे और पुस्तकों से अपनी आय देखते हुए उनके स्थान पर यदि कोई और होता तो उसे यह अवश्य सोचने के लिए बाध्य होना पड़ता कि वे सेना में ही रहकर थोड़ा-सा वेतन प्राप्त करें या पुस्तकें लिखें। परन्तु चर्चिल के सम्मुख रुपये की अपेक्षा अपनी रुचि का प्रश्न था।

अफ़्रीका की मरुभूमि में

लेफ़्टिनेंट चर्चिल अपनी सेना से छुट्टी लेकर इँगलैंड में अपना समय बिता रहे थे। उनकी पुस्तक की चर्चा खूब जोरों से हो रही थी। उसी समय समाचार मिला कि सूडान में युद्ध आरम्भ होने वाला है। पिछले कई वर्षों से सूडान के निवासी बहुधा विद्रोह किया करते थे अतएव इस बार किचनर, जो कि अब सरदार था, ने युद्ध-घोषणा करने का यही उपयुक्त अवसर समझा।

लेफ़्टिनेंट चर्चिल का हृदय इस समाचार को सुनकर प्रसन्नता से भर गया। उन्होंने तीसरी बार तीसरे देश में युद्ध के लिये जाने का निश्चय किया। परन्तु उनकी इच्छा इतनी आसानी से पूरी होने की नहीं थी। सैनिक अधिकारी-वर्ग को उनकी पुस्तक ने असंतुष्ट कर रक्खा था इसलिए उन्हें अपनी इच्छापूर्ति के लिए बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी। परन्तु ज्यों-ज्यों उन्हें अधिक कठिनाई उठानी पड़ती त्यों-त्यों उनका निश्चय और भी दृढ़ होता जाता। उनके प्रार्थनापत्र को किचनर ने नामंजूर कर दिया था।

परन्तु युवक विंस्टन के भाग्य-नक्षत्र ऊँचे थे और किसी प्रकार की भी अड़चन अपनी इच्छापूर्ति में उन्हें बाधक नहीं हो सकती थी।

उस समय ब्रिटेन के प्रधान मंत्री लार्ड सैलिसबरी थे। लार्ड सैलिसबरी के मुक़ाबिले में ही चर्चिल के पिता लार्ड रैंडाल्फ़ प्रधान मंत्री के पद के उम्मीदवार थे। लार्ड सैलिसबरी ने युवक चर्चिल की पुस्तक 'मालकंद युद्धक्षेत्र' को बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ा था। यद्यपि लार्ड सैलिसबरी बड़े ही कट्टर विचारों के व्यक्ति थे। पर पुस्तक पढ़कर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने उसके लेखक को अपने यहाँ बुलाया भी।

लेफ़्टिनेंट चर्चिल अपने पिता के प्रतिद्वन्द्वी से मिलने के लिए गये। प्रधान मंत्री लार्ड सैलिसबरी ने उनका स्वागत किया। प्रधान मंत्री की

इस मुलाक़ात का विंस्टन ने पूरा उपयोग किया। उन्होंने लार्ड सैलिसबरी को सरदार से अपनी सिफ़ारिश करने के लिए राज़ी कर लिया। सैलिसबरी ने सरदार को केबुल भेजकर विंस्टन को सेना में भर्ती कर लेने को कहा पर फिर भी किचनर ने चर्चिल के प्रार्थनापत्र पर ध्यान न दिया।

चर्चिल की मा ने अपने पुत्र की इतनी तीव्र इच्छा देखकर उनकी सिफ़ारिश ऐडजुटेंट जनरल सर एवेलिन उड से की। मा की सिफ़ारिश ने चर्चिल के उद्देश्य को पूरा कर दिया। सर एवेलिन ने यह निश्चय कर लिया कि चाहे सरदार स्वीकार करें या न करें पर युवक चर्चिल युद्ध में अवश्य जायेंगे। चर्चिल '२१ वें लैंसर्स' में भर्ती कर लिये गये। उनको वेतन नहीं दिया गया और साथ ही उन्हें यह भी प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि यदि वे युद्ध में मारे गये या घायल हुए तो इसके लिए सरकार ज़िम्मेदार न होगी।

चर्चिल को ये सभी शर्तें स्वीकार थीं। उन्होंने पत्रों से बातचीत की। 'मालकंद युद्धक्षेत्र' पुस्तक ने चर्चिल की ख्याति कर दी थी। इसी लिए तुरन्त ही लंदन के प्रसिद्ध पत्र 'मार्निंग पोस्ट' ने उन्हें अपना संवाददाता नियुक्त करने का प्रस्ताव किया। पारिश्रमिक भी उसने चर्चिल को १५ पौंड प्रतिकालम देने का वादा किया।

सन् १८९८ ई० की गर्मी के दिनों में लेफ्टिनेंट चर्चिल ने सूडान के लिए प्रस्थान किया। अगस्त के महीने में वे मिस्र के प्रमुख नगर कैरो पहुँचे और एक मास पश्चात् युद्ध-क्षेत्र में पहुँचे। जिस समय चर्चिल युद्ध-क्षेत्र में पहुँचे '२१ वीं लैंसर्स' युद्ध के लिए प्रस्थान करने ही वाली थी। इसलिए चर्चिल को बड़ी प्रसन्नता हुई उन्हें अधिक काल तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

ओमडरमैन का युद्ध सम्भवतः पुरानी युद्ध-कला का अन्तिम नमूना था। रणभेरी बजी और तुरन्त ही फ़ौजें दौड़कर एक दूसरे से भिड़

गईं। तलवारें और भाले चलने लगे, खून की नदियाँ बह चलीं और फिर चन्द मिनटों में ही सब कुछ समाप्त! ऐसा था वह युद्ध!

दरवेशों की सेना पीछे हट तो गई परन्तु ब्रिटिश सेना को भारी क्षति उठानी पड़ी। ३१० अफ़सरों में से पाँच अफ़सर और ६५ सिपाही मारे गये। १२५ घोड़े भी रण-क्षेत्र में काम आये। दरवेशों में से ४० मारे गये। लेफ़्टिनेंट चर्चिल के दाहने हाथ में एक बार चोट आगई थी अतएव तलवार के प्रयोग करने के कारण उनकी नसें फिर उखड़ गईं और फलतः उन्हें तलवार छोड़कर पिस्तौल से ही संतोष करना पड़ा। उन्होंने कई दरवेशों को अपनी पिस्तौल का निशाना बनाया।

सूडान के उस मनोरंजक युद्ध का आनन्द लेफ़्टिनेट चर्चिल अधिक न ले सके। कारण, किचनर ने सैनिकों की संख्या कम कर दी और चर्चिल को वहाँ से वापस आना पड़ा।

चर्चिल ने इस युद्ध का वर्णन 'नदी का युद्ध' (The River War) में किया। यह पुस्तक वहुत बड़ी थी तथा इसमें प्रधान सेनापति की खूब खबर ली गई थी। किचनर की आलोचना ने उन्हे इँगलैंड में सर्व-प्रिय बना दिया। मिस्टर चर्चिल ने सेनापति की युद्ध-कला-सम्बंधी भूलों तथा साधारण व्यक्तिगत दोषों की भी कटु आलोचना की। किचनर की आज्ञा से महदी की लाश कब्र से निकालकर नील नदी में फेंक दी गई थी। चर्चिल ने किचनर के इस कार्य की बड़ी निन्दा की तथा कहा कि किसी भी ईसाई के लिए यह कार्य कदापि अच्छा नही था।

इस प्रकार की आलोचनाओं का परिणाम यह हुआ कि सेनापति के विरुद्ध इँगलैंड में एक वातावरण तैयार हो गया। 'मालकंद युद्ध-क्षेत्र' के लेखक को 'नदी का युद्ध' में अधिक सफलता मिली। पुस्तक खूब बिकी और धन के साथ ही साथ चर्लिल ने इस पुस्तक से प्रचुर यश भी अर्जन किया।

राजनीति में प्रवेश

सूडान के रणक्षेत्र से लौटने पर विंस्टन चर्चिल ने सेना से इस्तीफ़ा दे दिया और अपने पिता की भाँति राजनीति में प्रवेश करने का निश्चय किया। एडजुटेंट जनरल सर एवेलीन उड ने यद्यपि उन्हें बहुत समझाया और इस्तीफ़ा देने से रोका परन्तु चर्चिल अपने निश्चय से न डिगे। यद्यपि यदि वे सेना में बने रहते तो शीघ्र ही वे उच्च से उच्च पद पर पहुँच जाते परन्तु राजनीति में प्रवेश करके भी उन्होंने भूल नहीं की; बल्कि यह कहना चाहिए कि विंस्टन ऐसी प्रतिभा का व्यक्ति तो चाहे जिस क्षेत्र में प्रवेश करता उसे अवश्य ही अत्यधिक सफलता मिलती।

सेना के पद से इस्तीफ़ा देने के अन्य भी कारण थे। विंस्टन महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति थे और सम्राट् की सेना में उनकी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए पर्याप्त क्षेत्र न था। उनकी रुचि भी एक ही ओर न थी और सेना में रहते हुए उन्हें अपने को सीमित रखना पड़ता। यह चर्चिल जैसे व्यक्ति के लिए असम्भव ही था। इतना ही नहीं, मातहत अफ़सर की हैसियत से उन्हें जो वेतन मिलता था वह भी बहुत थोड़ा था।

इसके अतिरिक्त एक और भी कारण उपस्थित हो गया जिसके कारण विंस्टन को सेना के पद से इस्तीफ़ा देने का ही निश्चय करना पड़ा। उनकी दो पुस्तकों ने सेना के अधिकारीवर्ग में तहलक़ा मचा दिया था। अधिकारी लोग ऐसे लेफ़्टिनेंट को कभी पसन्द नहीं करते थे जो अपने अफ़सरों की इतनी कटु आलोचना करे। साथ ही उन्हें पुस्तकों से इतनी अधिक आय हो रही थी कि उन्हें सेना की नौकरी करने की आवश्यकता न थी।

चर्चिल के हृदय में सैनिक-जीवन तथा पत्रकार-जीवन के लिए संघर्ष चल रहा था। उन्होंने देखा कि पत्रकार-जीवन के सहारे वे

सरलता से राजनीति में प्रवेश कर सकते हैं। सैनिक-पद से इस्तीफ़ा देकर पत्रकार-जीवन में प्रवेश करना विंस्टन चर्चिल के जीवन का मोड़ कहा जा सकता है।

नवम्बर के महीने में विंस्टन चर्चिल अनुदारदल (Conservative Party) के प्रधान कार्यालय में पहुँचे और अपने लिए एक निर्वाचन-क्षेत्र की माँग की। परन्तु उन्हें अधिक सफलता नहीं प्राप्त हुई। कारण, निर्वाचन की सफलता केवल धनीवर्ग के ही हाथ रहती है। अनुदार-दल के मैनेजर ने मिस्टर चर्चिल से स्पष्ट शब्दों में पूछा कि पार्टी के कोष में कितना धन दे सकते हो। मिस्टर चर्चिल के पास पार्टी के कोष में धन देने के लिए रुपया नहीं था। वे तो मुश्किल से अपने निर्वाचन का ही खर्च बर्दाश्त कर सकते थे। परिणाम यह हुआ कि उन्हें अनुदारदल में अधिक सफलता न दिखाई दी।

धन का अभाव आज भी प्रजातंत्र देशों में योग्य व्यक्ति को आगे बढ़ने में बाधक सिद्ध होता है। यद्यपि निर्वाचन का यह उद्देश्य अवश्य होता है कि जनता योग्य से योग्य व्यक्ति को अपने निर्वाचन-क्षेत्र से अपना प्रतिनिधि चुन सके पर होता है कुछ और ही। कितने ही नौजवान योग्य तथा लगनशील व्यक्ति केवल इसलिए आगे नहीं बढ़ पाते कि उनके पास इतना धन नहीं होता कि वे उसकी सहायता से अपनी पार्टी बना सकें। इँगलैंड में भी यह कठिनाई आज तक है। परन्तु मिस्टर चर्चिल ने जीवन में कभी हताश होना नहीं सीखा है। अनुदार-दल के मैनेजर की माँग से वे हतोत्साह नहीं हुए।

अनुदारदल के मैनेजर के इस भेंट से चर्चिल का एक लाभ अवश्य हुआ। यद्यपि मिस्टर चर्चिल को पार्टी का उम्मीदवार तो न स्वीकार किया गया पर इतना अवश्य हुआ कि उन्हें निर्वाचन के सम्बन्ध में बोलने के लिए अवसर मिल गया।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही वह शुभ घड़ी आगई जब मिस्टर चर्चिल ने एक सार्वजनिक सभा में पहली बार भाषण दिया और इस

प्रकार उनका राजनैतिक जीवन प्रारम्भ हुआ। बाथ नगर में एक 'गार्डेनपार्टी' थी। मिस्टर चर्चिल ने पहले से ही इस अवसर के लिए तैयारी की थी। उन्होंने अपनी वक्तृता भी बड़ी ही ओजस्वी तैयार की थी।

बाथ नगर के अनुदारदल के समर्थक नागरिकों ने मिस्टर चर्चिल की उस वक्तृता का अच्छा स्वागत किया। स्वयं मिस्टर चर्चिल को यह आशा नहीं थी कि उनकी वक्तृता पहली ही बार इतनी सफल होगी तथा वे अपने श्रोताओं को अपनी ओर इतना अधिक आकर्षित कर सकेंगे।

लंदन के प्रसिद्ध पत्र 'मार्निंग पोस्ट' से चर्चिल का पुराना सम्बन्ध था। इस पत्र ने इस अवसर पर चर्चिल के प्रति अपना कर्त्तव्य पालन किया। और जितना विज्ञापन मिस्टर चर्चिल की प्रथम वक्तृता का उसने किया उतना शायद ही किसी का कभी पहली बार हुआ हो। उनकी वक्तृता को उसने बड़े-बड़े शीर्षक देकर इस प्रकार छापा जैसे किसी बहुत बड़े नेता का वक्तव्य हो। 'मार्निंग पोस्ट' जितना भी विज्ञापन मिस्टर चर्चिल का कर सकता था, उसने किया।

मिस्टर चर्चिल को राजनैतिक क्षेत्र में बड़ी ही तीव्रगति से सफलता मिल रही थी। इस घटना के थोड़े दिनों बाद ही 'डेली मेल' में प्रमुख युवक व्यक्तियों के सम्बन्ध में एक लेखमाला प्रकाशित होने लगी। इस लेखमाला का लेखक उस समय अज्ञात था परन्तु बाद में प्रकट हुआ कि प्रसिद्ध पत्रकार जी० डब्ल्यू० स्टीवेंस था। लेखक ने अपनी लेखमाला में मिस्टर चर्चिल को भी स्थान दिया तथा लिखा कि जिस गति से मिस्टर चर्चिल राजनैतिकक्षेत्र में सफलता प्राप्त कर रहे हैं उसे देखते हुए यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अधिक से अधिक ३० वर्ष की अवस्था में वे पार्लियामेंट के सदस्य चुन लिये जायेंगे और ४० वर्ष की अवस्था में वे योरप के प्रमुख व्यक्तियों

में गिने जाने लगेंगे। प्रसिद्ध पत्रकार की यह भविष्यवाणी सच्ची उतरी और मिस्टर चर्चिल ने अपने प्रारम्भिक जीवन में जो प्रगति दिखाई थी वह आज तक कायम है।

लगभग दो महीने बाद मिस्टर चर्चिल की इच्छा पूरी हुई और उन्हें ओल्डम ऐसे बड़े निर्वाचन-क्षेत्र में अपने लिए 'वोट' प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। यह अवसर उन्हें अनुदारदल के मैनेजर की कृपा से नहीं प्राप्त हुआ था बल्कि शायद मैनेजर तो यह कभी पसन्द भी न करता पर भाग्यवश मिस्टर राबर्ट ऐस्क्राफ़्ट के कारण मिस्टर चर्चिल को यह अवसर मिल गया। मिस्टर ऐस्क्राफ़्ट एक रूई के संघ के क़ानूनी सलाहकार थे। वे अनुदारदल के पुराने सदस्य थे। ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र में वे उम्मीदवार हो रहे थे। पर उनके सामने कठिनाई थी एक अपना साथी खोजने की।

ओल्ड्म का निर्वाचन-क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है तथा यहाँ की जन-संख्या भी बहुत अधिक है। यहाँ की अधिकांश जनता कारखानों में काम करती है। जीवन क्या है यह शायद वहाँ के निवासियों को मालूम ही नहीं है। वे दिन भर काम करते हैं; उन्हें राजनीति के सम्बन्ध में सोचने का अधिक अवकाश ही नहीं रहता। ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र में दो 'सीटें' हैं। मिस्टर ऐस्क्राफ़्ट को उस समय अपने साथ निर्वाचन में खड़े होने के लिए कोई साथी नहीं मिल रहा था। उन्होंने मिस्टर चर्चिल को ही अपना साथी क्यों चुना, यह तो नहीं कहा जा सकता पर यह अवश्य है कि अन्य कई सीनियर सदस्यों के रहते हुए भी मिस्टर ऐस्क्राफ़्ट की दृष्टि मिस्टर चर्चिल पर ही पड़ी और उन्होंने उन्हें अपना साथी बना लिया। मिस्टर चर्चिल तो इस अवसर की प्रतीक्षा कर ही रहे थे, उन्होंने ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र में अपना कार्य शुरू कर दिया।

परन्तु मिस्टर चर्चिल ने अपने निर्वाचन-क्षेत्र में एक बार भी अपनी वक्तृता नहीं दी थी कि मिस्टर ऐस्क्राफ़्ट की मृत्यु हो गई। मिस्टर

चर्चिल के लिए यह अपात हुआ। अनुदारदल ने अपने स्वर्गीय नेता के चुनाव का समुचित आदर किया और मिस्टर चर्चिल को जेम्स माइसले के साथ निर्वाचन लड़ने का अवसर मिला। मिस्टर माइसले एक अन्य ट्रेड यूनियन के सेक्रेटरी थे परन्तु यह जोड़ी ठीक न थी। इसके अतिरिक्त उनके विपक्ष में नर्मदल के दो ज़ोरदार उम्मीदवार थे। एक उम्मीदवार थे मिस्टर एमट। मिस्टर एमट एक धनी व्यक्ति थे तथा ओल्डम की राजनीति में उनका काफ़ी स्थान था। वे कामंस सभा के उपाध्यक्ष भी रह चुके थे।

मिस्टर चर्चिल के दूसरे प्रतिद्वन्द्वी मिस्टर वाल्टर रंसीमैन थे। ओल्डम के वे प्रसिद्ध व्यक्ति थे तथा कई जहाजों के स्वामी थे। मिस्टर रंसीमैन प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं और इस समय भी इँगलैंड की राज-नीति में उनका प्रमुख स्थान है।

मिस्टर चर्चिल ने चुनाव के संघर्ष का सामना बड़े जोश के साथ किया। मतदाताओं के सम्मुख अपने ज़ोरदार भाषणों में उन्होंने कहा—"क्या लंकाशायर के 'फ़सीलियर' का यही स्वागत है जो आप उसके ओम्डरमैन से वापस आने पर कर रहे हैं। मिस्टर रंसीमैन को लंकाशायर 'फ़सीलियर' की भाँति अनुभव नहीं है। जिस समय वे ओम्डरमैन में देश के लिए अपनी जान हथेली पर लेकर युद्ध कर रहे थे उस समय मिस्टर रंसीमैन ग्रेटलेंड में अपने ही लिए प्रयत्न कर रहे थे। जब वे ओम्डरमैन में विजय प्राप्त कर रहे थे उस समय मिस्टर रंसीमैन ग्रेटलेंड में पराजित हो रहे थे।"

मिस्टर चर्चिल के इस भाषण का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा लेकिन विजय लिबरल नेताओं के ही हाथ रही। मिस्टर चर्चिल तथा उनके साथी एक हज़ार से ऊपर वोटों से हार गये। परन्तु इससे मिस्टर चर्चिल हताश होनेवाले नहीं थे। उनकी पराजय के कई कारण थे। जिस निर्वाचन-क्षेत्र से वे खड़े हुए थे उससे उनका कुछ भी पहले का परिचय न था। वहाँ के निवासी भी कारखानों में काम करने-

वाले थे। इसलिए मिस्टर चर्चिल के प्रतिद्वन्द्वी उम्मीदवारों का उन पर अधिक प्रभाव था क्योंकि दोनों उम्मीदवार धनी तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे।

फिर भी प्रथम निर्वाचन में ही मिस्टर चर्चिल ने जिस सफलता का परिचय दिया उससे लोगों को यह आशा हो गई कि वे भविष्य में अधिक सफल होंगे। विरोधी पक्ष के उम्मीदवार मिस्टर रंसीमैन ने कहा था कि मेरा विश्वास है कि हम दोनों ने एक दूसरे को यह अन्तिम बार ही नहीं देखा। मिस्टर चर्चिल ने भी उस समय शायद यही सोचा होगा।

दूसरी यात्रा

मिस्टर चर्चिल ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र में अपने लिए मत प्राप्त करने मे व्यस्त थे और इधर उनके लिए विधि के विधान मे एक दूसरा ही शुभ अवसर तैयार हो रहा था। दक्षिणी अफ़्रीका में अँगरेज़ों और बोयर जाति के लोगों के बीच मतभेद बढ़ता जा रहा था। अन्त में युद्ध की ज्वाला भभक उठी। चर्चिल का हृदय युद्ध-क्षेत्र में पहुँचने के लिए विचलित हो उठा। उनकी अवस्था अभी २५ वर्ष की भी नहीं थी पर वे अब तक कई युद्ध-क्षेत्र देख चुके थे।

ब्रिटिश पत्रों में संवाददाता के नाते भी उन्होंने लोकप्रियता प्राप्त कर ली थी। इस बार जब अफ़्रीका में युद्ध प्रारम्भ हो गया तब 'मार्निंग पोस्ट' ने जिसके संवाददाता वे पहले भी रह चुके थे, उन्हें २५ पौंड मासिक वेतन देकर बोयर-युद्ध का संवाददाता बनाकर भेजना चाहा।

मिस्टर चर्चिल तो यह चाहते ही थे। उनका राजनीति में कार्य करने का विचार जाता रहा। लम्बे वेतन का उन्हें इतना अधिक प्रलोभन नहीं था जितना कि युद्ध-क्षेत्र में शीघ्र से शीघ्र पहुँचने

का। मार्निंग पोस्ट ने उन्हें मासिक वेतन देने के अतिरिक्त यात्रा का पूरा ख़र्च भी देने की प्रतिज्ञा की थी। किसी भी पत्रकार के लिए इससे अधिक और क्या हो सकता है?

अन्त में एक शुभ दिन को उन्होंने उत्तमाशा अन्तरीप के लिए प्रस्थान किया। उनका हृदय उत्कंठा से पूर्ण था और उन्हें भय था कि कहीं उनके युद्ध-क्षेत्र में पहुँचने के पहले ही युद्ध समाप्त न हो जाय। वे युद्ध के भयंकरतम क्षणों में युद्ध-क्षेत्र में रहना चाहते थे। यात्रा में उनका ब्रिटिश सेना के अध्यक्ष सर रेडवर्स बुलर का साथ रहा। सर रेडवर्स बुलर हँसमुख तथा योग्य व्यक्ति थे। उनमें और चर्चिल में खूब घनिष्ठता हो गई।

जिस समय जहाज़ समुद्रतट से जाकर लगा, मिस्टर चर्चिल का हृदय प्रसन्नता से पूर्ण हो गया। पता नहीं उस समय उनके अन्दर के पत्रकार ने अधिक आनन्द अनुभव किया या उनके जन्म-जात सैनिक गुण ने। जो कुछ भी हो पर यह निश्चित था कि मिस्टर चर्चिल उस समय दो व्यक्तित्वों के बीच अपनी उत्कंठा के क्षण व्यतीत कर रहे थे और जैसा कि हम आगे देखेंगे, दोनों ने अपने अपने अवसरों का अच्छी प्रकार उपभोग किया। पर युद्ध-क्षेत्र में मिस्टर चर्चिल के सैनिक हृदय को ही अधिक आनन्द प्राप्त हुआ होगा।

जिस जहाज़ से मिस्टर चर्चिल संवाददाता ने उत्तमाशा अन्तरीप की यात्रा की थी उसी से ब्रिटिश फ़ौज भी गई थी। परन्तु जब ये वहाँ पहुँचे तो परिस्थिति दूसरी ही दिखाई पड़ी। किसी ने ऐसा अनुमान भी न किया था कि बोयर कभी ब्रिटिश सेना के सम्मुख ठहर सकेंगे। अतएव जब यहाँ यह मालूम हुआ कि ब्रिटिश सेना बराबर हार रही है तो सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। १२०० सैनिकों की एक ब्रिटिश सेना को आत्मसमर्पण करना पड़ा था। बोयरों ने ब्रिटिश सेना को कई स्थानों पर पराजित किया था।

मिस्टर चर्चिल ने यह सब सुना तो उनकी युद्ध के मोर्चे पर

शीघ्र से शीघ्र पहुँचने की इच्छा अत्यन्त प्रबल हो गई। वे शीघ्र ही ईस्टकोर्ट के युद्ध-मोर्चे पर पहुँचे। यहाँ पर 'टाइम्स' पत्र का संवाददाता पहले ही पहुँच चुका था।

१४ नवम्बर का दिन चर्चिल के जीवन में बड़े महत्त्व का है। इसी घटना ने चर्चिल की ख्याति को बढ़ाया। इसी दिन वे बोयरों-द्वारा क़ैद कर लिये गये जिसके कारण उनका नाम इँगलैंड के कोने-कोने में पहुँच गया जिससे उन्हें अपने राजनैतिक उद्देश्य की पूर्ति में बड़ी सहायता मिली।

१०नवम्बर को ईस्टकोर्ट से एक ट्रेन-द्वारा कैप्टेन हाल्डेन की अध्यक्षता में एक ब्रिटिश सेना के साथ मिस्टर चर्चिल रवाना हुए। इस ब्रिटिश सेना में एक डबलिन फुसीलियरों की और एक डरबन लाइट-इंफ़ेंट्री की कम्पनी थी। इनके पास एक छोटी सामुद्रिक तोप भी थी।

ट्रेन कुछ दूर ही गई थी कि चारों ओर से उस पर बन्दूक़ों की गोलियाँ बरसने लगीं। बोयर लोग इस ट्रेन का स्वागत करने के लिए पहले से ही तैयार थे। उस समय ट्रेन के ड्राइवर को कोई उपाय न दिखाई पड़ा और उसने ट्रेन को पूरी चाल पर चलाना शुरू कर दिया। पर शत्रु भी कुछ कम होशियार न थे। उन्होंने पहले से ही लाइन पर ईंटों, पत्थरों के ढेर लगा रक्खे थे। परिणाम यह हुआ कि ट्रेन उलट गई। तीन डिब्बे पटरी पर से उतर गये और बाक़ी निर्जीव-से खड़े हो गये।

ट्रेन पर जो सामुद्रिक तोप थी वह भी बेकार हो गई थी। अन्य युद्ध-सामग्री भी अवसर पर काम न दे सकी। ब्रिटिश सेना पर एक आतंक-सा छा गया। किसी की समझ में यह न आता था कि इस अवसर पर क्या किया जाय।

मिस्टर चर्चिल उस समय सैनिक न थे बल्कि थे एक प्रसिद्ध पत्र के संवाददाता। उस समय उनका क्या कर्त्तव्य था यह जैसे वे भूल गये। एक शान्तिप्रिय नागरिक का ऐसे अवसर पर क्या कर्त्तव्य

होना चाहिए, इसका उन्हें ध्यान ही न रह गया। उन्होंने ब्रिटिश सेना के उस संकटपूर्ण समय में वही किया जो कि एक सैनिक को करना चाहिए था।

कैप्टेन हाल्डेन ने शत्रु की गोलियों का उत्तर देने का आदेश दिया। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी। इसी बीच में मिस्टर चर्चिल ने ट्रेन को चलने के लायक़ बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। उन पर गोलियों की बौछार हो रही थी पर उन्होंने साहस न छोड़ा और ब्रिटिश सेना के सैनिकों को पुकार-पुकार कर कहने लगे--बहादुरी, साहस न छोड़ो। धैर्य से काम लो।

उस समय और लोगों का ध्यान चाहे अपने प्राणों की चिन्ता में लगा हो, चाहे वे संकटपूर्ण स्थिति से बचने का उपाय सोच रहे हों पर मिस्टर चर्चिल को यह सब चिन्ता न थी। वे तो यह सोच रहे थे कि ऐसी घटना उनके पत्र के लिए बड़ी मज़ेदार होगी।

ट्रेन का ड्राइवर भी शान्तिप्रिय नागरिक था। ऐसा भीषण संग्राम बेचारे ने पहले कभी देखा न था। उसकी जान तो यों ही निकल रही थी, इसी बीच में एक गोली उसके सिर को छूती हुई निकल गई। फिर क्या था, अब तो उसने सारा साहस बटोरकर जो निश्चय किया था वह सभी अनिश्चय और भय के भयंकर झोंके में बह गया। उसने ट्रेन चलाने से स्पष्टरूप से इनकार कर दिया। मिस्टर चर्चिल ने उसे बहुत समझा-बुझाकर ट्रेन चलाने पर राज़ी किया।

ड्राइवर ट्रेन चलाने पर राज़ी तो हो गया पर बाद में यह मालूम हुआ कि यद्यपि मिस्टर चर्चिल ने अपनी शक्ति भर बहुत प्रयत्न किया है फिर भी उससे अधिक लाभ नहीं हुआ। कारण कि गाड़ी के डिब्बे चलाये न जा सके। सारा परिश्रम बेकार सिद्ध हुआ।

अन्त में यह निश्चय हुआ कि कैप्टेन हाल्डेन जब तक रक्षा के लिए युद्ध करें तब तक इंजिन में जितने भी घायल आ सकें उन्हें भरकर रक्षा के स्थान को भेजा जाय। मिस्टर चर्चिल भी डिब्बे के ऊपर बैठकर चले जायँ।

इंजिन धीरे-धीरे आगे बढ़ा। कराहते हुए घायल सैनिक इंजिन में भरे पड़े थे। पत्रकार चर्चिल भी डिब्बे में एक ओर बैठे थे। जब इंजिन ख़तरे के घेरे से बाहर निकल गया तब मिस्टर चर्चिल ने पीछे फिरकर देखा। कैप्टेन हाल्डेन का दल दिखाई नहीं पड़ रहा था। उन्हें चिन्ता हुई कि आख़िर उनका क्या हुआ। क्षण भर कुछ सोचा फिर तुरन्त कुछ निश्चय कर डाला।

अपने प्राणों की बिना किसी प्रकार चिन्ता किये हुए वे इंजिन पर से उतर पड़े और पीछे की ओर कैप्टेन हाल्डेन तथा उनकी सेना का समाचार लेने के लिए बढ़े। कुछ दूर चलने पर उन्हें मालूम हुआ कि ब्रिटिश सेना को बोयरों ने गिरफ़्तार कर लिया है।

स्वयं उनकी स्थिति ख़तरनाक हो गई। उन्होंने उस समय देखा कि सिवा भागने के और उपाय नहीं है। तुरन्त ही वे पीछे की ओर, जिधर से आये थे उसी ओर भाग चले। कहीं भी छिपने का स्थान न था। दो बोयरों ने उन्हें अपनी बन्दूक़ों का निशाना बनाया पर पत्रकार चर्चिल ने साहस न छोड़ा, वे भागते गये। उनके दोनों तरफ़ सन्-सन् करती हुई गोलियाँ चल रही थीं। इतने में ही एक तीसरा बोयर उनके सम्मुख आकर खड़ा हो गया। घोड़े पर से ही उसने भागते हुए चर्चिल पर निशाना लगाया। अब मिस्टर चर्चिल के सामने सिवा आत्मसमर्पण के दूसरा रास्ता ही न था। उन्होंने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा दिये।

वे गिरफ़्तार कर लिये गये और ब्रिटिश सेना के अन्य क़ैदियों के साथ ले जाकर रक्खे गये। पर बाद में उन्हें अलग रक्खा गया। इससे मिस्टर चर्चिल को चिन्ता अवश्य हुई किन्तु उन्होंने साहस से

काम लिया। शीघ्र वे फिर उन्हीं क़ैदियों के बीच रहने के लिए भेज दिये गये।

स्टेट माडल स्कूल के कैम्प में ६० ब्रिटिश सैनिक अफ़सर गिरफ़्तार करके रक्खे गये थे। मिस्टर चर्चिल को भी प्रेटोरिया से वहीं ले जाया गया। वहाँ उन्हें तीन सप्ताह तक रहना पड़ा।

मिस्टर चर्चिल को यह भी विश्वास हो गया था कि अब उनको फाँसी न दी जायगी। इसलिए उन्होंने युद्ध-क्षेत्र में एक पत्र-संवाददाता होने के नाते छुटकारे की प्रार्थना की। लेकिन बोयरों ने भी यह खूब अच्छी तरह जान लिया था कि मिस्टर चर्चिल कैसे संवाददाता हैं अतएव उन्होंने मिस्टर चर्चिल को मुक्त नहीं किया।

कैम्प में अधिक कष्ट नहीं था। मनबहलाव और समय काटने के लिए शतरंज, ताश आदि खेल खेले जा सकते थे परन्तु भला चर्चिल को इससे कैसे शान्ति मिल सकती थी। बन्दी-जीवन की अपेक्षा वे प्राण देना बेहतर समझते थे। अन्त में उन्होंने यह निश्चय किया कि चाहे जो हो वे इस जेल से भागेंगे अवश्य। तब से वे अवसर की खोज में रहने लगे।

पर उनके सामने एक और सबसे बड़ी कठिनाई भाषा की थी। वे अँगरेज़ी के अलावा और कोई भाषा बोल न सकते थे और वहाँ बिना डच या काफ़िर भाषा की जानकारी के किसी प्रकार मुक्ति की आशा न दिखाई पड़ती थी।

माडेल स्कूल की इमारत पर दक्षिणी अफ़्रीकन प्रजातंत्र की ४० पुलिस का पहरा रहता था। दस-दस सिपाहियों का झुंड हर समय पहरा दिया करता था। वे बन्दूक़ और पिस्तौल से लैस रहते थे। अतएव यह भी निश्चित था कि मिस्टर चर्चिल भागते हुए पकड़ लिये गये तो सिवा मौत के घाट उतरने के और कोई परिणाम न होगा। स्कूल की इमारत

के चारों ओर लोहे की छड़ों की दस फ़ुट ऊँची चहारदीवारी बनी हुई थी जिसे पार करना कोई साधारण बात न थी।

अन्त में १२ दिसम्बर को मिस्टर चर्चिल को मौक़ा मिल गया। उन्होंने बड़ी ही होशियारी से इमारत की बाहरी चहारदीवारी पार की। दो पहरेदार सिपाही उनसे लगभग १५ गज़ की दूरी पर खड़े थे। कारागार से बाहर तो वे निकल आये पर अब जायें कहाँ! चारों ओर शत्रु थे। पृथ्वी का एक-एक कण, वायु का एक-एक झोंका उनसे मानो यही कह रहा था कि वे शत्रु की भूमि पर हैं। जब तक वे उस पर रहेंगे तब तक सुरक्षित नहीं हैं; तब तक वे बन्दी हैं, पहले की अपेक्षा भी अधिक भयपूर्ण स्थिति में!

मिस्टर चर्चिल ने क्षण भर अपनी परिस्थिति पर विचार किया। यहाँ से सबसे निकट स्थान पुर्तगीज़ पूर्वी अफ़्रीका था जहाँ उनकी रक्षा हो सकती थी और पुर्तगीज़ पूर्वी अफ़्रीका था तीन सौ मील की दूरी पर! मिस्टर चर्चिल ने वहाँ पहुँचने का निश्चय किया पर न तो उनके पास उस देश का कोई नक़शा था और न वहाँ उन्हें कोई मार्ग बतानेवाला ही था। पास में काफ़ी धन भी नहीं था। केवल ७५ पौंड उनकी जेब में पड़े थे। दूसरी जेब में चाकलेट के कुछ पैकेट। इसी पूँजी के साथ उन्होंने भागने का निश्चय किया।

बाहर आकर सबसे पहली बात उन्होंने यह की कि पूर्व की ओर जानेवाली रेलवे लाइन को खोजा। कई घंटे के प्रयत्न के पश्चात् वह उन्हें मिल गई। फिर क्या था, उन्होंने लाइन के किनारे-किनारे तेज़ी से चलना शुरू किया। जहाँ कहीं गाँवों या उन पुलों को बचाने के लिए पहरेदार खड़े होते वहाँ उन्हें लाइन छोड़कर जाना पड़ा। इस प्रकार वे कई घंटे तक यात्रा करते रहे।

अन्त में उन्हें इंजिन की सीटी की आवाज़ सुनाई पड़ी। मिस्टर चर्चिल ने अपने भाग्य को सराहा। एक मालगाड़ी आ रही थी जिसकी चाल बहुत ही धीमी थी। मिस्टर चर्चिल किसी प्रकार उस पर चढ़ गये। सारी रात उन्होंने उसी प्रकार ट्रेन-द्वारा यात्रा की। दिन उन्होंने एक जंगल में बिताया और सोचा कि रात को वे किसी दूसरी ट्रेन-द्वारा फिर यात्रा करेंगे।

उपाय तो अच्छा था; रात भी आई पर कोई ट्रेन दिखाई न पड़ी। निराश होकर मिस्टर चर्चिल को पैदल ही कीचड़-मिट्टी में चलने के लिए बाध्य होना पड़ा। भोजन के अभाव के कारण उनका शरीर भी कमज़ोर हो गया था। उनके लिए एक क़दम भी आगे बढ़ना असम्भव-सा हो रहा था। अन्त में उन्होंने निश्चय किया कि वे किसी काफ़िर के दरवाज़े पर जाकर आश्रय लेंगे। बहुत सम्भव है वे उनकी कुछ सहायता करें।

यह विचार आते ही मिस्टर चर्चिल ने अपने चारों ओर देखा। दूर पर प्रकाश की टिमटिमाहट दिखाई पड़ी। हृदय की सम्पूर्ण आशा तथा साहस बटोरकर वे उसी प्रकाश की ओर चलने लगे। जिस घर से वह प्रकाश आ रहा था। वह अधिक दूर न था फिर भी मिस्टर चर्चिल के लिए मानो वह बहुत दूर था। किसी प्रकार वे उस मकान के द्वार पर पहुँचे। शरीर की सारी शक्ति नष्ट हो गई थी और वे गिरना ही चाहते थे। उन्होंने द्वार खटखटाया। अन्दर से किसी ने डच भाषा में पूछा—कौन है ?

उत्तर सुनते ही मिस्टर चर्चिल के शरीर की शक्ति जैसे लौट आई। ऐसा जान पड़ा कि अब उन्हें भागने की आवश्यकता नहीं। उन्होंने अँगरेज़ी में उत्तर दिया। सौभाग्यवश मिस्टर चर्चिल अनजाने में ही उचित स्थान पर पहुँच गये थे। बीस मील के बीच में केवल यही एक घर एक अँगरेज़ का था।

यहाँ मिस्टर चर्चिल को पूरी सहायता प्राप्त हुई। उन्हें खान के अन्दर रक्खा गया। इधर बोयर अधिकारियों ने भगोड़े चर्चिल को गिरफ़्तार करने के लिए उनकी हुलिया प्रकाशित की और यह भी कहा कि जो भी व्यक्ति उन्हें जीवित या मरा हुआ लाकर हाज़िर करेगा उसे २५ पौंड पुरस्कार दिया जायगा। अधिकारियों ने अपनी पूरी शक्ति के साथ चर्चिल की खोज की पर कहीं उनका पता न लग सका। अन्त में उन्हें निराश होना पड़ा।

जब अधिकारियों की कड़ाई कम होती दिखाई पड़ी तब अन्त में मिस्टर चर्चिल ने एक बार फिर साहस करके बोयर-राज्य की सीमा पार करके डच पूर्वी अफ़्रीका में पहुँचने का निश्चय किया। पर इस बार उन्हें पहले वाला उपाय ग्रहण करने की आवश्यकता न थी। उन्हें ऊन के बोरों में छिपाकर ट्रेन-द्वारा भेजा गया। इतना होते हुए भी कई स्थानों पर बोयर-अधिकारियों ने ट्रेन की जाँच की और मिस्टर चर्चिल को ऐसा जान पड़ा कि वे गिरफ़्तार कर लिये जायँगे; पर भाग्यवश वे न पकड़े जा सके।

अन्त में मिस्टर चर्चिल को लेकर ट्रेन ने सीमा पार की। मिस्टर चर्चिल की प्रसन्नता का उस समय ठिकाना न था। उन्होंने सिर बाहर निकालकर विजय का एक गान गाया और अपनी पिस्तौल से एक फ़ायर किया।

वहाँ से वे लोरेंसो मारक्वेस पहुँचे। वहाँ ब्रिटिश कौंसल ने उनके खाने-कपड़े का प्रबन्ध किया और फिर एक जहाज़-द्वारा वे शीघ्र ही डरबन पहुँचे।

डरबन में मिस्टर चर्चिल का बड़ा स्वागत हुआ। उनके लिए यह दुर्घटना भी सौभाग्यप्रद बन गई। उनका नाम इँगलैंड और अफ़्रीका दोनों में हो गया था। उनके लेखों की एक धूम मच गई। मिस्टर चर्चिल की प्रशंसा चारों ओर होने लगी। परन्तु यश प्राप्त करनेवाले व्यक्ति के मार्ग में रुकावट डालनेवालों की संख्या

भी कम नहीं होती। इधर जब मिस्टर चर्चिल का यश-गान हो रहा था तो उधर कुछ पत्रवाले उन्हें बदनाम करने पर तुले हुए थे। उनके अनेक कामों की कटु से कटु आलोचना की गई। एक पत्र ने तो यहाँ तक लिखा कि मिस्टर चर्चिल का बोयरों की क़ैद से भागना कदापि उचित नहीं था।

मिस्टर चर्चिल की कीर्ति पर इस प्रकार की आलोचनाओं का कुछ भी प्रभाव न पड़ा और न उन्होंने स्वयं ही इसकी परवाह की।

मिस्टर चर्चिल के इस प्रकार भाग आने से ब्रिटिश कमांडर सर रेडवर्स बुलर का भी ध्यान चर्चिल की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने मिस्टर चर्चिल से पूछा 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही उत्तर दिया--मुझे एक कमीशन दीजिए।

मिस्टर चर्चिल की इस इच्छा को पूर्ण करना सरल काम नहीं था क्योंकि 'मार्निंग पोस्ट' मिस्टर चर्चिल को युद्ध की रिपोर्ट देने के लिए बाध्य कर रहा था और सैनिक अधिकारियों को पत्रकार चर्चिल का ख़ासा अनुभव हो चुका था। अतएव वे और अधिक अनुभव करना नहीं चाहते थे। सर बुलर ने किसी प्रकार सारी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त की और अन्त में यह निश्चित हुआ कि मिस्टर चर्चिल दोनों काम कर सकेंगे पर उन्हें सेना में कार्य करने के लिए वेतन न दिया जायगा। मिस्टर चर्चिल ने स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार मिस्टर चर्चिल ने आरेंज फ़्री स्टेट तथा ट्रांसवाल के युद्ध में भाग लिया। ब्रिटिश सेना के प्रेटोरिया प्रवेश के अवसर पर चर्चिल बहुत अधिक प्रसन्न हुए। उन्होंने सबसे पहले उन ब्रिटिश बन्दियों को छुड़ाया जिनके साथ वे क़ैद रह चुके थे। डाइमंड पहाड़ी के युद्ध में भाग ले चुकने के बाद मिस्टर चर्चिल ने इँगलैंड वापस जाने का निश्चय किया।

जिस समय वे इँगलैंड पहुँचे उनकी मा का विवाह कार्नवालिस वेस्ट से होने जा रहा था।

उन्नीसवीं शताब्दी का वह अन्तिम वर्ष था। मिस्टर चर्चिल अफ़्रीका के युद्ध-क्षेत्र में युद्ध कर रहे थे। जान्सबर्ग और प्रेटोरिया का पतन हो चुका था। दक्षिणी अफ़्रीका में ब्रिटिश शासन की नीव फिर से दृढ़ हो रही थी। मिस्टर चर्चिल ऐसे ही समय अफ़्रीका से इँगलैंड वापस लौटे।

अफ़्रीका की इन परिस्थितियों का बहुत कुछ प्रभाव इँगलैंड की राजनीति पर भी पड़ा। पार्लियामेंट का नया निर्वाचन हो रहा था। यह निर्वाचन हर दृष्टि से बिलकुल नया था। नई शताब्दी का प्रारम्भ था; इँगलैंड नये जोश के साथ राजनीतिक विकास के क्षेत्र में प्रवेश करना चाहता था। इँगलैंड के कोने-कोने में चुनाव की धूम मची थी। मिस्टर चर्चिल ने इँगलैंड की भूमि पर पैर रखते ही परिस्थिति का अध्ययन किया और राजनीतिक क्षेत्र में तुरन्त उतरने का निश्चय किया।

साल भर पूर्व जब मिस्टर चर्चिल ने पहली बार अनुदारदल से चुनाव के लिए एक 'सीट' की माँग की थी तब उनकी इस बात पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। इस बार ग्यारह निर्वाचन-क्षेत्रों की ओर से उनका स्वागत हो रहा था परन्तु मिस्टर चर्चिल ने ओल्डम को ही अपने भाग्य का निर्णय करने के लिए चुना। यद्यपि वे जानते थे कि उन्हें ओल्डम के निर्वाचन क्षेत्र में अधिक सफलता की आशा नही है। फिर भी उनकी इच्छा यही थी कि जिस स्थान पर उन्हे एक बार पराजय मिल चुकी है उसी स्थान पर वे विजय प्राप्त करें।

यहाँ पर उस समय की राजनीतिक स्थिति का संक्षिप्त वर्णन कर देना अनुपयुक्त न होगा। महारानी विक्टोरिया के शासन-काल के ये अन्तिम दिन थे। नई शताब्दी अपना सम्पूर्ण नया रूप लेकर प्रवेश करने जा रही थी। सैलिसबरी के मारक्विस प्रधान मंत्री थे।

सैलिसबरी ने पार्टी के नेतृत्व में डिसरेली का स्थान प्राप्त किया था। सन् १८८५ के बाद से तब तक वे पार्टी के नेता तथा प्रधान मंत्री रह चुके थे, केवल सन् १८९२ से ९५ तक का समय ही उनके प्रधान मंत्रित्व से हीन रहा।

लार्ड सैलिसबरी को पार्लियामेंट का पूरा सहयोग प्राप्त था। कामंस सभा में उनके भतीजे आर्थर जेम्स बाल्फ़ोर थे। ये सज्जन बड़े ही प्रभावशाली व्यक्ति समझे जाते थे। मिस्टर चर्चिल का इन दोनों व्यक्तियों से खानदानी परिचय था। मिस्टर चर्चिल के पिता लार्ड रैण्डोल्फ़ चर्चिल और सैलिसबरी में मतभेद हो गया था और बाल्फ़ोर 'फ़ोर्थपार्टी' के सुनहले दिनों में उनके पक्के साथियों में थे।

अनुदारदल का नेतृत्व लार्ड सैलिसबरी और मिस्टर बाल्फोर के लिए पैतृक-सा हो गया था। लेकिन सरकारी वर्ग में जोसेफ़ चेम्बरलेन का अधिक प्रभाव था। जोसेफ़ चेम्बरलेन प्रसिद्ध भूतपूर्व प्रधान मंत्री नेवाइल चेम्बरलेन के पिता थे। इनके दूसरे सुपुत्र सर आस्टेन खज़ाने के एक्सचेकर और वैदेशिक मंत्री रह चुके हैं।

जोसेफ़ चेम्बरलेन यद्यपि अपने छोटे पुत्र नेवाइल की भाँति प्रधान मंत्री के पद को न प्राप्त कर सके थे फिर भी अपने चरित्रबल के कारण इँगलैंड की जनता पर उनका बहुत प्रभाव था और इसी कारण वे बर्रामघम के 'डिक्टेटर' कहलाते थे।

लिबरलदल की भी दशा अच्छी न थी। 'होमरूल' के प्रश्न को लेकर लिबरल-पार्टी दो भागों में विभाजित हो गई थी। चेम्बरलेन के साथियों के उससे अलग हो जाने के कारण पार्टी की शक्ति क्षीण हो गई थी। बोयर-युद्ध के कारण लिबरल साम्राज्यवादियों और रेडिकलों के दो दल हो गये थे। पहली पार्टी के नेता एस्क्विथ, ग्रे और हाल्डेन थे; वे युद्ध के पूरे समर्थक थे। दूसरे दल के नेता लायड-जार्ज थे। ये वेल्स के एक युवक बैरिस्टर थे तथा अपने दल के साथ बोयर-युद्ध के पक्के विरोधी थे।

सरकार की ओर से बोयर-युद्ध को सफलता-पूर्वक समाप्त करने की अपील की गई। बस फिर क्या था युद्ध के विरोधियों को 'प्रोबोयर' या 'बोयरपक्षीय' नाम दिया गया। जोसेफ़ चेम्बरलेन ने अपनी यह बात बुलन्द की कि एक भी सीट जो सरकार के समर्थकों के हाथ से चली जायगी उसके लिए यह समझना चाहिए कि वह बोयरों के हाथ जा लगी। सारांश यह कि 'खाकी' निर्वाचन में अनुदारदल की नीति युद्ध-समर्थक रही।

मिस्टर चर्चिल ने इँगलैंड पहुँचते ही समझ लिया कि यह उनके लिए सबसे उपयुक्त समय है। युद्ध के समर्थकों की संख्या अधिक है और चूँकि वे युद्ध के प्रधान नायक रह चुके हैं इसलिए उन्हें जनता का पूरा समर्थन प्राप्त होगा। बात हुई भी यही। जिस समय उन्होंने अपने निर्वाचन-क्षेत्र ओल्डम में प्रवेश किया उनका झंडों और जय के नारों से राजाओं का-सा स्वागत हुआ।

मिस्टर चर्चिल के व्यक्तित्व, उनके प्रचार और उनके स्वागत को देख लंकाशायर के लिबरल लोग हताश नहीं हुए। उन्होंने चर्चिल के लिए निर्वाचन के क्षेत्र में एक-एक इंच पर रुकावट पैदा की पर चर्चिल को तो विजय की अपेक्षा संघर्ष में ही मजा आता है। वे भला इससे कब पिछड़नेवाले थे। मिस्टर चर्चिल ने अपने वोटरों के सम्मुख अपनी नीति को स्पष्ट कर दिया कि जब तक युद्ध शुरू नहीं होता तब तक तो वे शान्ति के पूरे समर्थक हैं; और यह चाहेंगे कि चाहे जिस प्रकार हो शान्ति भंग न हो, पर जब एक बार युद्ध की घोषणा कर दी गई तब वे तभी शान्त हो सकते हैं जब शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त हो जाय।

चर्चिल के विरोधी उम्मीदवार मिस्टर एमट और मिस्टर रंसीमैन थे। ये दोनों सज्जन ओल्डम की राजनीति में काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुके थे और लिबरल साम्राज्यवादी थे। इसलिए चर्चिल को इनका विरोध करने में जनमत की बड़ी सहायता मिली। यद्यपि

जनमत युद्ध-विरोधियों का समर्थक नहीं था फिर भी मिस्टर एमट और रंसीमैन का ओल्डम में काफ़ी प्रभाव था। दूसरी बात यह थी कि उन लोगों ने यह तो स्वीकार कर लिया कि युद्ध न्यायोचित था परन्तु फिर भी वे सरकार के विरोधी बने रहे। मिस्टर चर्चिल को इँगलैंड की इस राजनीतिक परिस्थिति से बहुत कुछ सहायता मिली।

वृद्ध जोसेफ़ चेम्बरलेन मिस्टर चर्चिल के भारी समर्थक थे। मिस्टर चर्चिल के लिए वे ओल्डम की सार्वजनिक सभा में भाषण देने के लिए गये। ओल्डम के अनुदार मज़दूरों पर उनकी वक्तृता का बड़ा प्रभाव पड़ा। उन्होंने वहाँ की जनता को लक्ष्य करके कहा—"मुझे विश्वास है कि लार्ड रैण्डोल्फ़ के सुपुत्र मिस्टर चर्चिल में अपने पिता के अनेक गुण विद्यमान हैं, कम से कम उनकी नवीनता तथा उनका साहस तो मिस्टर चर्चिल को प्राप्त ही है।"

मिस्टर चर्चिल के लिए इतने बड़े व्यक्ति का सहयोग प्राप्त हो जाना साधारण बात न थी; अतः उनकी सफलता उसी समय से निश्चित-सी हो गई। विरोधी पक्ष भी चुप न बैठा था। मिस्टर चर्चिल पर अनेक व्यक्तिगत आक्षेप किये गये। उनकी साहसिकता तक पर संदेह किया गया। उनके विपक्षियों ने उन्हें कायर कहा और प्रेटोरिया में अपने साथियों को छोड़कर स्वयं भाग आने का दोष उन पर लगाया।

इसी समय एक अँगरेज़ अफ़सर, जो चर्चिल के साथ क़ैद में था, जनता के सम्मुख आया, उसने इस प्रकार के मिथ्यारोपण का पूरी तौर से विरोध किया। इतना ही नहीं, मिस्टर चर्चिल ने एडजुटेंट जनरल सर एवेलीन उड का वह पत्र भी जनता के सम्मुख पेश किया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बोयरों द्वारा पकड़ ली जानेवाली ट्रेन की फ़ौज के अफ़सर ने यह स्वीकार किया है कि मिस्टर चर्चिल ने उस अवसर पर बड़े साहस और वीरता का परिचय दिया। यही

नहीं, उस समय उन्होंने एक पत्रकार की हैसियत से कार्य न करके एक सैनिक अफ़सर की भाँति कार्य किया था।

मिस्टर चर्चिल को रंसीमैन और एमट के साथ संघर्ष करना पड़ा। चुनाव के अन्तिम समय तक यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता था कि किसकी विजय होगी। अन्त में जिस दिन निर्वाचन का परिणाम प्रकाशित होनेवाला था मिस्टर चर्चिल तथा उनके समर्थक आशा और निराशा के बीच परिणाम की प्रतीक्षा कर रहे थे। अन्त में ओल्डम के चुनाव का नतीजा निकला। मिस्टर एमट को सबसे अधिक वोट मिले थे। उनके बाद मिस्टर चर्चिल का नम्बर था। मिस्टर रंसीमैन को मिस्टर चर्चिल से केवल २२२ वोट कम मिले थे।

मिस्टर चर्चिल की ख़ुशी का ठिकाना न था। अधिक ख़ुशी उन्हें इस बात की थी कि वे बड़ी कशमकश और संघर्ष के बाद विजयी हुए थे। यदि वे किसी ऐसे निर्वाचन-क्षेत्र से खड़े होते जहाँ उन्हें इतना संघर्ष न करना पड़ता और जहाँ उनकी सफलता एक प्रकार से निश्चित होती तो उन्हें अपनी सफलता पर इतनी प्रसन्नता न होती। पर ओल्डम की विजय घोर संघर्ष का परिणाम थी। मिस्टर चर्चिल के मित्रों तथा प्रशंसकों की बधाइयों की धूम मच गई।

इतना ही नहीं, मिस्टर चर्चिल की विजय का असर सम्पूर्ण इँगलैंड के निर्वाचन पर बहुत अधिक पड़ा। कारण यह था कि उन दिनों सम्पूर्ण देश की 'पोलिंग' एक ही दिन में न होती थी बल्कि विभिन्न दिनों में होती थी। इसका परिणाम यह होता था कि जिस स्थान की 'पोलिंग' पहले हो जाती थी उसका नतीजा भी पहले ही प्रकाशित हो जाता था। इस प्रकार पहले निकलनेवाले परिणाम में जिस दल की विजय होती उसका प्रभाव अन्य स्थानों के निर्वाचन पर भी बहुत अधिक पड़ता। मिस्टर चर्चिल की विजय से जिन स्थानों में

अभी चुनाव होने को था वहाँ के मतदाताओं को यह मालूम हो गया कि दुनिया किस ओर जा रही है।

ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र का चुनाव सबसे पहले हो गया था इसलिए अन्य निर्वाचन-क्षेत्रों के अनुदारदल के उम्मीदवारों ने भी मिस्टर चर्चिल से अपने पोलिंग-दिवस पर भाषण देने के लिए अनुरोध किया। बरमिंघम से जोसेफ़ चेम्बरलेन ने मिस्टर चर्चिल को बुलाया था। मिस्टर चर्चिल चेम्बरलेन के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ थे। वे तुरन्त ही बरमिंघम के लिए रवाना हो गये।

मार्ग में उन्हें मिस्टर बाल्फ़ोर के निर्वाचन-क्षेत्र से जाना पड़ा। मिस्टर बाल्फ़ोर ने भी उनसे अपने निर्वाचन-क्षेत्र की जनता के सम्मुख भाषण देने का अनुरोध किया। मिस्टर चर्चिल के लिए यह गौरव की बात थी।

मिस्टर चर्चिल की वक्तृत्व-शक्ति ने अनुदारदल की सफलता में बहुत कुछ सहायता की। अनुदारदल की विजय हुई और एक बार अनुदारदल की सरकार एक कार्यकाल के लिए फिर स्थायी रह गई। मिस्टर चर्चिल ने सम्पूर्ण देश की यात्रा की तथा अपनी वक्तृताओं-द्वारा अपने दल के समर्थकों की संख्या में काफ़ी वृद्धि की। इसके बाद उन्होंने अमरीका की भी यात्रा की। इस प्रकार यात्रा-द्वारा उनको बहुत लाभ हुआ और उनका नाम देश-विदेश में चारों तरफ़ फैल गया।

इस प्रकार मिस्टर स्टीवेंस की भविष्यवाणी सफल हुई और मिस्टर चर्चिल केवल २५ वर्ष की अवस्था में इँगलैंड की पार्लियामेंट के सदस्य बन गये। मिस्टर चर्चिल की प्रतिभा का यह एक बड़ा प्रमाण है।

पार्लियामेंट में प्रथम बार

२३ जनवरी १९०१ ई० को मिस्टर चर्चिल ने प्रथम बार पार्लियामेंट में एक सदस्य की हैसियत से प्रवेश किया। उन्हे इस नये वर्ष के प्रारम्भ में अपनी प्रथम वक्तृता देनी थी। सार्वजनिक सभाओं में वे एक नहीं अनेक बार भाषण दे चुके थे। उनकी वक्तृत्व-शक्ति की जनता ने प्रशंसा भी की थी। परन्तु यह बात प्रत्येक मनुष्य जानता है कि सार्वजनिक सभाओं में भाषण देना एक बात है और पार्लियामेंट में बोलना दूसरी । मिस्टर चर्चिल के सामने भी यही समस्या थी। उन्होंने अभी तक कभी ऐसे अवसर पर वक्तृता न दी थी ?

प्रत्येक नये सदस्य के सामने पहली बार यही समस्या उपस्थित होती है । पार्लियामेंट का अधिवेशन शुरू हुआ और मिस्टर चर्चिल उपस्थित भी रहे परन्तु उन्हें यह नहीं समझ पड़ रहा था कि वे किस प्रकार भाषण देंगे। यद्यपि जीवन में घबड़ाना उन्होंने नहीं जाना था फिर भी इस अवसर पर उनके हृदय में विचित्र प्रकार की भावनाये उठ रही थीं।

पार्लियामेंट में युद्ध और दक्षिणी अफ़्रीका के प्रश्न को लेकर विवाद चल रहा था। मिस्टर चर्चिल के साथियों ने कहा कि यह उनके लिए एक अच्छा अवसर है। मिस्टर चर्चिल भी यह अनुभव कर रहे थे कि उन्हें इस अवसर पर अपने विचारों को अवश्य प्रकट करना चाहिए क्योंकि पार्लियामेंट के जितने सदस्य थे किसी को भी दक्षिणी अफ़्रीका का यथार्थ ज्ञान नहीं था। सभी ने केवल पत्रों और पुस्तकों-द्वारा ही ज्ञान प्राप्त किया था। इसलिए मिस्टर चर्चिल को यह आशा थी कि वे कुछ नई बातें हाउस के लिए विचारार्थ दे सकेंगे।

अन्त मे मिस्टर चर्चिल ने निश्चय किया कि वे अवश्य ही इस अवसर से लाभ उठायेंगे। पर वे जानते थे कि बिना पहले से तैयारी

किये हुए वे भाषण न दे सकेंगे। इसलिए उन्होंने अपने भाषण को पहले से ही तैयार करके उसे रट लिया जिससे वे ज्यों का त्यों वहाँ पर उसे दुहरा सकें। यद्यपि यह अवश्य कहा जा सकता है कि पार्लियामेंट में भाषण देनेवाले के लिए यह तरीक़ा ठीक नहीं था परन्तु मिस्टर चर्चिल का यह प्रथम अवसर था और भाषण देने के लिए और कोई उपाय भी नहीं था।

पर इस प्रकार भाषण देने में कठिनाई एक बात की थी। वह यह कि रटे हुए भाषण को किस प्रकार प्रारम्भ किया जाय। मिस्टर चर्चिल के सम्मुख यह एक कठिन समस्या थी, क्योंकि वे जानते थे कि यदि उन्हें उपयुक्त अवसर पर अपने भाषण को शुरू करने के लिए कोई बात न मिल सकी तो इतनी मेहनत से तैयार की गई तथा रटी हुई उनकी वक्तृता व्यर्थ हो जायगी। वे चाहते थे कि भाषण को प्रारम्भ करने के लिए दो चार वाक्य मिल जायँ। उसके बाद तो वे अपनी रटी हुई वक्तृता को ही दुहरा देंगे।

अन्त में वह अवसर आ ही गया। अधिवेशन रात में हो रहा था। मिस्टर चर्चिल अपने भाषण को अपने दिमाग़ के अन्दर भरकर जा पहुँचे। उनके मित्रों ने उन्हें प्रोत्साहित किया परन्तु अन्य लोगों ने उन्हें हतोत्साह भी किया कि वे बहुत शीघ्र बोलने के लिए जा रहे हैं। उन्हें कुछ समय तक पार्लियामेंट के भाषण सुनने के बाद ऐसा करना चाहिए था। पर मिस्टर चर्चिल इससे हतोत्साह नहीं हुए। उनके हृदय में अपने अनुभव को व्यक्त करने की अत्यधिक प्रेरणा हो रही थी।

मिस्टर चर्चिल ने अनुदारदल की पहली बेंच के पीछे ही अपना स्थान जमाया। पार्लियामेंट के प्रमुख सदस्य मिस्टर गिबसन बावेल्स उनके बग़ल में ही बैठे थे।

मिस्टर चर्चिल को मिस्टर लायड जार्ज के बाद अपनी वक्तृता देनी थी। मिस्टर लायड जार्ज वेल्स के प्रसिद्ध बैरिस्टर थे। उनका

पार्लियामेंट्री जीवन मिस्टर चर्चिल के पहले ही प्रारम्भ हो चुका था। मिस्टर लायड जार्ज प्रस्ताव में एक संशोधन भी पेश करनेवाले थे। यह संशोधन कुछ ऐसा था कि मिस्टर चर्चिल को अपने भाषण को शुरू करने के लिए एक अच्छा रास्ता मिल जाता। लेकिन कुछ कारणों वश मिस्टर लायड जार्ज ने अपना संशोधन पेश न किया। फलतः मिस्टर चर्चिल की सारी आशा पर पानी फिर गया और उन्होंने देखा कि उनको अपने भाषण को शुरू करने के लिए कोई और उपाय खोजना पड़ेगा।

उधर मिस्टर लायड जार्ज अपना भाषण दे रहे थे और इधर मिस्टर चर्चिल अपने भाषण को शुरू करने के लिए उपयुक्त वाक्यों को काग़ज़ पर लिखने का प्रयत्न कर रहे थे। परन्तु दुर्भाग्य से उन्हें लाख प्रयत्न करने पर भी कोई ऐसा वाक्य न मिल सका जिससे वे अपना भाषण प्रारम्भ कर सकते। उधर मिस्टर लायड जार्ज अपने भाषण को अत्यन्त संक्षेप में समाप्त करके बैठ गये।

अध्यक्ष ने मिस्टर चर्चिल का नाम पुकारा। अभी तक मिस्टर चर्चिल अपने भाषण का प्रारम्भ नहीं खोज सके थे। पर उन्हें खड़ा तो होना ही था। उन्हें अपना भाषण भी देना था। पर बिना एक प्रारम्भिक वाक्य के वे अपना भाषण शुरू न कर सकते थे।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह कठिन परीक्षा का समय था। निराशा उनकी आँखों से झलकने लगी, परेशानी की बूँदें माथे पर आ झलकीं; परन्तु इसी समय मिस्टर बावेल्स ने मिस्टर चर्चिल की कठिनाई समझ ली। उन्होंने पार्लियामेंट में एक लम्बी अवधि बिताई थी और जानते थे कि ऐसे अवसर पर नये सदस्य को कितनी कठिनाई उठानी पड़ती है। उन्होंने धीरे से कहा—आप इस प्रकार अपना भाषण शुरू करें—कार्नरवान के सदस्य यदि अपना नर्म संशोधन पेश किये बिना ज़ोरदार भाषण न देकर अपना संशोधन ही बिना ज़ोरदार भाषण के पेश करते तो अधिक बेहतर था।

मिस्टर चर्चिल की सारी परेशानी जाती रही। वे केवल एक ऐसे ही वाक्य की तो खोज में थे और वह उन्हें पार्लियामेंट के एक अनुभवी सदस्य से प्राप्त हो गया। बस, मिस्टर चर्चिल ने अपना भाषण शुरू कर दिया। असफलता जो उन्हें निकट ही झाँकती-सी दिखाई पड़ रही थी, उनकी आँखों के सामने से ओझल हो गई। बड़े ही उत्साह के साथ उन्होंने अपना भाषण शुरू किया।

विवाद का बल बोयरों के साथ व्यवहार के सम्बन्ध में था। लिबरलदल के सदस्यों ने बोयरों के साथ पूरी सहानुभूति दिखाई थी; क्योंकि उनके खेत जला दिये गये थे और उनको अनेक प्रकार के कष्ट दिये गये थे।

मिस्टर चर्चिल ने कहना शुरू किया—मेरे विचार से बोयर लोग सहानुभूति के शब्दों का उचित से अधिक मूल्य नहीं लगायेंगे। शायद ही किसी और जाति को शाब्दिक सहानुभूति इतनी अधिक और व्यावहारिक सहानुभूति नाममात्र को मिली हो।

जहाँ तक मैंने दक्षिणी अफ़्रीका के युद्ध को देखा है—और मैंने कुछ देखा भी है—मेरा विश्वास है कि अन्य युद्धों की अपेक्षा खास कर जिनमें नागरिकों ने भी भाग लिया हो, यह युद्ध अधिक उदारता और मानवता के साथ लड़ा गया था। सरकार की इस समय तो नीति यह होनी चाहिए कि यदि बोयर आत्म-समर्पण करना चाहते हैं तो उन्हें हर प्रकार की सुविधा दी जाय; पर यदि वे युद्ध करते हैं तो वह उनके लिए अधिक भयंकर हो।

मिस्टर चर्चिल ने हाउस की ओर देखा कि उनकी वक्तृता का प्रभाव पड़ रहा था। और फिर कहना प्रारम्भ किया—उन्हें युद्ध-क्षेत्र में पराजित किया जाना चाहिए और उन्हें यह मालूम करा देना चाहिए कि उनकी क्षुद्र स्वतंत्रता को ब्रिटिश साम्राज्य की विशाल स्वतंत्रता के अन्तर्गत करना आवश्यक है। केवल तभी उनके धर्म, धन और समान-अधिकार की सुरक्षा हो सकती है; उनकी

प्रतिनिधि संस्थाओं के लिए वादा किया जा सकता है और अन्त में ब्रिटिश सेना अपने बहादुर शत्रु को युद्ध का प्रत्येक सम्मान अर्पित करेगी।

मिस्टर चर्चिल के भाषण का तो यह एक अंश था, उन्होंने दूसरे अंश में युद्ध के बाद की परिस्थिति पर भी विचार प्रकट किये थे। युद्ध के बाद आखिर क्या होगा, इस सम्बन्ध में मिस्टर चर्चिल ने कहा—गत दस महीनों के अन्दर मैंने दक्षिणी अफ़्रीका की काफ़ी यात्रा की जिसका कुछ प्रभाव मुझ पर पड़ा है, जिसे मैं आप लोगों के सम्मुख कहना चाहूँगा।

मिस्टर चर्चिल ने इस बात पर जोर दिया कि प्रतिनिधि अधिकारों के दिये जाने के पहले स्थायी रूप से अफ़्रीका के सिविल अध्यक्ष के पद पर अल्फ़्रेड मिलर ऐसा कोई शासक नियुक्त किया जाय।

इसके बाद मिस्टर चर्चिल ने अपना भाषण समाप्त करते हुए अपने पिता का उल्लेख करते हुए कहा—हाउस ने जिस धैर्य के साथ मेरी बातों को सुना उसके लिए बैठने के पहले में, धन्यवाद देना चाहता हूँ। मै जानता हूँ कि हाउस ने मुझ पर यह कृपा मेरे कारण नही की बल्कि उस व्यक्ति के कारण की है जिसकी स्मृति आज भी वे अपने हृदय में रखे हुए हैं।

मिस्टर चर्चिल अपना भाषण समाप्त करके बैठ गये। पूरे हाउस से उनकी प्रशंसा के शब्द सुनाई पड़ रहे थे। उनको अपने पहले ही भाषण में जो सफलता मिली वह आश्चर्यजनक थी। स्वयं मिस्टर चर्चिल को सम्भवतः यह आशा नहीं थी कि वे इतना सुन्दर भाषण दे सकेंगे। उनके भाषण की प्रशंसा उनके पक्ष तथा विरोधी पक्ष के लोगों ने समान रूप से की।

मिस्टर चर्चिल के भाषण समाप्त करने के पश्चात् लिबरल सदस्य सर राबर्ट रीड खड़े हुए। उन्होंने मिस्टर चर्चिल की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप लोगों ने माननीय सदस्य की बातों को

सुन लिया है जो अभी अपना भाषण समाप्त कर चुके हैं। उनमें वही साहस है जो लार्ड रैंडोल्फ़ ने इस हाउस में थोड़े वर्षों पहले प्रकट किया था। मैंने बड़े ही आनन्द से माननीय महोदय के भाषण को सुना।

वृद्ध जोसेफ़ चेम्बरलेन ने भी उनकी बड़ी प्रशंसा की। उन्होंने तो कहा कि पिता पुत्र के रूप में अवतीर्ण हुआ है। दूसरे दिन प्रसिद्ध विधान-शास्त्री एस्क्विथ ने लिबरल बेंच से भाषण देते हुए मिस्टर चर्चिल के भाषण की बड़ी प्रशंसा की।

मिस्टर चर्चिल अपने प्रथम भाषण में ही इतनी प्रशंसा प्राप्त करने से और भी उत्साहित हुए। परन्तु सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि इस भाषण के ही द्वारा उनका परिचय मिस्टर लायड जार्ज से पार्लियामेंट के 'बार' में हुआ। मिस्टर चर्चिल और मिस्टर लायड जार्ज के इस परिचय ने शीघ्र ही मित्रता का रूप धारण कर लिया और अनेक कठिन परिस्थितियों मे यह मित्रता उसी प्रकार बनी रही।

सफलता के पथ पर

मिस्टर चर्चिल का राजनीतिक जीवन प्रारम्भ हो गया। अपनी प्रथम सफलता से ही उन्हें यह निश्चय हो गया कि वे उच्च से उच्च पद प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु अपनी महत्त्वाकांक्षा पूर्ण करने के उन्हें दो ही उपाय दिखाई पड़े। पहला तो यह कि वे अनुदारदल के सच्चे सदस्य बने रहें अर्थात् अपने मस्तिष्क और स्वतंत्र विचारों को तिलाञ्जलि देकर पार्टी के इंगितों पर ही कार्य करते रहें। ऐसे व्यक्ति दल के विशेष रूप से विश्वासपात्र होते हैं क्योंकि उनसे कभी खतरे की सम्भावना नहीं होती। कुछ दिन की लम्बी सेवा के बाद यदि उस व्यक्ति में कुछ योग्यता हुई तो पार्टी उसे कोई पद भी दे सकती

है। बहुधा पार्टी-भक्ति के बल पर अयोग्य व्यक्ति भी उच्च पद पर पहुँच जाते हैं।

परन्तु मिस्टर चर्चिल से पार्टी की इस प्रकार की आज्ञाकारिता की आशा करना ठीक नहीं था। किसी के भी दोष को स्पष्ट रूप से कह देना तो उनका सदा से स्वभाव रहा है। जो सैनिक अपने सैनिक अफ़सरों और सेनापतियों तक की कटु से कटु आलोचना करने में नहीं चूकता था भला उससे पार्टी का अन्धभक्त होने की कैसे आशा की जा सकती थी। पर प्रश्न अब यह था कि यदि मिस्टर चर्चिल अनुदारदल के आज्ञाकारी सदस्य नहीं बनते तो उनकी सफलता का और मार्ग ही क्या है?

उनके सम्मुख दूसरा रास्ता अपने मार्ग को आप तैयार करना था और मिस्टर चर्चिल ने उसे ही चुना। अपना मार्ग अपने आप निश्चित करना उनका पैतृक गुण है। उनके पिता ने भी पार्लियामेंट में अपनी सफलता को अपनी पार्टी की इच्छा पर निर्भर नहीं रखा था। लार्ड रैन्डोल्फ़ अनुदारदल के सदस्य थे परन्तु उनके विचार स्वतंत्र थे। परिणाम यह हुआ कि अनुदारदल के अन्तर्गत ही उन्होंने 'फोर्थ पार्टी' नाम का एक दल स्थापित कर लिया। इस दल में बाद में ए० जे० बाल्फोर, सर हेनरी ड्रमंड ओल्फ और सर जानगोर्स भी सम्मिलित हो गये परन्तु इनका उद्देश्य केवल ग्लैडस्टन का विरोध करना था।

लार्ड रैन्डोल्फ़ का उद्देश्य अनुदारदल के कार्यक्रम को अधिक विस्तृत बनाना था। वे चाहते थे कि अनुदारदल की नीति ऐसी हो जिसे जनता पसन्द करे क्योंकि अब तक अनुदारदल केवल उच्च-वर्ग के लोगों तक ही सीमित था। जनता से इसका बिलकुल ही सम्पर्क नहीं था। लार्ड रैन्डोल्फ़ की ख्याति बहुत अधिक हुई और शीघ्र ही वे 'टोरी' प्रजातंत्रवादी दल के नेता बन गये। उन्होंने अपने को मंत्रिमंडल में पहुँचाने का भी प्रयत्न किया और अन्त में लार्ड सैलिसबरी

को उन्हें एक्सचेकर का चांसलर बनाना पड़ा। परन्तु लार्ड रैन्डोल्फ़ की महत्त्वाकांक्षा इतने से ही पूर्ण न हुई और यह निश्चित जान पड़ने लगा कि वे बहुत शीघ्र प्रधान मंत्री बन जायँगे।

बहुधा यह देखा गया है कि सुधारक विचारवाले व्यक्तियों को जब कोई उच्च पद दे दिया जाता है तब वे उसके मद में इतने भूल जाते हैं कि उनका तरीक़ा भी और लोगों-सा ही हो जाता है। पद ग्रहण करने के पूर्व अच्छे से अच्छा कार्यक्रम रखनेवाला व्यक्ति भी बाद में सब कुछ भूल-सा जाता है, पर लार्ड रैन्डोल्फ़ उन व्यक्तियों में नहीं थे। पद का उन्हें मद नहीं था और वे उसके लिए अपने जीवन के उद्देश्य को न छोड़ सकते थे। फलतः ख़ज़ाने के चांसलर होने पर भी उन्होंने अपना ढंग न बदला।

उन्होंने देश की आर्थिक स्थिति को देखते हुए मंत्रिमंडल के सामने यह प्रस्ताव पेश किया कि सेना तथा नौसेना के व्यय को कम कर दिया जाना चाहिए। परन्तु मंत्रिमंडल ने उनकी यह राय स्वीकार न की। लार्ड रैन्डोल्फ़ ने तुरन्त ही अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इतिहासकारों की राय है कि लार्ड रैन्डोल्फ़ की यह एक राजनीतिक भूल थी। उन्होंने सोचा था कि इस समय वे सैलिसबरी-सरकार के लिए ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें वह अलग नहीं कर सकती। पर बात यह न थी। लार्ड रैन्डोल्फ़ का ध्यान गोस्पेन की ओर न गया था। लार्ड सैलिसबरी ने तुरन्त ही लार्ड रैन्डोल्फ़ का इस्तीफ़ा स्वीकार कर लिया और गोस्पेन को ख़ज़ाने का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया।

लार्ड रैन्डोल्फ़ के जीवन में यह भारी पराजय थी। इसके बाद ही वे बीमार पड़े और अन्त में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी पार्टी भी बहुत कमज़ोर पड़ गई।

मिस्टर चर्चिल के सम्मुख भी अपने पिता का आदर्श था; उन्होंने पार्लियामेंट में यही मार्ग ग्रहण किया। शीघ्र ही उनको अपने स्वतंत्र विचारों को प्रकट करने का अवसर भी मिल गया। दक्षिणी अफ़्रीका

में बोयरों का युद्ध बराबर जारी था। प्रेटोरिया और लेडी स्मिथ का पतन हो चुका था और यह आशा की जा रही थी कि बोयर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देंगे, परन्तु मंत्रिमंडल की यह आशा पूरी होती न दिखाई दी। इधर मंत्रिमंडल यह भी चाहता था कि बोयर-युद्ध का शीघ्र से शीघ्र अन्त हो जाय।

ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने युद्ध को शीघ्र ही समाप्त करने के उद्देश्य से बोयरों को प्रलोभन देने का निश्चय किया और यह घोषणा की जो बोयर एक मास के अन्दर ही आत्म-समर्पण न कर देगा उसे देश से निकाल दिया जायगा। मिस्टर चर्चिल के लिए यह उपयुक्त अवसर था, उन्होंने मंत्रिमंडल की इस घोषणा का विरोध किया और कहा कि मेरे विचार से न तो यह कोई बुद्धिमानी का काम है और न इससे दक्षिणी अफ़्रीका में युद्ध शीघ्र समाप्त होने तथा शान्ति होने की ही आशा की जा सकती है।

मिस्टर चर्चिल का कहना था कि अफ़्रीका के युद्ध को शीघ्र समाप्त करने के लिए और अधिक फ़ौज भेजी जानी चाहिए जिसका संचालन शीघ्रता से हो सके और जो अधिक अच्छी हो। मिस्टर चर्चिल की इस माँग को सुनकर सम्पूर्ण पार्लियामेंट को आश्चर्य हुआ होगा क्योंकि इस प्रकार की माँग तो विरोधीदल की ओर से की जानी चाहिए थी।

मिस्टर चर्चिल की इस प्रवृत्ति के सम्बन्ध में एक घटना का बहुधा उल्लेख किया जाता है। उस घटना ने तो मिस्टर चर्चिल को विरोधीदल के ही साथ कर दिया।

मिस्टर कार्टराइट दक्षिणी अफ़्रीका के एक पत्र के सम्पादक थे। जिस समय बोयरों का युद्ध अत्यन्त भीषण रूप धारण किये था उसी समय इस पत्र में यह समाचार प्रकाशित हुआ कि किचनर ने सेना के पास गुप्त रूप से ये आदेश भेजे हैं कि बोयर बन्दी न बनाये जायें। इस समाचार के प्रकाशित होने का यह परिणाम हुआ कि मिस्टर

कार्टराइट गिरफ़्तार कर लिये गये और उन्हें एक वर्ष की सज़ा हो गई।

सज़ा से छूटने के बाद मिस्टर कार्टराइट इँग्लैंड वापस जाना चाहते थे परन्तु दक्षिणी अफ़्रीका-स्थित सैनिक अधिकारियों ने उनके दक्षिणी अफ़्रीका से बाहर जाने पर रोक लगा दी। ऐसा किस उद्देश्य से किया गया था यह तो नहीं कहा जा सकता, परन्तु इस प्रकार की आज्ञा का इँग्लैंड में बड़ा विरोध किया गया। इस प्रकार की आज्ञा नागरिक स्वतंत्रता के सिद्धान्तों के विरुद्ध थी। साथ ही जब किसी व्यक्ति को जुर्म-विशेष के लिए सज़ा मिल चुकी तब फिर उसे और अधिक परेशान करना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता।

मिस्टर जान मार्ले ने इस सम्बन्ध में पार्लियामेंट की बैठक में मन्त्रिमंडल से प्रश्न किया परन्तु उन्हें कुछ स्पष्ट उत्तर न दिया गया। फलतः मिस्टर जान मार्ले ने 'काम रोको' पेश प्रस्ताव करने का निश्चय किया। मिस्टर चर्चिल ने प्रस्ताव का समर्थन किया। इस प्रकार यद्यपि मिस्टर चर्चिल अनुदारदल के सदस्य थे परन्तु उन्होंने लिबरल-दल के प्रस्ताव का समर्थन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि अनुदारदल के भक्तों को चर्चिल की तरफ़ से बड़ी निराशा हुई।

उन दिनों युद्ध-मंत्री मिस्टर जान ब्रोड्रिक थे। उन्होंने सेना-सम्बन्धी सुधारों की योजना तैयार की। इस योजना के अनुसार ६ सैनिक 'क्राप' संगठित किये जाने को थे जिनमें तीन सेनायें ऐसी रहें जो किसी भी समय तुरन्त वैदेशिक कार्यों के लिए तैयार रहें। इस सेना की संख्या १,२०,००० हो। इसका कारण यह था उस समय तमाम योरप में शस्त्रीकरण की कोशिश हो रही थी। सभी राष्ट्र अपनी-अपनी सेनायें बढ़ा रहे थे। यदि हम यह कहें कि इसी शस्त्रीकरण का परिणाम सन् १९१४-१८ का महायुद्ध हुआ तो कोई अत्युक्ति न होगी।

मिस्टर ब्रोड्रिक ने अपने भाषण में अपनी इस योजना की रूप-रेखा बताई। मिस्टर चर्चिल को इस प्रकार की योजना व्यर्थ जान पड़ी और उन्होंने तुरन्त ही उसका ज़ोरदार विरोध किया। उनकी खरी आलोचना ने ब्रोड्रिक-योजना की सार्थकता में सन्देह उत्पन्न कर दिया और उस पर विचार करने के लिए दो महीने का समय निश्चित किया गया।

मिस्टर चर्चिल ने एक संशोधन पेश किया जिसका आशय यह था कि यद्यपि साम्राज्य की रक्षा के साधनों को सुदृढ़ बनाने की इस समय आवश्यकता है; सेना का संगठन अधिक विस्तृत तथा मजबूत होना चाहिए पर साथ ही यह भी है कि सैनिक-व्यय मे बराबर वृद्धि होते रहने के कारण देश की व्यापारिक तथा सामुद्रिक उन्नति को काफ़ी हानि पहुँचने की सम्भावना है। इसके अतिरिक्त युद्ध-विभाग तथा उससे सम्बन्ध रखनेवाले सभी विभागों को इस समय जिस कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है उसे देखते हुए सेना-सम्बन्धी यह भावी योजना तब तक के लिए स्थगित कर दी जानी चाहिए जब तक कि फिर शान्ति का समय न आ जाय।*

---

* "That this house, while fully recognizing the necessity of providing adequately for Imperial defence and the plain need for extensive reforms in the organization and system of the army, nevertheless cannot view without apprehension the continual growth of purely military expenditure, which diverts the energies of the country from the natural, commercial and naval developement and having regard to the extraordinary pressure under which all connected with the War Office are now working, desires to postpone final decision on future military policy until calmer times."

मिस्टर चर्चिल का यह संशोधन विरोधीदल के प्रस्ताव के कारण गिर गया। लिबरलदल के नेता सर हेनरी कैम्पबेल बैनरमैन ने अपने प्रस्ताव-द्वारा इस योजना का विरोध किया। मिस्टर चर्चिल ने ब्रोड्रिक-योजना का जोरदार विरोध किया।

उनके विरोध के दो कारण थे। पहला तो यह कि ३,००,००,००० पौंड का व्यय सेना के लिए बहुत अधिक है। दूसरे एक्सपेडीशनरी (expeditionary) सेना की संख्या बहुत अधिक है। विदेश में युद्ध करने के लिए तीन फ़ौजें रखने के प्रश्न पर मिस्टर चर्चिल ने कहा कि तीन के स्थान पर केवल एक ही सेना रखी जानी चाहिए क्योंकि जंगलियों से युद्ध करने के लिए एक सेना काफ़ी है पर योरपीयों से युद्ध करने के लिए तीन सेनायें भी काफ़ी न होंगी।

उस समय मिस्टर चर्चिल ने योरपीय युद्ध के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणी की थी वह बाद को सत्य सिद्ध हुई। उन्होंने कहा था कि योरपीय युद्ध अत्यन्त निर्दय व भीषण होगा। जो पराजित होगा वह तो बरबाद हो ही जायगा; साथ ही साथ वह भी कम बरबाद न होगा जो जीतेगा। विजयी राष्ट्र के व्यवसाय को भीषण क्षति पहुँचेगी। प्रजातंत्रों का युद्ध राजाओं के युद्ध की अपेक्षा अधिक भयंकर होगा।

मिस्टर चर्चिल ने वर्तमान शताब्दी के प्रारम्भ में युद्ध के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणी की थी वह बहुत ही शीघ्र सत्य घटित हुई। तेरह-चौदह वर्ष बाद ही योरप में सामाजिक व्यवस्था के घास के ढेर में युद्ध की जो चिनगारियाँ सुलग रही थीं वे परिस्थिति का एक झोंका पाते ही धधक उठी और युद्ध ने शीघ्र ही भीषण रूप धारण कर लिया।

मिस्टर चर्चिल ने कामन्स सभा में ब्रोड्रिक-योजना की जो कटु आलोचना की उसका प्रभाव बहुत अधिक पड़ा। बिल के विरोधियों ने मिस्टर चर्चिल की प्रशंसा की तथा सरकार की योजना के समर्थकों ने उसका पूरी तरह से समर्थन किया। मिस्टर ब्रोड्रिक ने अपने भाषण

में मिस्टर चर्चिल के दृष्टिकोण की बड़ी निन्दा की परन्तु इससे लाभ ही हुआ। मिस्टर चर्चिल की काफ़ी ख्याति हुई। उसके बाद ब्रोड्रिक-योजना को दो वर्ष हाउस आफ़ कामन्स में लगे और दो वर्ष तक मिस्टर चर्चिल ने जिस जोश और योग्यता से इस योजना का विरोध किया वह प्रशंसनीय है। उन्होंने सम्पूर्ण योजना के एक-एक अंग पर अपने विचार प्रकट किये। अन्त में योजना असफल रही और मिस्टर ब्रोड्रिक भी पार्लियामेंट के वादविवाद के गर्म वातावरण से निकलकर भारत के शान्त वातावरण में चले आये।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह सबसे बड़ी विजय थी। लार्ड रैन्डाल्फ ने जिस उद्देश्य से अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया था, जिस ध्येय का प्रतिपादन उन्होंने जीवन भर किया और ठीक जिस कारण उन्हें अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा था; उसी विषय को लेकर मिस्टर चर्चिल ने विजय प्राप्त की। जिस समय पार्लियामेंट में ब्रोड्रिक-योजना पर विवाद हो रहा था और मिस्टर चर्चिल उसकी कटु आलोचना कर रहे थे, उसी समय लन्दन के प्रसिद्ध पत्र 'टाइम्स' ने लिखा था कि मिस्टर चर्चिल इस समय ठीक वही भीषण भूल कर रहे हैं जो उनके पिता ने की थी।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि मिस्टर चर्चिल का विरोध भी ठीक उसी प्रश्न पर था जिस पर उनके पिता को त्यागपत्र देना पड़ा था, परन्तु यह भूल थी, यह कदापि नहीं कहा जा सकता। मिस्टर चर्चिल ने अपने पिता के उस कार्य को राजनैतिक भूल कभी नहीं समझा और न वह समझा जा ही सकता है। आगे आनेवाले वर्षों ने यह सिद्ध कर दिया कि लार्ड रैन्डाल्फ ने कितनी दूरदर्शिता की थी। ब्रोड्रिक-योजना की असफलता ने मिस्टर चर्चिल की ख्याति और भी बढ़ा दी। यद्यपि उनकी अवस्था अभी बहुत थोड़ी थी फिर भी वे एक प्रमुख राजनीतिज्ञ समझे जाने लगे।

मिस्टर चर्चिल की विरोधी प्रवृत्ति का प्रभाव भी कुछ कम न

था। वे 'ह्यूलीगन' पार्टी के सदस्य थे। ह्यूलीगन पार्टी (Hughlighan) पार्लियामेंट के अनुदारदल के अन्तर्गत एक पार्टी थी। इसकी स्थापना प्रसिद्ध सदस्य लार्ड ह्यूसेसिल के नाम पर हुई थी। लार्ड पर्सी और आर्थर स्टानले भी इस दल के सदस्य थे। इनके अतिरिक्त सर गिल्बर्ट पार्कर, लार्ड विनबोर्न आदि भी इसी दल के अनुयायी थे। सर जान गोर्स्ट के भी इस दल में सम्मिलित हो जाने से 'ह्यूलीगन' और बीस वर्ष पूर्व की 'फोर्थ पार्टी' में एक सम्बन्ध-सा स्थापित हो गया। इस नये दल में मिस्टर चर्चिल ही सबसे अच्छे वक्ता थे जो अपनी आलोचनाओं को अर्थ-विभाग के मिस्टर बाल्फोर पर विस्फोटक बम की भाँति सदैव ही फेंकने के लिए प्रस्तुत रहते थे।

इस प्रकार मिस्टर चर्चिल ने अपने राजनैतिक जीवन का प्रथम अध्याय समाप्त किया। इस थोड़े समय में ही उन्होंने जो ख्याति प्राप्त कर ली, जिस प्रकार जनता ने उनका स्वागत किया, और जिस प्रकार उनके विरोधियों को उनकी भाषण-कला ने परास्त किया उससे, मिस्टर चर्चिल के भविष्य का कुछ आभास प्राप्त किया जा सकता है।

यथार्थ में मिस्टर चर्चिल का सैनिक-जीवन कभी समाप्त नहीं हुआ। यदि जीवन के प्रारम्भिक-काल में वे सेना में थे और अपनी वीरता के कारण लोकप्रिय थे तो उनकी वह संघर्ष-प्रियता राजनैतिक जीवन में प्रवेश करने पर भी न छूटी। उन्होंने शान्तिपूर्ण जीवन से संघर्ष को सदैव अधिक अच्छा समझा। यही कारण है कि उन्होंने कभी कटु आलोचना करने से हाथ नहीं खींचा। मिस्टर चर्चिल के जीवन की इस विशेषता ने ही उन्हें सफलता की जयमाला पहनाई है।

मंत्रिमण्डल में प्रवेश

सन् १९०३ ई० में पार्लियामेंट का नया अधिवेशन फिर प्रारम्भ हुआ। मिस्टर चर्चिल ने सभा में प्रवेश किया पर उन्हें चारों ओर शान्ति दिखाई पड़ रही थी। ब्रोड्रिक-योजना ऐसी कोई योजना न थी। बोयर-युद्ध भी समाप्त हो गया था। साथ ही बोयर-युद्ध के समाप्त हो जाने के कारण ऐसी कोई समस्या भी नहीं थी जिससे मिस्टर चर्चिल की संघर्ष-प्रियता को कुछ शान्ति मिल सकती। आयर्लैंड में लगभग शान्ति स्थापित हो गई थी। सम्पूर्ण वातावरण शान्त था; कहीं भी कोई हलचल न दिखाई पड़ती थी।

परन्तु राजनैतिक-क्षेत्र में अधिक समय तक शान्ति नहीं रह सकती। राजनैतिक नेताओं के उर्वर मस्तिष्कों से सदैव किसी न किसी समस्या की उत्पत्ति होती ही रहती है। यही बात इस समय भी हुई। पार्लियामेंट की यह शान्ति अधिक समय तक न रहने पाई।

बर्मिंघम के वृद्ध नेता जोसेफ़ चेम्बरलेन दक्षिणी अफ़्रीका की यात्रा करके लौटे थे। वे अपने साथ ही एक विस्फोटक बम भी ले आये थे जिसे उन्होंने बर्मिंघम में पहले भाषण में ही छोड़ दिया। राजनैतिक शान्त वातावरण को क्षुब्ध करने के लिए यह बम बहुत काफ़ी था। इस बम-विस्फोट से मिस्टर चर्चिल को सबसे अधिक लाभ पहुँचा।

बर्मिंघम में भाषण देते हुए मिस्टर चेम्बरलेन ने कहा कि साम्राज्य के अन्तर्गत तैयार होनेवाले सामान को वैदेशिक प्रतियोगिता से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि साम्राज्य के बने हुए सामान को तरजीह दी जाय। बर्मिंघम के नेता का यह कथन साधारण महत्त्व का नहीं था। इसका अभिप्राय था इँग्लेंड की सम्पूर्ण आर्थिक नीति में आमूल परिवर्तन।

जिस समय इँग्लेंड के मंत्री सर राबर्ट पील थे उस समय से एक प्रस्ताव-द्वारा व्यापार पर से संरक्षण हटा लिया गया था और व्यापार

में आज़ादी की नीति का पालन किया जाने लगा था। मिस्टर चेम्बर-लेन ने स्वतंत्र व्यापार की नीति का पूरी तौर से विरोध किया। उन्होंने बाहर से आनेवाले खाद्य-पदार्थों पर ही कर लगाने का प्रस्ताव नहीं किया बल्कि 'टैरिफ' को काम में लाने की भी राय दी जिससे उन रियासतों से व्यापार हो सके जहाँ संरक्षण है।

मिस्टर चेम्बरलेन के इस विस्फोटक प्रस्ताव का प्रभाव लिबरल तथा अनुदार दोनों दलों पर पड़ा। लिबरलपार्टी में पारस्परिक मत-भेद के कारण कई दल हो गये थे परन्तु स्वतंत्र व्यापार के प्रश्न को लेकर वे सभी एक हो गये। सब दल अपने आपस के मतभेदों को भूल गये। इस प्रकार लिबरलदल के एक हो जाने के कारण उसकी शक्ति भी बढ़ गई।

इधर अनुदारदल पर इस प्रस्ताव का दूसरा ही प्रभाव पड़ा। जहाँ लिबरलपार्टी अपने पारस्परिक मतभेदों को भूलकर एक हो गई वहाँ अनुदारदल में कई समितियाँ हो गईं। कुछ ने मिस्टर चेम्बरलेन का समर्थन किया तो कुछ ने उनका विरोध किया। इसी समय प्रधान मंत्री बाल्फोर अनाज पर लगाये गये कर का समर्थन कर रहे थे और एक्सचेकर के चांसलर मिस्टर रिशी (Ritchie) उसको हटा देने के पक्षपाती थे। अन्त में एक्सचेकर के चांसलर को अपने पद को त्याग देना पड़ा।

इस प्रकार अनुदारदल में दो पार्टियाँ हो गई। एक तो स्वतंत्र व्यापार की समर्थक थी और दूसरी संरक्षण की हिमायती; प्रीमियर मिस्टर बाल्फोर की दशा उस समय त्रिशंकु की-सी थी। पर उन्होंने परिस्थिति को बड़ी ही कुशलता से अपने पक्ष में करने की कोशिश की। स्वयं उन्होंने अपने को किसी भी पार्टी में घोषित न किया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे दो वर्ष तक अपने पद पर बने रहे।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह अवसर अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ। वे 'टैरिफ' के पक्के विरोधी थे। फिर क्या था, मिस्टर चर्चिल तो

यह चाहते ही थे। बिना संघर्ष के उन्हें जीवन नीरस मालूम होता था। पार्लियामेंट के शान्त तथा नीरस क्षण, स्फूर्तिमय और विवाद-ग्रस्त हो गये।

परन्तु इस बार मिस्टर चर्चिल को किसी साधारण व्यक्ति से लोहा नहीं लेना था। स्वतंत्र व्यापार के पक्षपातियों ने अनुदार-दल में अपना एक गुट्ट बना लिया था जिसमें मिस्टर चर्चिल यद्यपि प्रधान व्यक्ति थे परन्तु उन्होंने अपने को पार्टी का नेता नहीं बनाया।

मिस्टर चेम्बरलेन ने इस अवसर पर यह उचित समझा कि निर्वाचन-क्षेत्र को ही शिक्षित किया जाय और उन्होंने इसके लिए सम्पूर्ण इँग्लैंड की यात्रा करने का निश्चय किया। मिस्टर चर्चिल भी अपने पुराने समर्थक के पीछे-पीछे स्वतंत्र व्यापार का प्रतिपादन करते हुए यात्रा करने लगे। जहाँ से मिस्टर चेम्बरलेन अपना भाषण देकर दूसरे स्थान को रवाना होते, वहाँ युवक चर्चिल तुरन्त पहुँच जाते। मिस्टर चर्चिल का इँग्लैंड की जनता ने अच्छा स्वागत किया। उनके भाषणों का खूब प्रभाव पड़ा और उन्हें भाषण देने का अच्छा अभ्यास भी हो गया। मिस्टर चेम्बरलेन ने राजनीतिक-क्षेत्र में काफ़ी ख्याति प्राप्त की थी; फिर भी उन्हें अपने इस नये युवक प्रतिद्वन्द्वी के सम्मुख उतनी अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई।

मिस्टर चेम्बरलेन ने 'टैरिफ'-समस्या को लेकर एक बड़ा आन्दोलन खड़ा कर दिया पर साथ ही साथ उन्होंने अपने विरोधी मिस्टर चर्चिल को राष्ट्र का एक प्रमुख व्यक्ति भी बना दिया। मिस्टर चर्चिल की योग्यता तथा परिस्थितियों ने उन्हें वह स्थान दिला दिया जो सम्भवतः किसी अन्य राजनीतिज्ञ को अनेक वर्षों में भी प्राप्त नहीं हो सकता था। मिस्टर चर्चिल की सफलता ने इनके कुछ विरोधियों को इतना निराश किया कि वे क्रोधित हो उठे और मिस्टर चर्चिल पर व्यक्तिगत आक्षेप करने लगे।

कर्नल केनयान स्लैन्ली ने उन पर कुछ व्यक्तिगत आक्षेप किये। मिस्टर चर्चिल भला कब चूकनेवाले थे, उन्होंने तुरन्त ही कर्नल महोदय को उत्तर देते हुए कहा——कर्नल केनियन स्लैन्ली कहते हैं कि मैं और मेरे माननीय सहयोगी देशद्रोही हैं। मैंने यह बहुधा देखा है कि जब राजनैतिक विवाद अधिक उग्र हो जाता है तब सीमित बुद्धि के लोग अशिष्ट हो जाते हैं। यदि मैं देशद्रोही हूँ तो कम-से-कम जब कर्नल केनियन स्लैन्ली घर में बैठे मौजें कर रहे थे तब मैं दक्षिणी अफ़्रीका में बोयरों के साथ युद्ध कर रहा था। मेरे माननीय सहयोगी को तथा मुझे युद्ध-क्षेत्र में सेवा करने का गौरव प्राप्त है जब कि कर्नल महोदय इँग्लैंड की सुखदायक सुरक्षा में केवल शब्दों-द्वारा 'क्रूगर' की हत्या कर रहे थे।

जब स्वतंत्र व्यापार के पक्षपातियों ने मंत्रिमंडल से इस्तीफ़ा दे दिया उस समय प्रधान मंत्री बाल्फोर के लिए सबसे बड़ी चतुरता की बात यह थी कि वे मिस्टर चर्चिल को मंत्रिमंडल में शामिल कर लेते और इस प्रकार उनके एक ज़बरदस्त आलोचक का मुंह बन्द हो जाता। परन्तु मिस्टर बाल्फोर ने यह न किया। मिस्टर आर्थर बाल्फोर की यह एक भीषण राजनैतिक भूल थी जो आगे चलकर उनके पद-त्याग का कारण बनी। मिस्टर चेम्बरलेन ने भी बाल्फोर की इस भूल का अनुभव किया और उन्होंने श्रीमती एस्क्विथ से भी कहा था कि मिस्टर चर्चिल नवयुवकों में सबसे चतुर हैं; उसे गँवा कर आर्थर ने भारी ग़लती की।

इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि आर्थर बाल्फोर ने यह भारी ग़लती की परन्तु इससे मिस्टर चर्चिल के पद में किसी प्रकार की रुकावट न पड़ी। उन्होंने सभी दलों से एक पंक्ति में खड़े होने की अपील की। अन्त में मिस्टर चर्चिल ने देखा कि वे अधिक समय तक अपने को अनुदारदल से लगाये नहीं रख सकते। उनके और अनुदारदल के बीच मतभेद बढ़ते जा रहे थे। अन्त में उन्होंने अनुदारदल को छोड़

देने का निश्चय किया और लिबरलदल में जाकर स्थान ग्रहण किया। जिस समय मिस्टर चर्चिल ने अपने पुराने प्रतिद्वन्द्वी लायड जार्ज के पास अपना स्थान ग्रहण किया उस समय लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ।

मिस्टर चर्चिल के जीवन में इस घटना का बहुत ही मुख्य स्थान है क्योंकि इसी क्षण से उनका जीवन बिलकुल बदल गया। उन्होंने पार्लियामेंट में अनुदारदल की इतनी कटु आलोचना की कि लोग ऊब गये और अन्त में नौबत यहाँ तक आ गई कि जब वे भाषण देने के लिए खड़े होते थे तब उनके विरोध में विपक्षीदल सभा-भवन छोड़कर चला जाता था।

अन्त में वही हुआ जो होना था; मिस्टर चर्चिल की आलोचनाओं के सम्मुख बाल्फोर सरकार न टिक सकी। शीघ्र ही मिस्टर बाल्फोर को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा। मिस्टर चर्चिल का तो उद्देश्य यही था। वे जानते थे कि मिस्टर बाल्फोर की सरकार को जनमत प्राप्त नहीं है। मिस्टर बाल्फोर के पद-त्याग के बाद कैम्पबेल बैनरमैन ने मंत्रिमंडल बनाया।

कैम्पबेल बैनरमैन बहुत ही कुशल राजनीतिज्ञ थे। लिबरल-दल में उनका सम्मान भी कुछ कम नहीं था। मिस्टर बैनरमैन ने यह अच्छी तरह समझ लिया कि युवक चर्चिल में एक महान् व्यक्तित्व मौजूद है जिसे दबाना असम्भव है। उन्होंने तुरन्त ही युवक चर्चिल को मंत्रिमंडल में स्थान दिया। मिस्टर विंस्टन चर्चिल उपनिवेशो के पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी बनाये गये। इस समय उनकी अवस्था केवल ३१ वर्ष की थी। इतनी कम अवस्था में इस पद को प्राप्त करना कोई साधारण बात न थी।

मिस्टर चर्चिल की इस नियुक्ति से यद्यपि मिस्टर कैम्पबेल की दूरदर्शिता प्रकट होती है फिर भी इससे लिबरलदल ने आश्चर्य प्रकट किया। कारण यह था कि लिबरलदल में ऐसे कितने ही योग्य सदस्य थे जो सारी उम्र पार्टी के सच्चे सदस्य रह चुके थे। अत-

एव उन्हें दल में एक सद्य:प्रविष्ट व्यक्ति को मंत्रिमंडल में पहुँचते देखकर ईर्ष्या होना स्वाभाविक था।

इस प्रकार मिस्टर चर्चिल ने राजनीतिक क्षेत्र में विद्यार्थी की भाँति पैर रक्खा था और उसके कुछ ही दिन बाद एक कुशल राज-नीतिज्ञ बनकर मंत्रिमंडल में अपना स्थान बना लिया।

दूसरे चुनाव में

मिस्टर चर्चिल की संघर्ष-प्रियता का सबसे सुन्दर उदाहरण तो तब मिला जब वे लिबरलपार्टी के सदस्य की हैसियत से निर्वाचन लड़ रहे थे। इस बार का चुनाव बड़ा ही विचित्र हुआ। यद्यपि पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी मिस्टर चर्चिल का एक नहीं अनेक लिबरल निर्वाचन-क्षेत्र स्वागत करने को तैयार थे, जहाँ मिस्टर चर्चिल को न तो अधिक प्रयत्न ही करना पड़ता और न उनकी विजय में ही कोई संदेह होता, परन्तु मिस्टर चर्चिल को यह पसन्द न था। वे तो यह दिखा देना चाहते थे कि वे अपने पार्टी के नाम पर पार्लियामेंट में नहीं पहुँचते बल्कि जिस पार्टी में वे होंगे उसी की शक्ति बढ़ेगी। उनको तो अपने नाम पर, अपनी भाषण-शक्ति पर तथा अपनी प्रतिभा पर विश्वास था। इसी लिए उन्हें ऐसे निर्वाचन-क्षेत्र की आवश्यकता थी जहाँ उन्हें काफ़ी संघर्ष का सामना करना पड़े।

उस समय उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर का निर्वाचन-क्षेत्र अनुदार-दल का पूरा समर्थक समझा जाता था। अनुदारदल को भी विश्वास था कि इस निर्वाचन-क्षेत्र में कोई भी लिबरल कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकता। परिस्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। मिस्टर चर्चिल ने इसी निर्वाचनक्षेत्र को अपने लिए चुना।

उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर के पुराने नेता थे सर विलियम होल्ड्सवर्थ। ये सज्जन राजनीति से अवकाश ग्रहण कर चुके थे। अनुदारदल ने उनके स्थान पर ज्वानसन हिक्स को खड़ा किया था। हिक्स एक सालीसिटर थे। काम की अधिकता के कारण उन्हें अपने राजनैतिक जीवन की ओर अधिक ध्यान देने का अवसर भी नहीं था। यही कारण है कि अनुदारदल के पुराने सदस्य होने पर भी वे निर्वाचन-क्षेत्र के लिए अपरिचित ही बने रहे।

मिस्टर हिक्स को जिस निर्वाचन-क्षेत्र से खड़ा किया गया था उसकी समस्याओं के सम्बन्ध में कुछ अनुभव भी उनको न था। बेचारे व्यापार तथा व्यवसाय से नितान्त अपरिचित थे। उन्हें राजनीति की चालों का भी अनुभव कम था।

जब इस निर्वाचन-क्षेत्र से मिस्टर चर्चिल खड़े हुए तब सम्पूर्ण अनुदारदल का ध्यान मैनचेस्टर की ओर लग गया। सभी को यह आश्चर्य था कि मिस्टर चर्चिल ने इस निर्वाचन-क्षेत्र को क्यों चुना। पर मिस्टर चर्चिल को इसकी तनिक भी परेशानी न थी। बल्कि वे तो संघर्ष में आनन्द ले रहे थे। मिस्टर चर्चिल के मुक़ाबले में खड़े होने के उपयुक्त ये महाशय होते भी न यदि सम्पूर्ण अनुदारदल उनकी सहायता के लिए प्रयत्नशील न होता।

मिस्टर हिक्स ने समझा कि वे मिस्टर चर्चिल की नीति को जनता के सम्मुख रखकर उन्हें नीचा दिखा सकेंगे। उन्हें यह विश्वास था कि अनुदारदल के कार्यक्रम को जनता अधिक पसन्द करती है परन्तु स्वतंत्र व्यापार के प्रश्न ने उन्हें बता दिया था कि उनका हित किस ओर जाने में है। मिस्टर हिक्स ने अवसर का उपयोग करते हुए मिस्टर चर्चिल के सम्बन्ध में कहा—मिस्टर चर्चिल को यह न समझना चाहिए कि वे कभी फिर हमारी पार्टी में सम्मिलित हो सकते हैं। उनके और हमारे दल के बीच में उन्हीं के द्वारा बनाई गई एक बड़ी खाई हो गई है जिसके बल

पर मैं यह कह सकता हूँ कि वे यूनियनिस्ट पार्टी में फिर कभी नहीं आ सकते ।

मिस्टर हिक्स ने अपने प्रतिद्वन्द्वी के सम्बन्ध में जो भविष्य-वाणी की थी वह कहाँ तक ठीक उतरी इसका शीघ्र ही पता चल गया।

मिस्टर हिक्स ने अपने चुनाव के लिए अपनी सम्पूर्ण योग्यता भी खर्च कर दी । चर्चिल ने बड़े परिश्रम के पश्चात् एक पैम्फलेट तैयार किया जिसमें जो कुछ चर्चिल ने अनुदारदल के सदस्य रहते हुए कहा था और जो कुछ वे अब लिबरलदल के सदस्य की हैसियत से कहते थे, दोनों के द्वारा यह दिखाने की कोशिश की गई थी कि मिस्टर चर्चिल का कोई सिद्धान्त नहीं ।

अनुदारदल में यह आशा की जाती थी कि उस पैम्फलेट का जनता पर बड़ा असर पड़ेगा और मिस्टर चर्चिल को इसका कोई उत्तर न सूझ पड़ेगा । इसमें कोई संदेह नहीं कि यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो उसे ऐसी परिस्थिति में बहुत ही नीचा देखना पड़ता पर मिस्टर चर्चिल ऐसे प्रसिद्ध वक्ता के लिए यह कोई बड़ी बात न थी।

एक अवसर पर जब वे उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर की एक बड़ी सभा में भाषण दे रहे थे उस समय उनके कुछ विरोधी उस सभा में मौजूद थे। उनमें से एक ने चर्चिल के विरुद्ध प्रकाशित उस पैम्फलेट को चर्चिल के पास पहुँचा दिया और 'इसका उत्तर दो ?' 'इसका उत्तर दो ?' की आवाजें आने लगीं।

मिस्टर चर्चिल ने पैम्फलेट को हाथ में ले लिया। शान्ति के साथ एक दृष्टि उसके पृष्ठों पर डाली और दूसरे ही क्षण उपस्थित जनता से कहा—मैं जब अनुदारदल में था तब मैंने बहुत-सी मूर्खतापूर्ण बातें कहीं थीं । अब चूंकि मैं इस प्रकार

की मूर्खतापूर्ण बातें अधिक कहना नहीं चाहता हूँ और न करना; इसलिए मैं उस मूर्खतापूर्णदल से ही अलग होगया हूँ।

इतना कहकर मिस्टर चर्चिल ने पैम्फलेट के टुकड़े-टुकड़े करके घृणा के साथ फेंक दिये। पैम्फलेट का जो कुछ भी प्रभाव पड़ा था सब जाता रहा। हिक्स के समर्थक निराश हो गये। फिर भी वे मिस्टर चर्चिल के दल-त्याग की बात कहने से न चूकते पर लिबरलदल के लोग भी ऐसे अवसरों पर जोसेफ़ चेम्बरलेन का नाम लेने से न चूकते। मिस्टर चर्चिल का इससे कुछ बनता-बिगड़ता न था और न उनके चुनाव पर ही इसका कोई महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा था।

हिक्स-चर्चिल-संघर्ष इतना महत्त्वपूर्ण बन गया था कि सम्पूर्ण देश का ध्यान इसी ओर लगा था। यदि हिक्स के प्रतिद्वन्द्वी मिस्टर चर्चिल न होते तो शायद उनका नाम भी कोई न जानता पर चर्चिल के कारण हिक्स की भी ख्याति हो गई।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री मिस्टर आर्थर बालफ़ोर भी उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर के निर्वाचनक्षेत्र के निकट के ही एक निर्वाचनक्षेत्र से चुनाव लड़ रहे थे। पर चर्चिल की धूम के आगे बेचारे का चुनाव-आन्दोलन इतना नीचे पड़ गया था कि कोई उस सम्बन्ध में कभी बात भी न करता था। मिस्टर बालफोर की स्थिति भी अपने निर्वाचनक्षेत्र में काफ़ी दृढ़ थी इसलिए उन्हें काफ़ी अवकाश मिलता था और वे अकसर आकर उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर में अपनी भाषणकुशलता-द्वारा अनुदारदल के उम्मीदवार की स्थिति को मज़बूत बनाने की कोशिश करते। पर मिस्टर चर्चिल के सम्मुख केवल भाषणकुशलता से ही काम नहीं चल सकता था। कारण यह था कि मिस्टर चर्चिल को जनता के हृदय में जो स्थान मिल गया था उससे च्युत करने के लिए शब्दों की अपेक्षा कुछ और भी बातों की आवश्यकता थी।

स्वतंत्र व्यापार के प्रश्न ने यह स्पष्ट कर दिया था कि स्वतंत्र व्यापार-द्वारा ही मैनचेस्टर की उन्नति सम्भव है। परिणाम यह हुआ कि चुनाव में स्वतंत्र व्यापार के समर्थकों को बहुत वोट मिले। कुल ६ सीटें थीं और सभी से लिबरल उम्मीदवारों को चुना गया। पिछले चुनाव के अवसर पर इन्हीं छः सीटों में से पाँच ने अनुदारदल के उम्मीदवारों को अपना प्रतिनिधि चुना था। मिस्टर चर्चिल १२४१ वोटों से जीत गये। मैनचेस्टर में लिबरलों को जो सफलता मिली उसका देश पर बड़ा असर पड़ा। सभी स्थानों में लिबरलों की जीत हुई। सुधार-बिल के बाद अनुदारदल पहली ही बार पराजित हुआ था।

लिबरलों की इस विजय ने इंग्लैंड की राजनीति का तख्ता ही पलट दिया। आगे आनेवाले वर्षों ने यह स्पष्ट कर दिया कि नई सरकार का कार्यक्रम भी नया ही था।

मन्त्रिमंडल के शिक्षणालय में

मिस्टर चर्चिल के राजनीतिक-जीवन का यह दूसरा अध्याय था। बहुत कम अवस्था में वे इंग्लैड ऐसे महान् साम्राज्य के मंत्रिमण्डल में जूनियर मंत्री के पद पर आरूढ़ हुए थे। यह उनकी प्रतिभा तथा योग्यता का परिचायक था।

जिस समय मिस्टर चर्चिल ने मंत्रिमण्डल में प्रवेश किया, उस समय उन्हें मंत्रिमंडल का अनुभव नहीं था। इसके अतिरिक्त लिबरल-दल के मंत्रिमंडल का निर्माण यद्यपि सर हेनरी कैम्पबेल बैनरमैन ने किया था पर मंत्रिमण्डल के अन्य सदस्यों की योग्यता के आगे उनकी प्रतिभा एक प्रकार से मंद-सी पड़ गई थी। एक्चेकर के प्रधान थे मिस्टर हर्बर्ट ऐस्क्विथ। ऐस्क्विथ की योग्यता से सम्पूर्ण देश परिचित था। वैदेशिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय विषयों की जानकारी के लिए प्रसिद्ध सर

एडवर्ड ग्रे वैदेशिक-विभाग के प्रधान थे। व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष थे मिस्टर लायड जार्ज। जान मार्ले प्रसिद्ध दार्शनिक तथा लिबरल-दल के प्रमुख व्यक्ति समझे जाते थे। उन्हें भारत-सचिव नियुक्त किया गया था। मिस्टर हाल्डेन युद्ध-मंत्री थे।

ऐसे महान् व्यक्तियों के सम्मुख प्रधान मंत्री की लोकप्रियता नष्ट हो गई थी। पर सर बैनरमैन का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि वह उनकी बौद्धिक योग्यता की कमी को पूरा कर देता था। सर बैनरमैन का मंत्रिमण्डल बहुधा उन्हें कामंस सभा से लार्ड सभा में इसलिए भेज देता जिससे मंत्रिमंडल की कार्यवाही स्वतंत्रता-पूर्वक होती रहे।

ऐसे विशिष्ट व्यक्तियों के मंत्रिमण्डल में मिस्टर चर्चिल ने एक जूनियर मंत्री के रूप में प्रवेश किया था अतएव उन्हें बहुत कुछ सीखने का अवसर था। मिस्टर चर्चिल ने इतने योग्य सहयोगियों के साथ काम किया फिर भी कभी ऐसा अवसर नहीं आया जब कि उनकी अनुभवहीनता प्रकट हुई हो।

मंत्रिमंडल में मिस्टर चर्चिल को मिस्टर जान मार्ले अधिक प्रभावशाली व्यक्ति प्रतीत हुए। उनके साथ चर्चिल का अधिक सम्पर्क रहा। मार्ले के विचारों का भी मिस्टर चर्चिल पर बहुत प्रभाव पड़ा। बाद में जब भारत-सम्बन्धी सुधार-बिल पर कामंस सभा में विवाद हो रहा था उस समय मिस्टर चर्चिल ने जिस मनोवृत्ति का परिचय दिया था वह मार्ले के संसर्ग का ही परिणाम था।

यद्यपि मिस्टर चर्चिल को मंत्रिमंडल में स्थान प्राप्त हो गया परन्तु औपनिवेशिक पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी के लिए लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए अधिक गुंजाइश नहीं होती। परन्तु मिस्टर चर्चिल के पीछे ख्याति तो जैसे दासी-सी लगी रहती है। जिस समय उन्होंने मंत्रिमंडल में प्रवेश किया उस समय स्थिति दूसरी थी। भूतपूर्व अनुदार मंत्रिमण्डल ने युद्ध को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया था। लिबरल-मंत्रिमंडल के

लिए अब बोयरों की समस्या को सदा के लिए सुलझा देना था। इस कार्य में मिस्टर चर्चिल को अपने को सबसे आगे लाने का अवसर मिला। दक्षिणी अफ़्रीका में उन्होंने अनुभव प्राप्त किया था और उस अनुभव का उन्होंने इस अवसर पर उपयोग भी पूरी तौर से किया। उस समय औपनिवेशिक सेक्रेटरी थे लार्ड एलगिन, जो भारत के वाइसराय थे और थोड़े समय पहले ही भारत से वापस गये थे।

दक्षिणी अफ़्रीका के सम्बन्ध में जो क़ानून सरकार बनाना चाहती थी उसका अत्यन्त विवादपूर्ण होना स्वाभाविक ही था। लिबरल सरकार का कहना था कि बोयरों के साथ अच्छा बर्ताव होना चाहिए। अनुदारदल की ओर से इसका ज़ोरदार विरोध किया गया। ऐसे अवसर पर मिस्टर चर्चिल ने अपनी भाषणकुशलता का उपयोग किया।

कुछ समय बाद ही सर हेनरी कैम्पबेल का स्वास्थ्य ख़राब हो गया अतएव उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। मिस्टर हर्बर्ट ऐस्क्विथ ने मंत्रिमण्डल बनाया। इस प्रकार एक स्थान मंत्रिमण्डल में जो रिक्त हुआ था उसकी पूर्ति के लिए मिस्टर चर्चिल ही उपयुक्त व्यक्ति समझे गये। प्रिवी कौंसिल के वे सदस्य हो ही गये थे अतएव उन्हें व्यापार के बोर्ड का कार्य-भार सौंपा गया।

इस प्रकार जिस समय मिस्टर चर्चिल ब्रिटेन के मंत्री हुए उस समय उनकी अवस्था केवल ३४ वर्ष की थी। इतनी कम अवस्था में उनका मंत्री होना उनकी योग्यता तथा लगनशीलता का प्रमाण है। उन्हें पार्लियामेंट में प्रवेश किये हुए केवल सात वर्ष हुए थे। लिबरलदल में आये तो अभी चार वर्ष से अधिक न हुए थे। परन्तु इतने ही समय में मिस्टर चर्चिल ने इस उच्च पद को प्राप्त कर लिया। इतना ही नहीं, लिबरलदल के वे प्रसिद्ध नेता तथा वक्ता समझे जाने लगे।

यह घटना सन् १९०८ के वसन्त की थी। पर मिस्टर चर्चिल का यह सौभाग्य अधिक समय तक रह न सका। कारण यह था कि पार्लियामेंट के नये नियमों के अनुसार यह आवश्यक था कि बोर्ड आफ

ट्रेड के नये प्रेसिडेंट को अपने निर्वाचनक्षेत्र की स्वीकृति प्राप्त करनी पड़ती थी। अतएव इस प्रकार उन्हें उत्तर-पश्चिम मैनचेस्टर के निर्वाचन-क्षेत्र में फिर एक बार अपने लिए वोट माँगने को खड़ा होना पड़ा।

इस बार भी उनके विपक्ष में अनुदारदल की ओर से ज्वायनसन हिक्स खड़े किये गये थे। इस समय परिस्थिति बदल गई थी। मिस्टर हिक्स ने अपना काफ़ी प्रचार कर लिया था। मिस्टर चर्चिल ने अपने निर्वाचकों से कहा कि सरकार के एक सदस्य को फिर से अपने को निर्वाचित क... े के लिए अधिक कहने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उस पर शास... का जो भार होता है वह उसे किसी दल-विशेष क सदस्य नहीं रहने देता। वह तो किसी दल का सदस्य न होकर सम्पूर्ण राष्ट्र का व्यक्ति होता है।

उधर हिक्स ने अपनी वाक्पटुता का आश्रय लिया। लिबरल-सरकार के दोषों को गिनाना ही उनका प्रमुख कार्य था। लिबरल-मंत्रि-मण्डल ने दो वर्षों में उपनिवेशों की स्थिति खराब कर दी, नौसेना को कमज़ोर कर दिया, टैक्सों में वृद्धि की, धार्मिक विश्वासों पर आघात किये इत्यादि बातों का ज़िक्र मिस्टर हिक्स अपने भाषणों में करते। मिस्टर लायड जार्ज अपने सहयोगी तथा परममित्र मिस्टर चर्चिल की ओर से बोलने के लिए मैनचेस्टर आये उनके भाषण का बहुत कुछ प्रभाव पड़ा परन्तु फिर भी मिस्टर चर्चिल की जीत न हो सकी। वे ४९२ वोटों से हार गये। यद्यपि दस हज़ार मतदाताओं के क्षेत्र में इतने वोटों से हारना बहुत अधिक महत्त्व नहीं रखता। परन्तु फिर भी बोर्ड आफ़ ट्रेड के प्रेसिडेंट की आखिर यह पराजय तो थी ही।

संघर्षप्रिय चर्चिल का भाग्य भी संघर्षपूर्ण ही है। शीघ्र ही उन्हें डंडी के लिबरल नेता का निमंत्रण मिला। मिस्टर चर्चिल के लिए यह सौभाग्य की बात थी। वे तुरन्त ही डंडी पहुँचे और चुनाव के लिए खड़े हो गये। यहाँ भी उन्हें कम संघर्ष नहीं करना पड़ा,

पर अन्त में उनकी विजय हुई। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल मंत्रिमंडल में बने रहे।

बोर्ड आफ़ ट्रेड के प्रेसिडेंट के पद पर मिस्टर चर्चिल ने दो वर्ष बड़ी लगन से काम किया। उन्हें अनेक ऐसे क़ानून बनवाने में सफलता प्राप्त हुई जिनके कारण हुए परिवर्तन बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

मिस्टर चर्चिल के जीवन के ये दो वर्ष अत्यन्त परिश्रम के थे। अवकाश तो उन्हें नाममात्र को भी न मिलता था। राजनैतिक-क्षेत्र में सफलता मिल चुकने के बाद मिस्टर चर्चिल ने दाम्पत्य-जीवन में भी सफलता प्राप्त करने का निश्चय किया। इस जीवन के लिए उन्होंने पहले ही तैयारी कर ली थी क्योंकि मिस्टर चर्चिल के कथनानुसार जो सफल राजनीतिज्ञ होता है वह सफल पति भी होता है।

मिस्टर चर्चिल का परिचय कर्नल होज़ियर की पुत्री कुमारी क्लेमेन्टाइन होज़ियर से हो गया था। धीरे-धीरे परिचय ने प्रणय का रूप धारण कर लिया और दोनों प्रेमियों का विवाह हो गया। मिस्टर चर्चिल का दाम्पत्य-जीवन अत्यन्त सफल रहा। पत्नी भी उन्हें अपनी इच्छा के अनुकूल ही मिली है।

सिडनी स्ट्रीट की दुर्घटना

मंत्रिमण्डल में मिस्टर चर्चिल के सिद्धान्तों का पुनर्जन्म ही रहा था। अनुदारदल में रहकर मिस्टर चर्चिल ने बोयर-युद्ध के पक्ष में अपनी आवाज़ बुलन्द की थी। उस समय लिबरलपार्टी ने सरकार की कठोर आलोचना की थी। लिबरलपार्टी के उस समय दो प्रमुख नेता थे जिन्होंने अपनी पूरी शक्ति के साथ चर्चिल का विरोध किया था। उनमें एक तो थे मिस्टर जान मार्ले और दूसरे मिस्टर लायड जार्ज। ये दोनों व्यक्ति शान्ति के समर्थक थे तथा दक्षिण अफ़्रीका में सरकार की युद्ध की नीति के कट्टर विरोधी थे।

जिस समय मिस्टर चर्चिल ने लिबरलदल में प्रवेश किया था उस समय बोयर-युद्ध की समस्या समाप्त हो चुकी थी। मंत्रिमंडल में उन्हें अपने दोनों पुराने विरोधियों का साथ पड़ा। मिस्टर मार्ले का, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, चर्चिल के जीवन तथा विचारों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ा। मिस्टर चर्चिल काम में विश्वास करनेवाले व्यक्ति थे और मिस्टर मार्ले प्रसिद्ध दार्शनिक थे। इस प्रकार काम और दर्शन के इस अद्भुत संगम ने चर्चिल को कुछ और ही बना दिया। मिस्टर चर्चिल मार्ले पर बड़ी श्रद्धा करते थे और मिस्टर मार्ले भी अपने नवयुवक सहयोगी पर केवल मैत्री-भाव ही नहीं रखते थे बल्कि चर्चिल को उनका पैत्रिक स्नेह भी प्राप्त था।

मिस्टर चर्चिल ने इन दो महान् नेताओं के साथ बड़ी सरलता से कार्य किया। कभी ऐसा अवसर न आया जब कि उनके विचारों का अपने साथियों के विचारों से संघर्ष होता। मिस्टर लायड जार्ज से तो उनकी इतनी घनिष्ठता हो गई कि आज तक वे एक दूसरे के सहयोगी हैं। मिस्टर लायड जार्ज जब ऐस्क्विथ के स्थान पर एक्स-चेकर के चांसलर हुए तो उन्हें मिस्टर चर्चिल से बड़ी सहायता मिली। हाउस आफ़ लार्ड्स के सुधारों के समय जो संकटपूर्ण परिस्थिति पैदा हो गई थी उसमें भी मिस्टर चर्चिल ने लायड जार्ज की बड़ी सहायता की।

मिस्टर लायड जार्ज ने ग़रीबों के अधिकारों की रक्षा के लिए जितने भी क़ानून बनवाने की कोशिश की सभी में उन्हें चर्चिल की पूरी सहायता प्राप्त हुई।

मिस्टर चर्चिल के दूसरे प्रमुख मित्र थे मिस्टर एफ० ई० स्मिथ। मिस्टर स्मिथ टोरी-दल के प्रमुख व्यक्ति समझे जाते थे। पार्लियामेंट की बैठक में बहुधा उनकी मिस्टर चर्चिल से दो-दो चोंचें हो जाती थीं। एक दूसरे का खुलकर विरोध करता, एक दूसरे को नीचा दिखाने का कोई प्रयत्न बचा न रखता पर अधिवेशन के कमरे से बाहर निकलते

ही दोनों परस्पर घनिष्ठ मित्र बन जाते। राजनैतिक जीवन के मतभेद को उन्होंने कभी अपने व्यक्तिगत जीवन में नहीं आने दिया।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं मिस्टर लायड जार्ज ग़रीबों की दशा सुधारने के लिए कुछ सामाजिक सुधार करना चाहते थे। इधर एडमिरल्टी के लार्ड मिस्टर रेजीनाल्ड मैकेना ब्रिटिश नौसेना के लिए ६ 'ड्रेडनाट' बनाने के लिए ३०,००,००० पौंड की माँग कर रहे थे। यह एक ऐसा अवसर था जब मिस्टर चर्चिल अपने पिता की भाँति फिर विरोध कर सकते थे। यह बात सन् १९०९ ई० की है।

राजनीति में मनुष्य को बहुत कुछ सीखना पड़ता है। मिस्टर चर्चिल का सम्बन्ध नौसेना के अर्थशास्त्र से कभी नहीं रहा था पर ऐसे अवसर पर उन्हें इस बात की आवश्यकता पड़ी कि वे उसके सम्बन्ध में भी पर्याप्त जानकारी प्राप्त करें।

रेजीनाल्ड मैकेना एक प्रमुख व्यक्ति थे। इधर योरप में भी युद्ध के बादलों के दो-चार सफ़ेद टुकड़े आसमान में घूम रहे थे। सभी राष्ट्र शस्त्रीकरण का प्रयत्न कर रहे थे। ब्रिटेन को भी अपनी नौसेना को और अधिक शक्तिशाली बनाने की आवश्यकता महसूस हुई और ६ ड्रेडनाट बनाने की माँग नौसेना-अध्यक्ष के सम्मुख पेश कर दी।

मिस्टर चर्चिल और लायड जार्ज दोनों व्यक्ति शान्ति चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि संसार के राष्ट्र अपना सैनिक संगठन करें और एक बार महायुद्ध की ज्वाला जल उठे पर जब यह बात सबको सूझ पड़नी। ब्रिटेन को भी शस्त्रीकरण की उस दौड़ ने बेचैन कर रखा था। इसका सबसे पहला प्रभाव नौसेना पर ही पड़ा और उसके लिए ६ ड्रेडनाटों के निर्माण की माँग पेश की गई।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं एडमिरलटी के लार्ड श्री मैकेना ब्रिटेन के लिए ६ ड्रेडनाट बनवाना चाहते थे परन्तु मिस्टर चर्चिल और मिस्टर लायड जार्ज उन्हे केवल ४ ड्रेडनाट बनवाने के लिए

ही कह रहे थे। दोनों पक्ष अपनी-अपनी बातों पर अड़ गये और अन्त में यह दिखाई पड़ने लगा कि लिबरलदल में भी दो दल हो जायँगे। यह बात दुःखपूर्ण थी परन्तु अन्त में समझौता हो गया। मिस्टर चर्चिल ने इस समझौते को विचित्र ही कहा है। कारण यह था कि कहाँ तो मिस्टर मैकेना ६ ड्रेडनाट की माँग कर रहे थे और मिस्टर चर्चिल और लायड जार्ज उन्हें ४ ही ड्रेडनाट बनवाने देना चाहते थे पर अन्त में यह निश्चय हुआ कि ८ ड्रेडनाट बनें पर उनका समय बढ़ाकर अधिक कर दिया गया।

मंत्रिमंडल में रहने के इन वर्षों ने मिस्टर चर्चिल की ख्याति बहुत अधिक कर दी थी। अन्त में जब सन् १९१० में मंत्रिमण्डल में परिवर्तन हुआ तब मिस्टर ऐस्क्विथ ने चर्चिल को आयर्लैण्ड का मंत्रिपद देने को कहा। मिस्टर चर्चिल वैदेशिक समस्याओं से अब तक सदैव ही दूर रहे थे अतएव उन्हें कभी ऐसा अवसर न आया था जब वे वैदेशिक प्रश्नों के सम्बन्ध में अपने ज्ञान की वृद्धि करते। इस कारण उन्होंने आयरिश मंत्रिपद लेने से इनकार किया। अतएव उन्हें गृहसचिव का पद दिया गया। इस पद के लिए मिस्टर चर्चिल उपयुक्त भी थे।

इसी समय लंदन के इतिहास में एक अत्यन्त अप्रिय घटना घटी। ३ जनवरी १९११ ई० को गृह-मंत्री मिस्टर चर्चिल अपने घर में स्नान कर रहे थे। उसी समय उन्हें मालूम हुआ कि उनके पास कोई मनुष्य बहुत ही आवश्यक कार्य से आया है।

थोड़े दिनों पहले हांसडिच में कुछ पुलिस-अफ़सरों की हत्यायें हुई थीं जिनसे सारे लंदन में सनसनी फैल गई थी। पुलिस मामले का पता बड़ी ही सरगर्मी से लगा रही थी। अन्त में पता लगा कि दो क्रान्तिकारियों ने यह हत्या की है। पुलिस ने उनका पीछा किया और १०० नं० सिडनी स्ट्रीट के मकान में जा घेरा। क्रान्तिकारियों के पास काफ़ी हथियार थे। बन्दूकों, पिस्तौलों और

गोलियों के अतिरिक्त उनके पास हाथ के बने हुए बम भी थे। पुलिस ने उन्हें मकान में घेरने के बाद उनसे आत्मसमर्पण करने के लिए कहा पर इस प्रयत्न में उनके एक व्यक्ति को काफ़ी चोट लगी। जिस मकान में क्रान्तिकारी छिपे हुए थे उसके रहनेवालों को हट जाने के लिए सावधान कर दिया गया। पर फिर भी क्रान्तिकारियों ने आत्मसमर्पण न किया।

जब पुलिस ने देखा किसी प्रकार भी वह क्रान्तिकारियों को अपने अधिकार में नहीं कर सकती तब वह गृहमंत्री मिस्टर चर्चिल के पास सेना की सहायता प्राप्त करने की प्रार्थना करने के लिए आई।

मिस्टर चर्चिल ने सारी परिस्थिति ध्यानपूर्वक सुनी और अन्त में सेना को आदेश कर दिया। जो व्यक्ति आदेश लेने आया था वह चला गया और मिस्टर चर्चिल भी नहाने लगे।

स्नान तथा जलपान से अवकाश पाकर वे स्वयं भी घटनास्थल पर पहुँचे। पुलिस ने उस मकान को तीन बजे रात से घेर रक्खा था। पर दोपहर बीतते तक भी उसका अन्त न हो पाया था। पुलिस और सेना ने मकान को चारों ओर से घेर रखा था। लगातार दोनों ओर से गोलियाँ चल रही थीं। लंदन के निवासियों के लिए यह एक विचित्र दृश्य था। इसके पूर्व ऐसा दृश्य लंदन में कभी देखने को नहीं मिला था। मिस्टर चर्चिल दूर खड़े हुए यह सब देख रहे थे।

अन्त में एक और बात हुई। मकान के ऊपरी भाग में आग लग गई। आग का समाचार पाते ही आग बुझानेवाले दमकल आ पहुँचे। पर सेनाधिकारी उन्हें आग बुझाने से रोकने लगे। आग बुझानेवालों का यह कहना था कि चूँकि उन्हें आग लगने का समाचार प्राप्त हुआ है और वे घटनास्थल पर पहुँच गये हैं इसलिए वे आग अवश्य बुझायेंगे; इधर सेना के अधिकारी इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करने देना चाहते थे।

मामला गृहसचिव के सम्मुख लाया गया। मिस्टर चर्चिल ने यह आदेश दिया कि जिस मकान में क्रान्तिकारी हैं उसकी आग न बुझाई जाय। उसे उसी प्रकार जलने दिया जाय। हाँ, यदि आग आसपास के मकानों में फैले तो अवश्य दमकल अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकता है। दमकल चुपचाप अलग खड़ा हो गया।

दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। अन्त में जब मकान के अन्दर से गोलियों का चलना बन्द हो गया और यह निश्चित हो गया कि आतंककारी मर गये हैं तब आग बुझानेवाले दमकल ने अपना काम प्रारम्भ किया। आग बुझा दी गई।

इस घटना को लेकर मिस्टर चर्चिल की बड़ी निन्दा हुई। शान्ति-प्रिय लोगों ने गृहमंत्री के इस कार्य को अत्यन्त अनुचित कहा। उनका कहना था कि मिस्टर चर्चिल ने सेना को बुलाकर व्यर्थ में ही परस्थिति को इतना गम्भीर बना दिया। पर मिस्टर चर्चिल का कहना था कि पुलिस के घेरे के लिए वे किसी प्रकार जिम्मेदार नहीं हैं। पुलिस ने उनसे सेना की सहायता चाही थी और उन्होंने उसे वह दे दी। वे घटनास्थल पर सेना के घेरे का नेतृत्व नहीं कर रहे थे। अतएव जो कुछ हुआ उसके लिए वे उत्तरदायी नहीं कहे जा सकते। हाँ, यह अवश्य है कि जब सेनाधिकारियों और आग बुझानेवाले दमकल में अपने-अपने कर्त्तव्य-पालन के प्रश्न पर विवाद हो रहा था तब उन्होंने दमकल को आग बुझाने से अवश्य रोका था। क्योंकि उस परिस्थिति में आग बुझानेवालों की जान को खतरे में डालना बुद्धिमानी नहीं थी।

सिडनी स्ट्रीट की इस भयंकर दुर्घटना को हुए यद्यपि अनेक वर्ष बीत गये पर लंदन-निवासियों के मस्तिष्कों म वह इस समय भी उसी प्रकार ताज़ी बनी हुई है।

महायुद्ध की प्रस्तावना

जैसा कि हम पहले कह चुके हैं योरप में अन्दर ही अन्दर एक महायुद्ध की तैयारी हो रही थी। योरप के सभी राष्ट्र अपनी सैन्य-शक्ति को अधिक दृढ़ बनाने की कोशिश कर रहे थे। इस दिशा में जर्मनी विशेषरूप से उत्सुक था। जर्मनी की महत्त्वाकांक्षा भी बहुत बड़ी थी और यदि यह कहा जाय कि वह युद्ध शुरू करने की तैयारी कर रहा था, तो अनुचित न होगा।

उस समय योरप घास-फूस के एक घर के समान था जिसमें आग लगाने के लिए दियासलाई की एक रगड़ की ही आवश्यकता थी। इसी समय एक घटना हुई जिसने सम्पूर्ण योरप को सचेत कर दिया। यह घटना योरपीय महायुद्ध की प्रस्तावना समझी जाती है।

जुलाई सन् १९११ ई० की बात है। जर्मन-जहाज़ 'पैंथर' अगाडिर के मोरक्को के बन्दरगाह में जा खड़ा हुआ। योरप के सभी राष्ट्र शंकित हो उठे और यह समझा जाने लगा कि युद्ध प्रारम्भ करने के लिए यह घटना पर्याप्त है।

बात यह थी कि उन दिनों योरप के सभी राष्ट्र अफ़्रीका में अपने अधिकारों को बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। मोरक्को, फ़्रांस को अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए दे दिया गया था। फलतः फ़्रांस ने फेज़ को एक सेना भेजी। जर्मनी ने इसे अपने लिए खतरा समझा। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उसने 'पैंथर' को अगाडिर भेजा था।

इस घटना का सबसे अधिक प्रभाव ब्रिटेन तथा फ़्रांस पर पड़ा। दोनों राष्ट्र एक दूसरे के अधिक घनिष्ठ हो गये। ब्रिटिश पार्लियामेंट में भी इसकी ज़बर्दस्त प्रतिक्रिया हुई। ब्रिटिश मंत्रिमंडल में दो दल हो गये। एक तो मार्ले के समर्थक थे जो शान्ति के उपासक थे और दूसरे लायड जार्ज के मत को माननवाले थे। लायड जार्ज रैडिकल विचारों के थे। उन्होंने अपने भाषण मे यह स्पष्ट

कर दिया कि ब्रिटेन के हितों पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप किया जायगा जिसे ब्रिटेन ऐसे राष्ट्र के लिए सहन करना असम्भव है तो इतना बड़ा मूल्य चुकाकर शान्तिरक्षा अपमानजनक होगी।

मिस्टर लायड जार्ज के इस भाषण का प्रभाव जर्मनों पर निराशा बनकर छा गया क्योंकि जर्मन-राजनीतिज्ञों को अब तक यह आशा थी कि लायड जार्ज शान्ति के उपासक हैं और वे भरसक यही प्रयत्न करेंगे कि ब्रिटेन युद्ध में प्रवेश न करे। पर उनकी इस आशा पर पानी फिर गया और उन्हे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ब्रिटेन भी युद्ध के लिए तैयार है।

मिस्टर लायड जार्ज के भाषण ने मिस्टर चर्चिल का भी ध्यान इस ओर आकर्षित किया। अब तक मिस्टर चर्चिल ब्रिटेन के गृह-सचिव थे अतएव उनका सम्बन्ध वैदेशिक मामलों से नहीं था और न वे युद्ध-विभाग से ही कोई सम्बन्ध रखते थे। ब्रिटेन की तत्कालीन वैदेशिक नीति तथा फ्रांस के साथ उसके सम्बन्ध के विषय में उन्हें अधिक जानकारी न थी। अपने विभाग के कार्यभार के आगे उन्हें अन्य विभागों के मामलों मे सम्बन्ध रखने का अवसर ही नहीं प्राप्त होता था। युद्ध-विभाग के अध्यक्ष थे मिस्टर हाल्डेन और एडमिरल्टी के थे मिस्टर मैकेना।

अगाडिर की घटना ने मिस्टर चर्चिल को सचेत कर दिया। उन्हे इस सम्बन्ध मे पूछताँछ करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। अब तक अन्तर्राष्ट्रीय विषयों से उन्होंने अपना सम्बन्ध बिलकुल ही न रखा था पर अब उन्हे उस सम्बन्ध मे अधिक जानकारी प्राप्त करने की जरूरत महसूस हुई। गृहमन्त्री के नाते उनका सैनिक तैयारी से कोई सम्बन्ध नहीं था परन्तु फिर भी उन्हे कारडाइट (cordite) के रिजर्व की रक्षा की आवश्यकता महसूस हुई। यह कार्य गृह-सचिव के ही ऊपर था। कारडाइट के रिजर्व की रक्षा कुछ पुलिस कांसटेबुलों-द्वारा की जाती थी। मिस्टर चर्चिल ने देखा कि पुलिस

की देख-भाल ही पर्याप्त नहीं हो सकती। उसकी रक्षा के लिए सैनिक प्रबन्ध की आवश्यकता है। उन्होंने एडमिरलटी को रक्षा के लिए कुछ जहाज़ भेजने को कहा, पर एडमिरलटी ने उनके साथ अधिक सहानुभूति न प्रकट की। उनकी माँग पर ध्यान न दिया गया। मिस्टर चर्चिल एडमिरल के इस व्यवहार से हताश होनेवाले न थे। उन्होंने तुरन्त ही प्रधान मंत्री के सामने अपनी माँग पेश की। प्रधान मंत्री मिस्टर ऐस्क्विथ ने परिस्थिति पर विचार किया। उन्हें चर्चिल की माँग में तथ्य जान पड़ा। अन्तर्राष्ट्रीय खतरे से तो कोई इनकार कर न सकता था। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल की माँग पूरी होगई। कारडाइट रिज़र्व की रक्षा के लिए सेना का प्रबन्ध हो गया। इस अवसर पर मिस्टर चर्चिल ने बड़ी ही दूरदर्शिता का परिचय दिया। इससे यह सिद्ध हो गया कि मिस्टर चर्चिल कितने सतर्क हैं तथा युद्ध के अवसर पर तो वे सदैव ही बहुत सतर्क रहते हैं।

अन्त में अगाडिर की समस्या जितनी खतरनाक मालूम हो रही थी उतनी सिद्ध नहीं हुई। मामला जल्द ही दब गया पर इस घटना का प्रभाव ब्रिटेन पर इतना अधिक पड़ा कि यह अनिवार्य प्रतीत होने लगा कि साम्राज्य की रक्षा के लिए पूरा प्रबन्ध करना अनिवार्य है। इधर यह भी निश्चित हो गया जर्मनी किसी भी समय युद्ध-घोषणा कर सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि मिस्टर हाल्डेन ने अगस्त के महीने में साम्राज्य-रक्षा की कमेटी की एक मीटिंग बुलाई जिसका उद्देश्य जर्मनी के आक्रमण करने पर ब्रिटेन के कर्तव्य पर विचार करना था।

मीटिंग में सबसे बड़ी बात यह ज्ञात हुई कि ब्रिटेन के युद्ध-विभाग तथा एडमिरलटी के सिद्धान्तों में भारी मतभेद है। 'समुद्र के प्रथम लार्ड' सर आर्थर विल्सन ने मीटिंग के सामने कहा कि ब्रिटेन की रक्षा के लिए सेना का दूसरे मोर्चे पर भेजना बिलकुल आवश्यक नहीं है। उनकी राय यह थी कि ब्रिटेन की नौसेना अधिक शक्ति-

शाली है अतएव स्थलसेना का प्रयोग भी नौसेना के साथ किया जाना चाहिए। नौसेना की सहायता से जर्मन-तट पर आक्रमण किया जाय। पर युद्ध-विभाग के आशानुसार ब्रिटिश सेना को फ्रांस पहुँचाने की ज़िम्मेदारी नौसेना नही ले सकती।

मिस्टर हाल्डेन ने ब्रिटेन की रक्षा के लिए जो विस्तृत योजना तैयार की थी वह एडमिरलटी के सहयोग न करने के कारण छिन्न-भिन्न हो गई। मिस्टर हाल्डेन प्रधान मंत्री ऐस्क्विथ के पुराने सहयोगियों में थे उन्होंने तुरन्त ही उन्हें एक पत्र-द्वारा एडमिरलटी की इस असहयोगी नीति से सूचित किया। इतना ही नहीं उन्होंने अपनी योजना की अनिवार्यता पर ज़ोर देते हुए प्रधान मंत्री को यह भी लिखा कि यदि उनकी माँगें स्वीकार न की जायँगी तो उन्हें अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ेगा।

मिस्टर हाल्डेन ब्रिटिश मंत्रिमंडल के प्रमुख व्यक्ति थे। लिबरल-दल के वे एक श्रेष्ठ नेता थे। ऐस्क्विथ ने दूरदर्शिता से काम लिया। उन्होंने युद्ध के खतरे के समय में हाल्डेन को मंत्रिमंडल से गँवाना उचित नहीं समझा। पर प्रश्न यह था कि आख़िर समस्या किस प्रकार सुलझाई जाय। मिस्टर हाल्डेन ने प्रधान मंत्री को जो पत्र लिखा था उसमें यह स्पष्ट रूप से लिख दिया था कि मैंने इस सम्बन्ध में पूरी तौर से विचार कर लिया है और अन्त में मैं इसी निर्णय पर पहुँचा हूँ कि सरकार के सामने यह अत्यन्त गम्भीर समस्या है। और यदि इसका निर्वाह दृढ़ता से न किया गया तो मैं पद पर नहीं रह सकता। पाँच वर्ष के अनुभव से मुझे यह ज्ञात हो गया है कि जेनरलों के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए और किस प्रकार उनसे अच्छे से अच्छा काम करा लेना चाहिए। अनुभव के कारण मैं यह समझ गया हूँ कि जिस प्रकार मैंने युद्ध-विभाग में पुनःसंगठन किया है उसी प्रकार एडमिरलटी में भी पुनःसंगठन करने के लिए मैं उपयुक्त व्यक्ति हूँ। कुछ भी हो मैं इस बात के लिए निश्चय कर चुका हूँ कि एडमिरलटी में परिवर्तन अवश्य हो।

मिस्टर हाल्डेन के इस दृढ़ निश्चय के सम्मुख सिवा उनकी बात को मानने के और कोई रास्ता न था। पर प्रधान मंत्री के सम्मुख प्रश्न यह था कि रेजीनाल्ड मैकेना के स्थान पर किसको भेजा जाय। हाल्डेन या चर्चिल यही दो व्यक्ति थे।

युद्ध के भयंकर खतरे के कारण यह सम्भव नहीं था कि वे हाल्डेन को युद्ध-विभाग से अवकाश दे सकते और यदि मिस्टर चर्चिल को नौसेना का अध्यक्ष बनाया जाय तो उनके सम्बन्ध में कई बातें विचारणीय थीं। एक तो उन्हे लिबरलपार्टी में आये हुए अभी अधिक समय न हुआ था दूसरे उनकी अवस्था तथा अनुभव भी अधिक नहीं थे। अभी वे केवल ३७ वर्ष के नवयुवक थे लेकिन मिस्टर चर्चिल की भाषणकुशलता, उनकी योग्यता और उनकी कार्यप्रणाली का प्रधान मंत्री पर काफ़ी प्रभाव पड़ा था और इसी लिए लिबरलदल को अपने इस नये सदस्य पर उतना ही विश्वास था जितना कि पुराने सदस्यों पर था।

प्रधान मंत्री मिस्टर ऐस्क्विथ उन दिनों छुट्टी पर स्काटलैंड गये हुए थे। उन्होंने मिस्टर चर्चिल और हाल्डेन दोनों को मिलने के लिए वहीं बुलाया। ऐस्क्विथ का उद्देश्य वहीं पर सारी परिस्थिति पर विचार करने का था। वे चाहते थे कि मंत्रिमंडल में कम-से-कम परिवर्तन किये जायें। मिस्टर चर्चिल को युद्ध-विभाग का कार्य सौंपा जाय और हाल्डेन को एडमिरलटी का प्रधान बनाया जाय या केवल मिस्टर चर्चिल को ही एडमिरलटी के प्रधान बनाकर मामले को समाप्त कर दिया जाय यही प्रश्न थे जिन पर विचार-विनिमय करने के लिए मिस्टर ऐस्क्विथ ने दोनों सहयोगियों को अपने पास बुलाया था।

मिस्टर ऐस्क्विथ ने चर्चिल तथा हाल्डेन से सम्पूर्ण परिस्थिति पर पूरी तरह से विचार-विनिमय किया और अन्त में यह निश्चय हुआ कि मिस्टर चर्चिल को युद्ध-विभाग में न भेजकर एडमिरलटी का

लार्ड बनाया जाय और मिस्टर हाल्डेन युद्ध-विभाग में ही बने रहें। इस निश्चय के साथ प्रधान मंत्री ने सम्राट् से भेंट की तथा उन्हें सम्पूर्ण स्थिति बताई। अन्त में मिस्टर ऐस्क्विथ ने हाल्डेन को अपने निर्णय के सम्बन्ध में जो पत्र लिखा उसमें लिखा था कि—"आपको इस बात का विश्वास होगा कि आपको एडमिरलटी में भेजने का विचार मुझे आकर्षक अवश्य जान पड़ा।...मैं यह भली प्रकार जानता हूँ कि आप मिस्टर चर्चिल को केवल अपना सहयोग ही नहीं प्रदान करेंगे बल्कि उन्हें निर्देश तथा प्रेरणा भी बराबर देते रहेंगे।"

मिस्टर चर्चिल एडमिरलटी के प्रधान बना दिये गये। उनका काम था किसी भी समय जर्मन-आक्रमण होने पर युद्ध के लिए तैयार रहना। यह घटना अक्टूबर १९११ की है और ठीक इसके तीन वर्ष बाद अगस्त १९१४ में योरपीय महायुद्ध का प्रारम्भ हुआ।

कुछ समय पूर्व मिस्टर चर्चिल ने नौसेना की वृद्धि का ज़ोरदार विरोध किया था पर इन तीन वर्षों में उनका कार्यक्रम केवल नौसेना को बढ़ाना ही था। उनका उद्देश्य कम-से-कम समय में ब्रिटिश नौसेना को अधिक-से-अधिक शक्तिशाली बनाना था। मिस्टर चर्चिल ने नवयुवक अफ़सर डेविड बीटी को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त किया। बाद में युद्ध शुरू होने पर डेविड बीटी 'बैटिल क्रूसर स्क्वेड्रन' के अध्यक्ष नियुक्त हुए थे।

बीटी का परिचय मिस्टर चर्चिल से पहले-पहल ओमडरमैन में हुआ था। उस समय मिस्टर चर्चिल लैंसर्स सेना में थे। बीटी के चरित्र तथा वीरतापूर्ण कार्यों का प्रभाव मिस्टर चर्चिल पर बहुत अधिक पड़ा और इसी लिए जब वे एडमिरलटी के प्रधान हुए तब उन्होंने डेविड बीटी को ही अपना सेक्रेटरी चुना। डेविड बीटी ने भी अपनी योग्यता का अच्छा परिचय दिया।

मिस्टर चर्चिल को एडमिरलटी के अध्यक्ष के रूप में बड़ी सफलता मिली। इतना ही नहीं, वे अपनी सेना के साथ इतना घनिष्ठ सम्बन्ध

रखते थे कि जब कभी वे पार्लियामेंट से खाली रहते तो समुद्री बंदरगाहों में ब्रिटिश नौसेना का निरीक्षण किया करते। मिस्टर चर्चिल के निकट सम्पर्क के कारण नौसेना के प्रत्येक व्यक्ति ने एडमिरलटी के पुनर्निर्माण में उसी स्फूर्ति और उत्साह से कार्य किया जिससे कि उनके अध्यक्ष मिस्टर चर्चिल कर रहे थे।

उधर जर्मनी भी अपनी नौसेना का विस्तार बड़े ज़ोरों के साथ कर रहा था। मिस्टर चर्चिल ने सन् १९१२ ई० में क्लाइडसाइड में एक भाषण देते हुए जर्मनी के इस विस्तार का विरोध करते हुए कहा था "कि ब्रिटिश नौसेना के विस्तार का उद्देश्य केवल आत्मरक्षा है। हमारा उद्देश्य किसी राष्ट्र पर आक्रमण करने का न तो कभी रहा है और न इस समय ही है। हम यह आरोप किसी अन्य बड़ी शक्ति पर भी नहीं कर रहे हैं। ब्रिटेन की नौसेना के विस्तार तथा मित्रराष्ट्र—मैं चाहता हूँ कि वह सदा मित्रराष्ट्र बना रहे—जर्मनी के नौसेना के विस्तार में यही अन्तर है। ब्रिटिश नौसेना हमारे लिए आवश्यक है और कई दृष्टिकोण से जर्मन-नौसेना उनके लिए केवल शान की चीज़ है। हमारी नौसेना पर हमारा अस्तित्व निर्भर है और हमारे लिए जो प्राणाधार तथा अस्तित्व है वह उनके लिए विस्तार है।"

मिस्टर चर्चिल के इस भाषण से जर्मनी में बड़ा क्रोध प्रकट किया गया। जर्मनी अपने नौसेना-विस्तार के सम्बन्ध में इस तरह की बात सुनने को तैयार नहीं था। पर मिस्टर चर्चिल ने जो बात कही थी वह ठीक ही थी। क़ैसर ने नौसेना का विस्तार केवल युद्ध में ब्रिटेन को पराजित करने के लिए ही किया था।

आयर्लैंड की समस्या

सन् १९१४ ब्रिटेन के लिए एक परीक्षाकाल था। युद्ध के काले बादल योरप के आकाश में छाये हुए थे। इसी समय आयर्लैंड की समस्या ने भी उग्र रूप धारण कर लिया। आयर्लैंड की आज़ादी का प्रश्न कुछ नया नहीं था। एक अरसे से आयरिश जनता अपनी आज़ादी प्राप्त करने की कोशिश कर रही थी। अनुदारदल के मंत्रिमंडल की नीति आयर्लैंड को आज़ादी देने की नहीं थी पर लिबरल-सरकार के आते ही आयरिश आन्दोलन को शक्ति प्राप्त हुई।

अन्त में आयर्लैंड की परिस्थिति इतनी गम्भीर हो गई कि गृह-युद्ध का सन्देह होने लगा। आयरिश नेता की उग्र वक्तृताओं का जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा था और वह अँगरेज़ी शासनसूत्र से अपने को अलग करने के लिए विचलित हो उठी थी। ब्रिटिश शासनसत्ता ने भी इस बात का अनुभव किया कि इस समय आयर्लैंड की समस्या अधिक जटिल हो गई है जिसे सुलझाना आवश्यक है। आयर्लैंड की आज़ादी को अधिक समय तक बाँधकर नहीं रखा जा सकता। वह स्वतंत्र होकर ही रहेगा।

इधर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति जिस गम्भीरता से भयानक संघर्ष-बिन्दु की ओर बढ़ती जा रही थी उसे देखते हुए भी यह आवश्यक हो गया था कि युद्ध की सम्भावना सच होने के पहले ही आयर्लैंड की समस्या हल कर दी जाय। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इस समस्या को सुलझाने का भरसक प्रयत्न कर रहे थे।

लिबरल-मंत्रिमंडल के सम्मुख यह एक संकटकाल था परन्तु फिर भी ऐस्क्विथ मंत्रिमंडल ने परिस्थिति को अपने अधिकार में लाने की पूरी कोशिश की, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं लिबरल-मंत्रिमंडल युद्धविरोधी मंत्रिमंडल था। ऐस्क्विथ, हाल्डेन और लायड जार्ज यह कभी नहीं चाहते थे कि आयर्लैंड गृह-युद्ध का शिकार हो, पर परिस्थिति उस

समय दूसरा रूप धारण कर रही थी और उन्हें पार्लियामेंट में अपने विचारों के विरोध का सामना करना पड़ा।

ऐस्क्विथ तथा उनकी सरकार आयर्लैंड को स्वराज्य का अधिकार देने पर तुली हुई थी। उसका यह कहना था कि आयर्लैंड की समस्या को इस समय अधिक गम्भीर बनाना कदापि उचित न होगा; पर एक दूसरा भी दल था जो इसका पक्का विरोधी था। इस दल के नेता कार्सन तथा उनके लेफ़्टीनेंट गैलोपर स्मिथ थे। यह दल आयर्लैंड में गृहयुद्ध का समर्थक था। वे आयर्लैंड की माँग पर झुकने की अपेक्षा लड़ने को तैयार थे।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह एक विचित्र परिस्थिति थी। लार्ड रैन्डोल्फ़ का यह कथन उनके सम्मुख था कि अलस्टर युद्ध करेगा और उसके लिए यही ठीक भी है।

मिस्टर चर्चिल ने अन्त में सरकार का ही समर्थन किया। आयर्लैंड की समस्या पूरी तौर से सुलझ भी न पाई थी कि युद्ध की भेरी बज उठी।

दूरदर्शिता का प्रमाण

महारानी विक्टोरिया के समय में जर्मनी और ब्रिटेन का जो मित्रभाव था वह अधिक समय तक स्थिर न रह सका। महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के पश्चात् दोनों राष्ट्र एक दूसरे के विरोधी हो गये। उस समय जर्मनी का व्यापार बराबर बढ़ रहा था अतएव जर्मनी भी चुपचाप अपने उपनिवेशों के विस्तार की योजना बना रहा था। व्यापार के लिए उसे जल-सेना की आवश्यकता थी और उसने उसे बनाना भी शुरू कर दिया। धीरे-धीरे वह अपनी नौशक्ति को इतना मज़बूत बनाने लगा कि यह अनुमान किया जाने लगा कि यदि यही दशा रही तो बहुत ही शीघ्र जर्मनी की जलसेना ब्रिटिश जलसेना से भी बढ़ जायगी। परिणाम यह हुआ कि दोनों देश एक दूसरे को शंका की दृष्टि से देखने लगे।

इतना ही नहीं, जर्मनी की इस विस्तार-नीति से योरप के सभी राष्ट्र शंकित हो गये थे और सभी अपनी-अपनी तैयारी करने लगे। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में शस्त्रीकरण की एक प्रतियोगिता-सी सम्पूर्ण योरप में चल रही थी। अभी यह होड़ पूरी भी नहीं हो पाई थी कि इसकी चिनगारियाँ सुलगने लगीं। एक साधारण-सी घटना ही युद्ध को प्रारम्भ कर देने के लिए काफ़ी थी।

२८ जून १९१४ ई० को सेराजेवो में एक ऐसी घटना घटी जिसने युद्ध की आग को एकाएक भड़का दिया। आस्ट्रिया के युवराज आर्च ड्यूक फ़्रैंज फर्डीनेंड तथा उनकी पत्नी की हत्या सेराजेवो नगर में हो गई। सेराजेवो नगर बोसेनिया की राजधानी है। आस्ट्रिया की सरकार को यह पता लगा कि युवराज की हत्या का सम्बन्ध एक सर्बियन संस्था से था जिसमें कुछ सरकारी अफ़सर भी शामिल थे। अतएव उसने सर्बिया की सरकार के पास २३ जुलाई को कड़ी शर्तें लिखकर भेजीं।

सर्बिया ने उन शर्तों को योरपीय कान्फ़्रेंस के निश्चय पर छोड़ दिया, परन्तु आस्ट्रिया जर्मनी के कहने से उन शर्तों की पूर्ण स्वीकृति पर ज़िद करने लगा।

सेराजेवो की इस घटना ने सारे योरप को शंकित कर दिया। युद्ध का होना निश्चित हो गया। सर्बिया और आस्ट्रिया के इस युद्ध का मतलब था रूस, जर्मनी, फ़्रांस और ब्रिटेन का युद्ध में संलग्न होना। ब्रिटिश मंत्रिमंडल के सम्मुख एक विकट परिस्थिति उपस्थित थी। परिस्थिति का सबसे अधिक असर पड़ता था एडमिरलटी के प्रधान मिस्टर चर्चिल तथा वैदेशिक मंत्री सर एडवर्ड ग्रे पर।

ब्रिटिश मंत्रिमंडल में दो मत थे। लार्ड मार्ले की सम्मति थी कि ब्रिटिश सरकार को अपनी तटस्थता स्पष्ट शब्दों में घोषित कर देनी चाहिए। उसे युद्ध से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रखना चाहिए और न जर्मनी पर किसी प्रकार की शर्त ही लगानी चाहिए। लार्ड मार्ले के साथी थे जान बर्न्स, सर जान साइमन, अर्ल ब्यूकैम्प और मिस्टर हाब

हाउस। लायड जार्ज और लार्ड हारकोर्ट यद्यपि मार्ले के विचारों से सहमत नहीं थे पर वे भी ब्रिटेन को युद्ध में संलग्न देखने के पक्षपाती नहीं थे। ग्रे और चर्चिल ब्रिटेन के युद्ध में प्रवेश करने के पक्षपाती थे। उनका कहना था कि ब्रिटेन को फ्रांस के साथ अपने कर्त्तव्य का पालन करना ही चाहिए। प्रधान मंत्री मिस्टर ऐस्क्विथ यद्यपि ग्रे के समर्थक थे पर प्रधान मंत्री होने के कारण किसी भी पक्ष में अपनी राय नहीं दे सकते थे उनका काम तो केवल दोनों दलों में समझौता कराना था।

मिस्टर चर्चिल सम्पूर्ण परिस्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के बाद इस निश्चय पर पहुँचे कि ब्रिटिश नौसेना का संचालन इस समय अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल के सामने दो प्रमुख काम थे। एक तो सेना के संचालन का प्रबन्ध करना, दूसरे मंत्रिमंडल को फ्रांस के प्रति ब्रिटेन के कर्त्तव्य को पालन करने के लिए मजबूर करना। पर मिस्टर चर्चिल क्षण भर के लिए भी नहीं घबड़ाये। उन्होंने सम्पूर्ण परिस्थिति को शान्ति के साथ अपने अधिकार में रखने की कोशिश की।

मिस्टर चर्चिल का उद्देश्य आगामी गर्मी की ऋतु के पहले नौसेना का प्रयोग करने का न था पर परीक्षा के लिए उन्होंने ब्रिटिश ज़ंगी जहाजों का संचालन किया। सौभाग्य से जिस समय स्पिटहेड में १७ और १८ जुलाई को ब्रिटिश नौसेना एकत्र हुई उसी समय योरप की परिस्थिति गम्भीर हो गई। मिस्टर चर्चिल तथा समुद्र के प्रथम लार्ड लुइस माउंट बैटेन ने परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए यह निश्चय किया कि ब्रिटिश जहाजों को अभी कुछ समय तक विभिन्न बन्दरगाहों में न भेजा जाय।

मिस्टर चर्चिल ने सैन्य-संचालन की माँग पर ज़ोर दिया। मंत्रियों में विचार-विनिमय अर्धरात्रि तक चलता रहा। ब्रिटिश मंत्रिमंडल के लिए वह क्षण कितना महत्वपूर्ण था। पर वे किसी ठीक निश्चय पर न पहुँच सके।

पहली अगस्त को मिस्टर चर्चिल ने एडमिरलटी को एक आदेश-द्वारा अवसर के लिए तैयार रहने को कहा। पर मंत्रिमंडल ने फिर भी आज्ञा न दी।

दूसरे ही दिन वैदेशिक-विभाग ने यह सूचित किया कि जर्मनी ने रूस के विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी है। मिस्टर चर्चिल सूचना पाते ही तुरन्त प्रधान मंत्री के पास पहुँचे। प्रधान मंत्री उस समय ग्रे, हाल्डेन और क्रू से विचार-विनिमय कर रहे थे। मिस्टर चर्चिल ने उनके सम्मुख सैन्य-संचालन के सम्बन्ध में अपनी राय प्रकट की। इतना ही नहीं उन्होंने यह बात ज़ोरों के साथ कही कि मैं इसके लिए मंत्रिमंडल के सम्मुख पूरी तरह से ज़िम्मेदार रहूँगा।

ऐस्क्विथ को इसमें कुछ कहने की गुंजाइश ही न रह गई। मिस्टर चर्चिल ने बिना सम्राट् की घोषणा तथा मंत्रिमंडल की बिना आज्ञा के ही अपने उत्तरदायित्व पर नौसेना का संचालन कर दिया।

दूसरे दिन मंत्रिमंडल ने मिस्टर चर्चिल की कार्यवाही को स्वीकार कर लिया। यद्यपि मिस्टर चर्चिल का यह काम उस अवसर के लिए अत्यन्त उपयुक्त था फिर भी यह वैधानिक नहीं था। मिस्टर चर्चिल को अपने निर्णय पर इतना अधिक विश्वास था कि उन्होंने नौसेना का संचालन अपने उत्तरदायित्व पर करने का आदेश दे दिया था।

योरप ने ब्रिटिश मंत्रिमंडल की कार्यवाही को देखा और समझ लिया कि ब्रिटेन को युद्ध में प्रवेश करने के लिए केवल कुछ घंटों की ही देर है। जर्मनी को 'अल्टीमेटम' दे दिया गया और मिस्टर चर्चिल नौसेना को युद्ध-सम्बन्धी आदेश देने में व्यस्त हो गये। युद्ध शुरू होने में कुछ घंटे ही शेष थे; यदि उस समय कोई मिस्टर चर्चिल को उनके दफ़्तर में देखता तो उसे यह ज्ञात होता कि मिस्टर चर्चिल कार्य, विश्वास तथा धैर्य की मूर्ति हैं। उनके स्थान पर यदि कोई और व्यक्ति होता तो वह बिना घबड़ाये न रहता पर मिस्टर चर्चिल के चेहरे पर क्षण

भर के लिए भी परेशानी के चिह्न दृष्टिगोचर नहीं हो रहे थे। उन्होंने परिस्थिति का सामना बड़े ही धैर्य के साथ किया।

ब्रिटिश नौसेना को फ्रेंच नौसेना के साथ सहयोग करने, इटली की तटस्थता का ध्यान रखने तथा आकस्मिक आक्रमणों से सावधान रहने के लिए मिस्टर चर्चिल ने पूरे आदेश दे रखे थे। भूमध्यसागर में गोयबेन नाम का एक जर्मन-क्रूज़र घूम रहा था। मिस्टर चर्चिल ने उसका पीछा करने के लिए ब्रिटिश लड़ाकू क्रूज़रों को नियुक्त किया पर वह जर्मन-क्रूज़र बाद में किसी प्रकार निकल भागा।

मिस्टर चर्चिल ने युद्ध की सारी तैयारी कर ली थी केवल 'अल्टीमेटम' की अवधि समाप्त होने की प्रतीक्षा की जा रही थी। अल्टीमेटम लन्दन में ११ बजे और बर्लिन में आधी रात को समाप्त होने को था। प्रधान मंत्री अपने कमरे में बैठे हुए 'अल्टीमेटम' समाप्त होने की बाट जोह रहे थे। वैदेशिक मंत्री सर एडवर्ड ग्रे बर्लिन की चुप्पी को प्रमाणित करने के लिए बैठे थे।

टन-टन-टन! कमरे की घड़ी ने ग्यारह बजाये! ब्रिटेन ने युद्ध-क्षेत्र में प्रवेश किया।

उधर दूसरे कमरे में एडमिरलटी के अध्यक्ष बैठे ११ बजने की प्रतीक्षा कर रहे थे। घड़ी ने ग्यारह बजाये कि उन्होंने तुरन्त ही अपने मातहतों को आदेश दिया—जर्मनी के विरुद्ध युद्ध शुरू कर दो!

और बस योरप के इतिहास में उस काले तथा हिंसात्मक पृष्ठ का आरम्भ हुआ जिसमें कैसर की महत्त्वाकांक्षा की बलिवेदी पर योरप ही नहीं अनेक देशों के न जाने कितने नवयुवकों को अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी।

यहाँ पर मिस्टर चर्चिल की दूरदर्शिता के सम्बन्ध में दो शब्द कह देना अनुचित न होगा। यद्यपि नौसेना का संचालन वैधानिक नहीं कहा जा सकता था परन्तु फिर भी उनके उस कार्य से ब्रिटेन को जल-युद्ध में बहुत बड़ी सफलता मिली। स्थल-युद्ध में तो शत्रु को अवसर मिल

गया था और उसमें ब्रिटिश फ़ौजों को उतनी अनुकूल स्थिति न प्राप्त हो सकी पर जल-युद्ध में चर्चिल की दूरदर्शिता ने उस अभाव की पूर्ति की।

जर्मनी की जल-सेना के एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने लिखा है कि ब्रिटेन को अपनी नौसेना के परीक्षार्थ प्रदर्शन के कारण अनुकूल परिस्थिति प्राप्त हो गई। बाद में भी ब्रिटिश नौसेना-द्वारा जो कार्य किये गये उनकी पूर्ति जर्मनी न कर सका।

मिस्टर चर्चिल की दूरदर्शिता का यह एक सबसे बड़ा प्रमाण था। आगे चलकर हम देखेंगे कि मिस्टर चर्चिल ने बड़ी ही योग्यता से सामुद्रिक युद्ध का संचालन किया। यद्यपि वे शान्तिप्रिय व्यक्ति हैं और जब तक सम्भव होता है शान्ति की रक्षा करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु जब एक बार शान्ति भंग हो गई और युद्ध शुरू हो गया तब उनका उद्देश्य पूरी तौर से विजय प्राप्त करने का होता है। अपने इस स्वभाव का उन्होंने योरप के पिछले महायुद्ध में अच्छा प्रमाण दिया था।

महायुद्ध में सैन्यसञ्चालन

यद्यपि मिस्टर चर्चिल एडमिरलटी के प्रधान थे परन्तु जब युद्ध प्रारम्भ हो गया तब उनका हृदय एक बार फिर युद्ध-क्षेत्र में पहुँचने के लिए मचल उठा। उन्हें एडमिरलटी के कार्य से भी काफ़ी अवकाश रहता था। इसी समय का उपयोग मिस्टर चर्चिल ने अपने युद्ध-प्रेम को शान्त करने के लिए किया।

मिस्टर चर्चिल ने एंटवर्प से प्रधान मंत्री के पास एक पत्र लिखा था जिससे उनकी युद्धप्रियता तथा देशभक्ति पर पूरा प्रकाश पड़ता है। उन्होंने अपने पत्र में लिखा था कि यदि सम्राट् की सरकार यह समझती है कि मैं युद्ध-क्षेत्र में सरकार की अधिक सेवा कर सकूँगा तो मैं अपने पद से इस्तीफ़ा देकर बेल्जियन सेनाओं के साथ मित्रराष्ट्र की

फौजों का यहाँ (एंटवर्प) संचालन-भार अपने ऊपर लेने को तैयार हूँ। लेकिन इसके लिए मैं अपने उपयुक्त ही पद चाहूँगा तथा यहाँ की सेना के संचालन की मुझे पूरी स्वतंत्रता रहेगी। मैं आपके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। रंसीमैन एडमिरलटी का काम अच्छी तरह सम्हाल सकते हैं।

उस समय प्रधान सेनापति लार्ड किचनर थे। उन्होंने मिस्टर चर्चिल को मेजर जनरल का पद देने को कहा, परन्तु सरकार अपने एक मंत्री को अवकाश देने पर तैयार न हुई। फलतः मिस्टर चर्चिल की इच्छा पूरी न हो सकी।

मिस्टर चर्चिल ने युद्ध प्रारम्भ हो जाने के बाद ब्रिटिश फ़ौजों के संचालन को बहुत ही सुरक्षित रूप से पूर्ण किया। ब्रिटिश जल-सेना के सम्मुख उस समय केवल दो ही काम थे भी। पहला तो ब्रिटिश फ़ौजों को सुरक्षित रूप में फ़्रांस पहुँचाना, दूसरे जर्मन-जलपोतों को ब्रिटिश फ़ौजी जहाजों के पास पहुँचने से रोकना। मिस्टर चर्चिल ने इस कार्य को इतनी योग्यता से पूर्ण किया कि एक भी ब्रिटिश सिपाही की क्षति नही हुई। साथ ही ब्रिटिश जंगी जहाज उत्तरी सागर में घूमते रहे, जिसका परिणाम यह हुआ कि एक भी जर्मन जहाज़ को इँगलिश चैनेल मे प्रवेश करने का साहस नहीं हुआ। इसके बाद ही हेलिगोलैंड की खाड़ी में ब्रिटिश जंगी जहाजों से जर्मन-नौसेना की जो मुठभेड़ हुई उससे जर्मनों को मालूम हो गया कि ब्रिटिश जंगी जहाज़ों का सामना करना कोई हँसी-खेल नहीं है। इस युद्ध में जर्मनों के तीन क्रूज़र तो जलमग्न हो गये और तीन का अंग-भंग हो गया।

गत महायुद्ध में वायुयानों का प्रयोग बहुत अधिक नहीं हुआ था। लार्ड किचनर ने मिस्टर चर्चिल से ब्रिटेन की हवाई आक्रमण से रक्षा करने की प्रार्थना की। मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया। उस समय ब्रिटेन की रक्षा के लिए वायुयान प्राप्य नही थे। कुछ वायुयान एडमिरलटी के पास डाकयार्डों की रक्षा के लिए थे

उन्हीं के द्वारा मिस्टर चर्चिल ने हवाई आक्रमण से ब्रिटेन की रक्षा करने का कार्य-भार अपने ऊपर लिया।

मिस्टर चर्चिल ने रक्षा के लिए जिस नीति का आश्रय लिया वह उन्हीं के उपयुक्त थी। वे केवल आत्मरक्षा के लिए ही उत्सुक नहीं थे बल्कि उन्होंने शत्रु के जेपलीन के अड्डे पर भी आक्रमण करना शुरू किया। इससे शत्रु को बड़ी क्षति उठानी पड़ी।

युद्ध में इतना भाग लेने से मिस्टर चर्चिल को सन्तोष न हुआ। वे चाहते थे कि वे घने युद्ध में सैन्य-संचालन करें। उन्हें ऐसा करने का अवसर भी प्राप्त हो गया। फ़्रांस में जर्मन-सेनायें जिस मार्ग से प्रवेश कर रही थीं उसके ठीक पीछे डन्कर्क का इतिहास-प्रसिद्ध स्थान था। जर्मनों की यातायात पंक्ति पूर्व से पश्चिम की ओर फैली थी। उस समय फ़्रेंच प्रधान सेनापति जाफ़्रे थे। उन्होंने ब्रिटिश सेनापति लार्ड किचनर से यह प्रार्थना की कि ब्रिटिश फ़ौज की एक टुकड़ी डन्कर्क पहुँच जाय और वहाँ से शत्रु के यातायात के साधनों पर आक्रमण करे। लार्ड किचनर ने इस काम के लिए मिस्टर चर्चिल से प्रार्थना की, उन्होंने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया।

मिस्टर चर्चिल के इस समुदाय का उद्देश्य जर्मनी को अधिक हानि पहुँचाने का न था। उसका अभिप्राय तो केवल शत्रु को परेशान करना था जिसके कारण शत्रु को आत्म-रक्षा के लिए अपनी कुछ फ़ौज इधर-उधर करनी पड़े और इस प्रकार फ़्रांस पर जर्मन-सेना का जो ज़बरदस्त दबाव पड़ रहा है वह कम हो जाय। मिस्टर चर्चिल अपने इस उद्देश्य में असफल भी नहीं हुए। उनको इस कार्य में बड़ा आनन्द आया। पहले तो मिस्टर ऐस्क्विथ ने भी इससे अपनी रुचि प्रकट की परन्तु शीघ्र ही उनकी रुचि इससे हट गई और अन्त में उन्होंने इस कार्य को बन्द कर दिया।

फिर भी इस प्रकार की सैनिक चाल का जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया। जर्मनों ने जब देखा कि ठीक उनके पृष्ठभाग में ब्रिटिश

जहाज़ बेल्जियम में डटे हुए ह तो उन्हें बड़ी चिन्ता हुई। ब्रिटेम के चार हज़ार सैनिकों का डन्कर्क पर मौजूद रहना जर्मनों के लिए बड़ी परेशानी की बात थी।

इस घटना के बाद ही ऐंटवर्प की घटना हुई जो महायुद्ध की एक प्रमुख घटना थी, तथा जिसका उल्लेख मित्रराष्ट्रों की विजय के साथ किया जाता है। परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी मिस्टर चर्चिल के लिए वह बदनामी का ही कारण हुई। मिस्टर चर्चिल के जहाँ अनेक समर्थक तथा प्रशंसक थे वहाँ उनके विरोधियों की भी संख्या कम न थी। वे लोग अवसर खोजा करते थे पर वे मिस्टर चर्चिल को राजनैतिक क्षेत्र में अपमानित करके उनकी लोकप्रियता को कम न कर सके। ऐंटवर्प की घटना के कारण विरोधियों को इस प्रकार की बदनामी करने के लिए एक अच्छा अवसर मिल गया।

अक्टूबर का महीना था। मार्ने का युद्ध हो रहा था। फ़्रेंच सेनाओं के वहाँ पैर उखड़ गये थे और वे पीछे की ओर हट रही थीं। इधर जर्मन लोग बेल्जियम से होकर फ़्रांस में प्रवेश कर रहे थे। बेल्जियम के लीज़ और नैमूर नगरों का पतन हो चुका था, केवल ऐंटवर्प का पुराना क़िला शत्रुओं का बराबर सामना कर रहा था। अन्त में जर्मन-अधिकारियों ने जब देखा कि बिना ऐंटवर्प पर विजय प्राप्त किये उनके उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो सकती तब उन्होंने यह आदेश दिया कि चाहे जिस प्रकार हो ऐंटवर्प पर विजय प्राप्त की जाय।

यद्यपि ऐंटवर्प में बेल्जियनों की सेना अधिक नहीं थी फिर भी अपनी दृढ़ स्थिति के कारण वह अब तक शत्रु को रोक सका था। परन्तु एक महान् शत्रु के ऐसे निश्चय के सम्मुख रुकने की शक्ति उसमें नहीं थी; जब बेल्जियन-सेना ने देखा कि वह शत्रु का सामना अब अधिक नहीं कर सकती तब उसने पेरिस और लन्दन से सहायता की प्रार्थना की।

ब्रिटिश सैनिक अधिकारियों ने देखा कि यदि ऐंटवर्प का पतन हो गया तो इससे ब्रिटिश सेना को भारी क्षति पहुँचने की सम्भावना

है। अक्टूबर की २ तारीख़ को मिस्टर चर्चिल एक स्पेशल ट्रेन-द्वारा लन्दन से डोवर जा रहे थे। वहाँ से उन्हें डन्कर्क जाना था परन्तु वे आधे रास्ते में भी न पहुँचे होंगे कि उनकी ट्रेन रोक ली गई और वे फिर लन्दन पहुँच गये। ब्रिटिश सेना के प्रधान लार्ड किचनर ने मिस्टर चर्चिल से ऐंटवर्प जाने का अनुरोध किया। मिस्टर चर्चिल तुरन्त ही इस कार्य के लिए तैयार हो गये।

पर प्रश्न अब यह था कि ब्रिटिश सेना ऐंटवर्प इतनी शीघ्र नहीं पहुँच सकती थी पर यदि ऐंटवर्प के बेल्जियन कुछ समय तक शत्रु का सामना और कर सकें तो अवश्य ही ब्रिटिश फ़ौज वहाँ पहुँच जायगी। मिस्टर चर्चिल ने यह सन्देश पहुँचाने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली और ट्रिनिरी हाउस के एक साधु के रूप में वे बेल्जियन हेड क्वार्टर्स में पहुँच गये।

मिस्टर चर्चिल के आगमन से बेल्जियन फ़ौज उत्साह से भर गई और युद्ध में संलग्न हो गई। इसी बीच में ब्रिटिश फ़ौज भी ऐंटवर्प पहुँच गई और मिस्टर चर्चिल की अध्यक्षता में २,००० ब्रिटिश सैनिकों ने आश्चर्यजनक वीरता दिखाई। परन्तु ऐंटवर्प का पतन न रोका जा सका। शत्रु की तीव्र गति के सम्मुख ऐंटवर्प ठहर न सका। फिर भी बेल्जियनों में उत्साह की कमी न थी। यह जानकर कि उनकी सहायता के लिए ब्रिटिश नौसेना आगई है; उनका उत्साह बढ़ गया और उन्होंने शत्रु का सामना पाँच दिन तक किया।

यद्यपि ऐंटवर्प की रक्षा न हो सकी फिर भी ब्रिटिश नौसेना की सहायता से बेल्जियम-तट तथा समुद्री बन्दरगाह सुरक्षित रह गये।

इस युद्ध में ब्रिटिश नौसेना को भारी क्षति पहुँची। लगभग ९०० सैनिक गिरफ़्तार कर लिये गये, ५० मारे गये और १३० घायल हुए। दो सेनाओं ने डच सीमा को पार किया जिसके फलस्वरूप वे रोक ली गईं।

ऐंटवर्प के पतन के कारण मिस्टर चर्चिल की बड़ी बदनामी हुई। अनुदारदल के वक्ताओं ने उनको अनुभवहीन बताया पर यदि सच

पूछा जाय तो मिस्टर चर्चिल के जीवन की सबसे बड़ी सफलता ऐंटवर्प की ही घटना है। मिस्टर चर्चिल ने ऐंटवर्प में जो कुछ किया उसका मूल्य लोगों को बाद को ज्ञात हुआ तथा इतिहासकारों ने उनके इस कार्य की बड़ी प्रशंसा की।

युद्ध के इन वर्षों में मिस्टर चर्चिल ने केवल एक योग्य सैनिक की ही भाँति कार्य नहीं किया बल्कि उनके उर्वर मस्तिष्क ने, सेना के लिए और भी कई उपयोगी कार्य किये। सेना में उस समय आज की भाँति टैंकों का प्रचलन नहीं था। मिस्टर चर्चिल ने ऐसी मोटरकारें बनवाईं जो सशस्त्र थीं। इस प्रकार टैंकों के निर्माण की बात को सोचनेवालों में चर्चिल का स्थान प्रमुख है।

महायुद्ध ने यह प्रकट कर दिया कि मिस्टर चर्चिल एक धैर्यवान् मंत्री हैं। उन्होंने युद्ध के दिनों में अपने ऊपर रखे गये कर्त्तव्य के भार को जिस योग्यता से वहन किया है वह उनके ही उपयुक्त था। यद्यपि उन्हें विरोधियों का विरोध बराबर सहन करना पड़ा फिर भी वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए। उनकी दूरदर्शिता ने सदैव अन्त में उन्हें विजयी बनाया है।

युवक और वृद्ध का सहयोग

मिस्टर चर्चिल को जीवन में जिस प्रकार पद-पद पर सफलता मिली है उसी प्रकार उन्हें विपक्षियों का विरोध भी सहन करना पड़ा है। मिस्टर चर्चिल और मिस्टर लायड जार्ज लिबरलदल के प्रमुख वक्ताओं में से थे जो अनुदारदल के सदस्यों को ताने, व्यंग्य और कटु आलोचनाओं-द्वारा सदैव परेशान किया करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि मिस्टर चर्चिल की साधारण-सी भूल को भी विरोधी जनता के सम्मुख बहुत अधिक बनाकर रखते थे।

जबसे मिस्टर चर्चिल ने मंत्रिमंडल में प्रवेश किया तभी से उन्हें विरोधियों की कटु आलोचनाओं का सामना करना पड़ा परन्तु वे कभी उनसे विचलित नहीं हुए। मिस्टर चर्चिल के चरित्र की यही विशेषता है।

युद्ध के सम्बन्ध में भी मिस्टर चर्चिल पर आक्षेप करने के लिए विपक्षियों ने अवसर खोज निकाले। एँटवर्प की घटना को लेकर उनका काफ़ी विरोध किया गया। विरोधियों ने नौसेना के सैनिकों की मृत्यु की ज़िम्मेदारी भी मिस्टर चर्चिल पर ही मढ़ दी। उस घटना की चर्चा कम भी न होने पाई थी कि शत्रु की कार्यवाही के कारण तीन ब्रिटिश क्रूज़र जलमग्न हो गये।

बस फिर क्या था, विपक्षियों को आलोचना करने के लिए एक अच्छा अवसर मिल गया। उन्होंने मिस्टर चर्चिल पर यह दोष लगाया कि उन्हीं की अनुभवहीनता के कारण वे ब्रिटिश क्रूज़र जलमग्न हो गये।

यदि मिस्टर चर्चिल चाहते तो अपने ऊपर लगाये गये इस आरोप का खण्डन आसानी से कर सकते परन्तु उन्होंने उस रास्ते को नहीं चुना क्योंकि उससे यद्यपि उनकी परिस्थिति निरापद हो जाती पर उससे उनके राष्ट्र का बड़ा अहित होता। मिस्टर चर्चिल को अपनी राजनैतिक ख्याति की अपेक्षा राष्ट्र के हितों की रक्षा अधिक आवश्यक जान पड़ी और उन्होंने अपनी सफ़ाई नहीं दी।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं मिस्टर चर्चिल ब्रिटिश क्रूज़रों के डूबने के लिए ज़िम्मेदार नहीं थे। क्योंकि वे समुद्र में पेट्रोल बन्द करने के लिए पहले ही आदेश दे चुके थे, परन्तु उनके उस आदेश को पहुँचाने में अनावश्यक देरी की गई जिसका परिणाम यह हुआ कि उन ब्रिटिश क्रूज़रों को समय पर चेतावनी न मिली और वे शत्रु की कार्यवाही के शिकार हो गये।

मिस्टर चर्चिल के विरोधियों को इतने से ही शान्ति नहीं मिली। उनकी राजनैतिक ख्याति को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से विरोधियों ने अपने राष्ट्र के हित की भी चिन्ता न की। युद्ध शुरू होने के

समय समुद्र के प्रथम लार्ड बैटेनबर्ग के राजकुमार लुइस थे। इनका जन्म जर्मनी में हुआ था। यद्यपि प्रिंस लुइस ने नौसेना के लिए बहुत कुछ किया पर चर्चिल के विरोधियों को इससे शान्ति न मिली। उन्होंने प्रिंस लुइस के जन्म की कहानी को लेकर प्रचार करना शुरू कर दिया। राजकुमार लुइस सीधे सादे व्यक्ति थे। उन्हें यह बात सहन न हुई और अन्त में बहुत परेशान होकर उन्होंने अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया।

राजकुमार लुइस का इस्तीफ़ा मिस्टर चर्चिल के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ क्योंकि उन्होंने तुरन्त ही उस पद पर लार्ड फ़िशर को नियुक्त किया। लार्ड फ़िशर की अवस्था इस समय ७४ वर्ष की थी फिर भी उनमें एक युवक का-सा साहस और शक्ति थी। मिस्टर चर्चिल के वे पुराने मित्र थे और यह भी कहा जाता है कि मिस्टर चर्चिल को एडमिरलटी के सुधार में लार्ड फ़िशर से सदैव सहायता मिलती थी।

लार्ड फ़िशर बड़े ही क्रान्तिकारी विचारों के थे, इसी कारण उन्हें एक बार पहले भी एक वर्ष बाद इस पद से अलग होना पड़ा था। मिस्टर चर्चिल के इस निर्णय को खतरनाक बताया गया। परन्तु उन्होंने उस खतरे को उठाना अच्छा समझा। अन्त में उन्होंने लार्ड फ़िशर की नियुक्ति कर दी। लार्ड फ़िशर ने मिस्टर चर्चिल की पूरी सहायता की। युद्ध के दिनों में भी ब्रिटिश नौसेना में दोनों व्यक्तियों ने अनेक प्रकार के परिवर्तन कर दिये। लार्ड फ़िशर तो ऐसा अवसर चाहते ही थे, उन्होंने अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर चर्चिल के मंत्रिमंडल को यश प्राप्त करा दिया। लार्ड फ़िशर की नियुक्ति किसी भी मंत्रिमंडल के लिए एक साहसपूर्ण कार्य था और चर्चिल को साहसपूर्ण कार्यों से एक प्रकार का प्रेम था। यही कारण है कि उन्होंने चारों ओर से विरोध होते हुए भी लार्ड फ़िशर को नौसेना का प्रथम लार्ड नियुक्त किया था।

लार्ड फ़िशर के अतिरिक्त भी अनेक व्यक्ति उस समय ऐसे थे जो इस पद के उपयुक्त थे और यदि उन्हें नियुक्त किया जाता तो

वे मिस्टर चर्चिल के शासन को लार्ड फ़िशर की अपेक्षा कम योग्यता से न चलाते पर इससे क्या होता। मिस्टर चर्चिल को तो एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उनके शासन को पूर्णरूप से सफल बनाने के साथ ही साथ अपनी नियुक्ति के कारण मिस्टर चर्चिल के शासन को ख्याति भी प्राप्त करा सके। इस काम के लिए कोई भी व्यक्ति लार्ड फ़िशर से अधिक उपयुक्त नहीं हो सकता था क्योंकि जिन दिनों वे इस पद पर थे उनकी विस्फोटक प्रवृत्तियों को लेकर देश में विवाद उठ खड़ा हुआ था। यद्यपि समय की गति में पड़कर वह विवाद अब एक प्रकार से शान्त हो गया था पर लार्ड फ़िशर को लोग भूले न थे और उनकी नियुक्ति होते ही लोगों का ध्यान उधर फिर आकर्षित हो गया।

लार्ड फ़िशर ने अपना उद्देश्य लेकर अपने पद को ग्रहण किया पर इधर मिस्टर चर्चिल के पास भी एक संदेश था, एक उद्देश्य था। ये दो महान् व्यक्ति अपने-अपने उद्देश्यों को लेकर एक ही पथ पर साथ-साथ चल पड़े। मिस्टर चर्चिल को जैसी आशा थी लार्ड फ़िशर ने उनके साथ उसी प्रकार का सहयोग किया। दोनों व्यक्तियों ने ब्रिटिश नौसेना में नया जीवन भर दिया। उनमें से एक प्रत्येक समय सेना की देख-रेख के लिए तैयार रहता।

प्रारम्भ में मिस्टर चर्चिल की राजनीति में लार्ड फ़िशर का खपना कठिन-सा प्रतीत हुआ पर शीघ्र ही दोनों व्यक्तियों ने यह निश्चय किया कि वे कोई भी काम बिना एक-दूसरे से पूछे न करेंगे। परिणाम यह हुआ कि उनका सहयोग सफलतापूर्वक चलता रहा। यहाँ तक कि लार्ड फ़िशर सुबह जल्दी उठते थे इसलिए दिन भर काम करते-करते शाम को उनकी शक्ति क्षीण हो जाती थी। उस समय वे अधिक काम न कर सकते थे। मिस्टर चर्चिल ने अपनी दिनचर्या बदल दी जिससे शाम के पहले ही वे लार्ड फ़िशर को अवकाश दे देते थे। इस प्रकार युद्ध की भयंकर ज्वाला के बीच चर्चिल और फ़िशर-द्वारा संचालित ब्रिटिश नौसेना आगे बढ़ने लगी।

संकट के बीच

जहाँ लार्ड फ़िशर का नौसेना के अध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया जाना कई दृष्टि से मिस्टर चर्चिल ने अच्छा किया वहाँ उन्हीं के कारण उनको अपने पद से इस्तीफ़ा भी देना पड़ा। इस कार्य में लार्ड फ़िशर का कहाँ तक हाथ था यह बताने के लिये यह स्थान उपयुक्त नहीं है फिर भी हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि लार्ड फ़िशर ने उसी व्यक्ति के साथ अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया जिसने उन्हें उस पद पर फिर से नियुक्त किया, जिससे उन्हें एक बार हटना पड़ा था। परन्तु राजनीति में स्वार्थ की वेदी पर बहुत कुछ हो जाता है और कुछ इतिहासकारों के कथनानुसार लार्ड फ़िशर ने भी स्वार्थवश ही यह सब किया। पद पर नियुक्त होने के बाद उन्होंने कुछ दिनों तक तो मिस्टर चर्चिल का पूरी तौर से सहयोग किया परन्तु उसके बाद उन्होंने गुपचुप रीति से अनुदारदल में अपना विश्वास जमाना प्रारम्भ किया। उनको यह आशा थी कि मिस्टर चर्चिल के बाद वे स्वयं उस पद को प्राप्त कर सकेंगे इसी लिए उन्होंने अपने पद से एक ऐसे समय में इस्तीफ़ा दिया जब कि मिस्टर चर्चिल असहाय-से हो उठे। यह सब हम आगे चलकर देखेंगे। त्यागपत्र देने के पश्चात् अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का उत्तर देने के लिए मिस्टर चर्चिल ने हाउस आफ़ कामंस के सम्मुख जो भाषण दिया था उसमें जहाँ यह स्पष्ट किया कि जो कुछ भी उन्होंने किया वह सभी समुद्र के लार्ड फ़िशर के सहयोग से ही किया गया है, अतएव उसकी ज़िम्मेदारी केवल उन्हीं पर नहीं है, वहाँ लार्ड फ़िशर की योग्यता की प्रशंसा भी उन्होंने खूब की। उन्होंने कहा कि लार्ड फिशर को नियुक्त करने का उन्हें खेद नहीं है क्योंकि जो कुछ ब्रिटिश नौसेना की उन्नति हो सकी है उस सबका श्रेय लार्ड फ़िशर को ही है। लार्ड फ़िशर ने अनेक प्रकार के नये ढंग के जहाज़ बनवाये तथा हर प्रकार से ब्रिटिश नौसेना की उन्नति की।

मिस्टर चर्चिल के उस भाषण की बड़ी प्रशंसा हुई। साथ ही उनकी विशालहृदयता भी कुछ कम न थी। जिस व्यक्ति के विश्वास पर वे एडमिरलटी की राजनीति के बाहर की राजनीति को भूल बैठे थे, उसी ने उनके साथ विश्वासघात किया; फिर भी मिस्टर चर्चिल ने उसकी प्रशंसा ही की। यह है उस विशाल-हृदय राजनीतिज्ञ का स्वभाव !

जिस घटना को लेकर मिस्टर चर्चिल को इस्तीफ़ा देना पड़ा वह था दर्रेदानियाल का आक्रमण। गत योरपीय युद्ध में टर्की जर्मनी के साथ था। जब पश्चिमी मोर्चे का युद्ध खाइयों के युद्ध में परिवर्तित होकर रुक गया और बहुत समय के पश्चात् भी युद्ध में विजय प्राप्त करना असम्भव-सा जान पड़ने लगा तब सेना के अध्यक्षों ने यह सोचा कि कोई ऐसा उपाय खोजा जाना चाहिए जिससे युद्ध का रुख बदला जा सके। यह कार्य तभी हो सकता था जब शत्रु यह अनुभव करे कि ब्रिटिश-सेना का उसके किसी ऐसे अंग पर दबाव पड़ रहा है जिसको रोकना आवश्यक है। युद्ध-समिति में इसी प्रश्न को लेकर विचार होने लगा।

परन्तु उस समय की युद्ध-समिति ऐसी नहीं थी कि जिसमें मतैक्य होता। युद्ध-समिति के प्रत्येक सदस्य की एक राय थी और वह दूसरे से मेल नहीं खाती थी। युद्ध-समिति की बैठक में हर सदस्य ने इस सम्बन्ध में अपनी एक तजवीज़ पेश की। मिस्टर चर्चिल की तजवीज़ यह थी कि दर्रेदानियाल की राह से टर्की पर आक्रमण किया जाय। दुर्भाग्यवश उनका कोई समर्थक नहीं था। लार्ड फ़िशर भी उनके समर्थक नहीं थे। उनकी राय बाल्टिक में आक्रमण करने की थी।

इसी प्रकार प्रत्येक सदस्य की कुछ न कुछ राय थी। हर प्रस्ताव का उद्देश्य यही था कि कम से कम व्यक्तियों की मृत्यु-द्वारा शत्रु को अधिक से अधिक भयभीत किया जा सके। अन्त में कुछ निर्णय

न हो सका क्योंकि इस प्रकार की किसी तजवीज़ के लिए यह आवश्यक था कि पश्चिमी मोर्चे से कुछ फ़ौज आक्रमण करने के लिए भेजी जाय और यह बात असम्भव थी। क्योंकि पश्चिमी मोर्चे पर से सेना नहीं हटाई जा सकती थी अतएव यह न हो सका।

इसी समय जनवरी सन् १९१५ में ग्रैंड ड्यूक आफ़ निकोलस ने तुर्कों के विरुद्ध कुछ थोड़ा सैनिक प्रदर्शन करने का अनुरोध किया। इस प्रकार दर्रेदानियालवाली तजवीज़ को फिर शक्ति मिली। अन्त में यह निश्चय हुआ कि तुर्कों के क़िलों पर ब्रिटिश नौसेना-द्वारा बमबाजी की जाय। योजना तैयार हुई, लार्ड फ़िशर ने उसे स्वीकार किया।

ग्रैंड फ्लीट के प्रधान सेनापति ने जब यह सुना कि उनका बेड़ा भूमध्यसागर को भेजा जायगा तब उन्हें तुरन्त ही अपनी सैनिक शक्ति के सम्बन्ध में चिन्ता हुई।

लार्ड फ़िशर तो जैसे यह अवसर खोज ही रहे थे। उन्होंने तुरन्त ही इस प्रस्ताव का विरोध किया। युद्ध-समिति के विवाद से वे उठकर अलग जा खड़े हुए। किचनर भी उनके पीछे-पीछे गये। बड़ी देर तक दोनों व्यक्तियों में बातें होती रहीं। अन्त में लार्ड फ़िशर ने इस्तीफ़ा देने की धमकी दी। किचनर ने तुरन्त ही उन्हे उत्तर दिया कि इस समय पदत्याग करने की अपेक्षा उनका कर्त्तव्य अपने पद पर बने रहना है। किसी प्रकार लार्ड फ़िशर को अपने पद पर बने रहने के लिए राज़ी किया गया।

अन्त में युद्ध-समिति के कठिन संघर्ष से निकलने के बाद भी यह प्रस्ताव अधिक समय तक न चल सका। जिस कमांडर के ऊपर आक्रमण का कार्य था उसके कुछ जहाज़ शत्रु की जल-सुरंगों के कारण डूब गये इसलिए उसके इस आक्रमण के प्रयत्न को रोक देने की राय दी। एडमिरल का केबुल पढ़कर मिस्टर चर्चिल को बड़ी निराशा हुई पर उनका यह विश्वास था कि इस समय दर्रेदानियाल पर आक्र-

मण करना बहुत ही आवश्यक है। इसलिए उन्होंने एडमिरल को एक लिखित आदेश आगे बढ़ने के लिए भेजा पर उनका यह आदेश भेजा न गया क्योंकि एडमिरलटी के बोर्ड में उनकी इस राय के समर्थक नहीं थे।

मिस्टर चर्चिल ने प्रधानमंत्री से भी इस सम्बन्ध में प्रार्थना की क्योंकि स्वयं वे एडमिरलटी बोर्ड की इच्छा के विपरीत कुछ कर न सकते थे और बोर्ड में एक जूनियर सदस्य के अतिरिक्त उनका कोई समर्थक नहीं था। इस प्रकार दर्रेदानियाल के आक्रमण का अंत हो गया। पर यह प्रश्न था युद्ध-समिति की प्रतिष्ठा का। किचनर ने स्थल-सेना-द्वारा उस कार्य को करने का निश्चय किया जिसे ब्रिटिश नौसेना नहीं कर सकी थी। स्थल-सेना को शत्रु का बुरी तरह सामना करना पड़ा तथा बहुत अधिक हानि उठानी पड़ी। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल के सम्मुख एक विकट समस्या खड़ी हो गई। वे यह न निश्चय कर सके कि इस समय क्या करना चाहिए। फिर भी मिस्टर चर्चिल ने शान्ति से काम लिया और यदि युद्ध-समिति ने उनका सहयोग किया होता और काफ़ी सेना भेजी गई होती तो कुछ न कुछ तो विजय अवश्य ही प्राप्त हो गई होती।

इधर मिस्टर चर्चिल के विरुद्ध और भी जाल बुने जा रहे थे। अनुदारदल उनका पक्का विरोधी था ही। अब युद्ध में जो कुछ भी ब्रिटेन को हानि उठानी पड़ी थी सभी की ज़िम्मेदारी मिस्टर चर्चिल के सिर मढ़ दी गई थी। पर वे अपने काम में इतने संलग्न थे कि उन्हें इस सम्बन्ध में अधिक कुछ विचार करने का अवसर ही न मिलता था। बल्कि यह कहना चाहिए कि उनकी सम्पूर्ण राजनीति केवल एडमिरलटी तक ही सीमित थी और उसके बाहर की राजनीति का उन्हें पता भी न था।

अन्त में ५ मई १९१५ ई० को संकटपूर्ण स्थिति अपनी चरमसीमा पर पहुँच गई। शनिवार का सुन्दर प्रातःकाल था। मिस्टर चर्चिल वैदेशिक

विभाग से एडमिरलटी की ओर वापस आ रहे थे, उसी समय उनके सेक्रेटरी से उनकी भेंट हुई। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उसने मिलते ही मिस्टर चर्चिल से कहा—फ़िशर ने तो इस्तीफ़ा दे दिया और मेरे विचार से इस बार वे इस्तीफ़ा वापस भी न लेंगे।

बात किसी हद तक ठीक थी क्योंकि लार्ड फ़िशर ने अपने पद से इस्तीफ़ा तो दे ही दिया था साथ ही वे ग़ायब भी हो गये थे। उन्होंने अपने इस्तीफ़े का समाचार सबसे पहले लायड जार्ज को सुनाया और कहा कि वे तुरन्त ही स्काटलैंड के लिए रवाना हो रहे हैं। लायड जार्ज ने उन्हें बहुत समझाया और कहा कि कम से कम वे प्रधान-मंत्री से भेंट तो कर लें। ऐस्क्विथ बुलाये गये। लाख तरह से लार्ड फ़िशर को समझाया गया पर वे राजी न हुए। यद्यपि लार्ड फ़िशर के इस्तीफ़े का कारण ऐसा कुछ अधिक महत्त्व का न था पर उन्होंने उसी अवसर पर इस्तीफ़ा देना निश्चित कर लिया था। यह अत्यन्त संकटपूर्ण स्थिति थी जिसका सामना मिस्टर चर्चिल को करना था।

मिस्टर चर्चिल ने अपने पुराने मित्र को बहुत समझाया-बुझाया, अपनी मित्रता की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया पर ७४ वर्ष का बूढ़ा वज्र-सा कठोर बना रहा। मिस्टर चर्चिल के सारे प्रयत्न असफल रहे। इधर युद्ध की विकट परिस्थिति और उधर नौसेना के अध्यक्ष का इस्तीफ़ा। मिस्टर चर्चिल की परिस्थिति बड़ी संकटपूर्ण हो गई पर उन्होंने साहस से काम लिया। संकट के समय साहस से कार्य लेना यही मिस्टर चर्चिल के जीवन की विशेषता है।

पदत्याग

सप्ताह के अन्त में मिस्टर चर्चिल ने नये एडमिरलटी बोर्ड का निर्माण करने का प्रबन्ध किया। सोमवार को पार्लियामेंट का अधिवेशन होने जा रहा था। मिस्टर चर्चिल ने रविवार को ऐस्क्विथ के साथ भोजन किया और दूसरे दिन एडमिरलटी बोर्ड के सदस्यों के नाम की सूची जेब में रखकर हाउस आफ़ कामंस में प्रवेश किया। लेकिन वहाँ तो कुछ और ही होने जा रहा था। फ़िशर ने अपना काम धीरे-धीरे बहुत दृढ़ कर लिया था। चर्चिल के विरुद्ध वातावरण तैयार हो गया था। अनुदारदल वालों को यह विश्वास हो गया था कि युद्ध में ब्रिटिश फ़ौजों की जो कुछ भी हार हुई या उन्हें क्षति उठानी पड़ी है उस सबकी ज़िम्मेदारी एकमात्र चर्चिल पर है।

मिस्टर चर्चिल जैसे ही हाउस की बैठक में पहुँचे वैसे ही उन्हें प्रधान-मंत्री ने बताया कि फ़िशर के इस्तीफ़े ने राजनैतिक विकट परिस्थिति उपस्थित कर दी है। फ़िशर ने इसी अवसर को देखकर अपना इस्तीफ़ा दिया था। अनुदारदल के दबाव के कारण संयुक्त मंत्रिमंडल की स्थापना होने जा रही थी। ऐस्क्विथ ने मिस्टर चर्चिल को यह भी बताया कि एडमिरलटी में उनके स्थान पर कोई दूसरा व्यक्ति रखा जायगा।

मिस्टर चर्चिल को यह सब जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्हें यह भी पता नहीं था कि राजनैतिक क्षेत्र में क्या हो रहा है। एडमिरलटी के कामों में वे इतने अधिक व्यस्त हो गये थे कि उन्हे इतने बड़े राज-नैतिक परिवर्तन का भी पता समय पर लग न सका। उन्हें विश्वास था कि इस प्रकार की परिस्थिति पहले तो पैदा ही नहीं हो सकती और यदि होगी भी तो उनके कोई न कोई मित्र उन्हें अवश्य ही समय पर बता देंगे। पर मिस्टर चर्चिल का यह विश्वास मिथ्या सिद्ध हुआ। वह स्थिति भी आगई और मिस्टर चर्चिल के किसी मित्र ने

उन्हें पहले से इस सम्बन्ध में बताया भी नहीं। लार्ड फ़िशर ने अनुदारदल में अपना विश्वास जमा लिया था और मिस्टर चर्चिल पर से उनका विश्वास उठ गया था। वे तो यह सोचने लगे थे कि यदि फ़िशर उस पद पर न होता तो न जाने क्या हो जाता।

कामंस में अनुदारदल के नेता बोनर लॉ थे। उन्हें चर्चिल पर अपने सहयोगियों के इस अविश्वास का पता था। इतना ही नहीं, उनका स्वयं का भी यह विश्वास था कि मिस्टर चर्चिल बड़े वक्ता हैं, उनकी योग्यता में संदेह नहीं फिर भी वे शासन करने के उपयुक्त यवित नहीं हैं। जिस समय उन्होंने यह सुना कि लार्ड फ़िशर ने अपने पद पर से इस्तीफ़ा दे दिया है उसी समय वे सीधे लायड जार्ज के पास पहुँचे और स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि अब तक अनुदारदल ने जिस राजनैतिक शान्ति की रक्षा की है उसकी रक्षा वह और आगे न कर सकेगा।

मिस्टर लायड जार्ज ने बोनर लॉ की बातें सुनीं, परिस्थिति पर क्षण भर विचार किया और अन्त में तुरन्त ही दोनों नेताओं ने परस्पर वार्तालाप-द्वारा संयुक्त मंत्रिमंडल स्थापित करने का निश्चय किया। तुरन्त ही दोनों व्यक्ति प्रधान मंत्री ऐस्क्विथ के पास पहुँचे और ऐस्क्विथ मंत्रिमंडल में अनुदारदल के भी कुछ व्यक्तियों को ले लेने की बातें चलने लगीं।

राजनैतिक संकट जब इस परिस्थिति को पहुँच चुका था तब मिस्टर चर्चिल ने कामंस सभा में प्रवेश किया। उन्हें इन सब बातों का कुछ भी पता नहीं था जिस समय यह उन्हें बताया गया वे कुछ भी न कर सके। यह भी अनुरोध न कर सके कि उनके स्थान पर किसे एडमिरलटी का प्रधान बनाया जा सकता है।

इतना सब होते हुए भी मिस्टर चर्चिल को अपने काम पर विश्वास था। वे कुछ ठीक तौर पर निश्चय भी न कर सके थे कि

उन्हें समाचार मिला कि एडमिरलटी के दफ़्तर में बहुत शीघ्र आवश्यकता है। तुरन्त ही वे अपने कमरे में जा पहुँचे।

वहाँ जाकर उन्हें मालूम हुआ कि जर्मन जहाज़ी बेड़ा एकत्र होकर बाहर निकल रहा है और वह ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े पर आक्रमण करेगा। मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही तमाम ब्रिटिश जलसेना के पास आदेश भेजने शुरू कर दिये कि वह बन्दरगाहों से निकलकर समुद्र में शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करे। उस समय वे अपने कर्त्तव्य-पालन में इतने दत्तचित्त थे कि उन्हे इसका ध्यान भी नहीं रह गया था कि अभी कुछ समय पूर्व ही उन्हे मंत्रिमंडल की संकटपूर्ण स्थिति का ज्ञान हुआ था और बहुत कुछ सम्भव है कि कल प्रातः वे इस पद पर न रह जायँ।

मिस्टर चर्चिल के चरित्र की यही विशेषता है कि वे किसी भी स्थिति में अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं नष्ट होने देते। यद्यपि जिस समय जर्मन आक्रमण का समाचार उन्हें मिला उस समय समुद्र का प्रथम लार्ड कोई नहीं था। लार्ड फ़िशर के स्थान पर किसी अन्य व्यक्ति की नियुक्ति अभी नहीं हो सकी थी। ऐसी दशा में मिस्टर चर्चिल ने जो कुछ किया वह अत्यन्त ज़िम्मेदारी का कार्य था।

मंत्रिमंडल की ओर से मिस्टर चर्चिल से इस्तीफ़ा देने के लिए अनुरोध किया गया। उन्होंने तुरन्त ही अपना इस्तीफ़ा लिखकर भेज दिया और साथ ही यह भी लिख दिया कि यदि अन्य पद उन्हें दिया जायगा तो वे उसे हर्ष से स्वीकार करेंगे; पर हो वह सेना-सम्बन्धी ही।

यह सब कर चुकने के पश्चात् मिस्टर चर्चिल ने अवकाश ग्रहण किया पर फिर भी उनकी आशा की ज्योति मन्द न पड़ी थी। उन्हें आशा थी कि यदि जर्मन जहाज़ी बेड़े की ब्रिटिश बेड़े से मुठभेड़ हो गई तो यह निश्चित है कि ब्रिटिश बेड़ा विजयी होगा और उस दशा में सुबह होते ही उनका त्यागपत्र व्यर्थ हो जायगा। उस पर

विचार करने का प्रश्न ही न पैदा होगा। और वे अपने पद पर उसी प्रकार बने रहेंगे।

यदि ऐसा ही हुआ होता, जैसा कि मिस्टर चर्चिल ने सोचा था, तो ब्रिटिश नौसेना ने युद्ध-क्षेत्र में बड़े-बड़े कार्य कर दिखाये होते। पर यह न हुआ। मिस्टर चर्चिल ने अपने भाग्य के बल पर अनेक बार परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की थी पर इस बार उन्हें विजय न प्राप्त हो सकी। इस बार परिस्थिति और भाग्य दोनों ने ही उन्हें धोखा दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल उनका सोचा हुआ न हुआ। जर्मन जहाजी बेड़े ने आक्रमण न किया। वह बाहर अवश्य निकला पर शीघ्र ही फिर अपने स्थान पर चला गया। चर्चिल का सोचा हुआ संघर्ष न हो सका। इस प्रकार उनकी रही-सही आशा पर भी पानी फिर गया। ब्रिटिश नौसेना जिस प्रकार आक्रमण का सामना करने के लिए जोश के साथ गई थी उसी प्रकार निराशा के साथ फिर अपने स्थान पर वापस आगई।

जहाँ तक मिस्टर चर्चिल का सम्बन्ध था, मंत्रिमंडल का संकट टल गया। अनुदारदल इस बात पर किसी प्रकार तैयार नहीं हो रहा था कि मिस्टर चर्चिल एडमिरलटी के अध्यक्ष बने रहें। किसी भी कोने से उन्हें तनिक-सा भी समर्थन तथा संपोषण भी नहीं प्राप्त हो रहा था। उनके साथी लिबरल-नेता तो उनकी सहायता कर ही नहीं सकते थे क्योंकि उनमें से हर एक को अपनी ही पड़ी थी फिर भला वे मिस्टर चर्चिल की क्या सहायता करते। प्रधान मंत्री ऐस्क्विथ ने उन्हें उस पद पर रखने के लिए अधिक प्रयत्न न किया। अन्त में मिस्टर चर्चिल ने बालफ़ोर से अपने लिए प्रयत्न करने को कहा। यद्यपि बालफ़ोर स्वयं अपने लिए चिन्तित थे फिर भी उन्होंने चर्चिल के लिए प्रस्ताव किया। बालफ़ोर के उस प्रस्ताव का स्वागत जिस प्रकार हुआ उससे मिस्टर चर्चिल की रही-सही आशा भी नष्ट हो गई। बेचारे बालफ़ोर को भी कटु आलोचना का शिकार होना पड़ा।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह समय अत्यन्त संकट का था। जहाँ से जो कुछ थोड़ा-बहुत समर्थन तथा सहानुभूति उन्हें प्राप्त हो रही थी वही उनके लिए बहुमूल्य थी। ऐसे समय में उन्हें ज्ञात हुआ कि जिनसे सहयोग तथा समर्थन की उन्हें आशा थी उनसे समर्थन न मिलकर उन्हें ऐसे व्यक्तियों से समर्थन प्राप्त हुआ है जिनका उनसे परिचय भी न था। उस समय 'डेली एक्सप्रेस' के मालिक मैक्स ऐटकिन ने उनका पक्ष लेकर बहुत कोशिश की। उनकी दृष्टि में एडमिरलटी के लिए सबसे योग्य व्यक्ति केवल चर्चिल ही थे। उन्होंने अनुदारदल के नेता बोनर लॉ पर इस बात के लिए बहुत दवाव डाला कि मिस्टर चर्चिल को मंत्रिमंडल में रख लिया जाय। पर बोनर लाँ इस पर किसी प्रकार भी राज़ी न हुए। कारण यह था कि वे जानते थे कि अनुदारदल मे मिस्टर चर्चिल के प्रति अविश्वास घर कर गया है और यदि उनको मंत्रिमंडल में रखने का प्रयत्न किया गया तो उसका परिणाम अच्छा न होगा। और सम्पूर्ण मंत्रिमंडल भंग हो जायगा। जो परिस्थिति उस समय थी उसे देखते हुए मंत्रिमंडल का भंग होना कदापि हितकर नहीं हो सकता था। यही कारण था कि बोनर लाँ ने मैक्स ऐटकिन की राय को नही स्वीकार किया। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल मंत्रिमंडल से बिदा हो गये।

मैक्स ऐटकिन ने गाढ़े समय में चर्चिल की जो सहायता की उसे वे कभी नहीं भूल सके। सदैव ही मिस्टर चर्चिल ने उनके उस उपकार का बदला देने का प्रयत्न किया। बाद में जब उन्होंने स्वयं मंत्रिमंडल का निर्माण किया तब मैक्स ऐटकिन को, जो अब लार्ड बीवरब्रुक हो गये हैं, वायुयान-उत्पादन के मंत्री के पद पर नियुक्त किया। गाढ़े समय में काम आने-वाले व्यक्ति का बदला मिस्टर चर्चिल ने इतने दिनों बाद इस प्रकार दिया।

चर्चिल के पराजित हृदय की शान्ति के लिए एक और घटना हो गई। ब्रिटिश नौसेना में सर आर्थर विल्सन का स्थान बहुत ही महत्त्व-पूर्ण था। जब उन्होंने चर्चिल के इस्तीफ़े का समाचार सुना तब तुरन्त ही प्रधान-मंत्री को सूचित किया कि वे सिवा मिस्टर चर्चिल के

और किसी की अध्यक्षता में कार्य नहीं करेंगे। मिस्टर चर्चिल सर आर्थर की इस सहानुभूति-प्रदर्शन से बहुत ही द्रवित हुए।

एडमिरलटी के अध्यक्ष के पद पर लिबरलदल के पुराने नेता श्री ए० जे० बाल्फ़ोर नियुक्त किये गये। बाल्फ़ोर ने चर्चिल के काम करने के ढंग को देखा था पर सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि उनका मस्तिष्क नौसेना के प्रबन्ध के उपयुक्त नहीं था। मिस्टर चर्चिल को इनकी नियुक्ति से प्रसन्नता ही हुई क्योंकि वे पहले से ही यही चाहते थे कि यदि उनका एडमिरलटी के प्रधान बने रहना असम्भव है तो उनके स्थान पर बाल्फ़ोर को ही एडमिरलटी का अध्यक्ष बनाया जाय।

मिस्टर चर्चिल लंकास्टर के डकी के चांसलर (**Chancellor of the Duchy of Lancaster**) हुए पर इस पद के अधिकारी के ज़िम्मे कोई खास काम नहीं रहता, फलतः उसे अपने को किसी और काम में लगाने को बाध्य होना पड़ता है। मिस्टर चर्चिल के सम्मुख 'गैलीपोली' की समस्या थी।

अपनी सफ़ाई

ब्रिटिश सरकार के नये संयुक्त मंत्रिमंडल की स्थापना हो चुकी थी। मंत्रिमंडल के सम्मुख उस समय सबसे गम्भीर प्रश्न था टर्की के सम्बन्ध में। टर्की के विरुद्ध किस प्रकार की कार्यवाही की जाय इस सम्बन्ध में अनेक रायें थीं। दूसरे मंत्रिमंडल में अब अनुदारदल के भी सदस्य पहुँच गये थे अतएव पहले की भाँति अब विचार-विनिमय सम्भव नहीं था। कारण यह था कि जिन लोगों के हाथों में कार्य-भार सौंपा गया था उन्हें स्थिति के पूर्वारम्भ का पता नहीं था। अतएव उनके तथा पुराने अधिकारियों के दृष्टिकोणों में अन्तर होना स्वाभाविक ही था।

प्रश्न यह था कि टर्की के साथ युद्ध ज़ारी रखना चाहिए या सेना को वहाँ से हटा लिया जाना चाहिए। मिस्टर चर्चिल ने इस सम्बन्ध में अपनी

सम्मति को स्पष्ट ही बनाये रखा। उनकी राय में ब्रिटिश नौसेना की भूल के कारण परिस्थिति इतनी गम्भीर हो गई थी पर अब जब एक बार रणभेरी बज गई तब फिर पीछे फिरने के मत मे वे नहीं थे। परिस्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई थी और जितनी भी शीघ्र हो सके कुछ न कुछ निर्णय करना आवश्यक था पर पहले के मंत्रिमंडल के लिए यदि निर्णय कठिन था तो वर्तमान मंत्रिमंडल के लिए वह असम्भव ही कहा जा सकता था। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं अनुभवहीनता के कारण नवीन मंत्रिमंडल का ऐसे गम्भीर विषय पर एकमत होकर किसी निर्णय को पहुँचना असम्भव ही था।

अन्त में फिर से आक्रमण करने का निश्चय हुआ। एक बार गैली-पोली के पर्वत-शिखर सैनिकों की तुमुल-ध्वनि तथा जयघोषों से मुख-रित हो उठे। ब्रिटिश सेना ने वीरता के कार्य कर दिखाये पर तुर्कों के अधिकृत स्थानों पर क़ब्ज़ा न हो सका और अधिक आक्रमण करने का अर्थ था और अधिक सेना खपाना। इसके लिए ब्रिटिश-सेना तैयार न थी। इसलिए अन्त में यही निश्चय हुआ कि ब्रिटिश-सेनायें वहाँ से हट आयें। ब्रिटिश-सेना ने युद्ध-क्षेत्र का परित्याग बड़ी योग्यता से किया। एक भी व्यक्ति की मृत्यु न हो सकी और न किसी प्रकार की हानि ही हुई।

मिस्टर चर्चिल ने यह सब देखा-सुना। गैलीपोली पर आक्रमण करने के पक्ष में उन्होंने ज़ोरदार कोशिश की थी। पर अब उनका मन राज-नैतिक कामों में नहीं लग रहा था। वे यही चाहते थे कि अब मंत्रि-मंडल की ज़िम्मेदारी को छोड़कर वे एक वीर की हैसियत से युद्ध के मैदान में जायँ और वीरता के कुछ कार्य कर दिखायें।

उन्हें अपने यौवन के वे क्षण बारबार याद आने लगे जब वे एक सैनिक की हैसियत से सेना में कार्य कर रहे थे। कितना सुखमय वह जीवन था। मिस्टर चर्चिल के लिए संघर्षहीन जीवन से कोई आकर्षण नहीं, सदैव ही उन्होंने संघर्ष पसन्द किया है अतएव उन्होंने एक बार फिर युद्ध-

क्षेत्र में जाने का निश्चय किया। अन्त में अपने निश्चय के अनुसार उन्होंने अपना त्याग-पत्र प्रधान मंत्री मिस्टर ऐस्क्विथ को दे दिया।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह कार्य अधिक आश्चर्यजनक नहीं था। कारण यह है कि वे स्वभाव से ही युद्धप्रेमी हैं। यही कारण है कि नये मंत्रिमंडल ने जब उनके ऊपर उस पद का भार सौंपा, जिसके अधिकारी को कोई जिम्मेदारी का काम नहीं रहता, तब उनसे रहा न गया और उन्होंने युद्ध-क्षेत्र में ही जाने का निश्चय किया।

हाउस आफ़ कामन्स से बाहर चले जाने के पहले मिस्टर चर्चिल एक बार अपने ऊपर लगाये गये आरोपों की सफ़ाई देना चाहते थे। कारण, हो सकता है कि इस युद्ध में उनकी मृत्यु हो जाय और यदि उनकी मृत्यु हो गई तो इतिहास में सदा के लिए उनके नाम के साथ एक काली रेखा खिंची रह जायगी। इसी उद्देश्य से मिस्टर चर्चिल ने यह निश्चय किया कि त्याग-पत्र देते समय वे जो भाषण देंगे उसमें अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का वे भली प्रकार खण्डन कर देंगे। और हुआ भी ऐसा ही। अपना भाषण देते हुए उन्होंने अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का पूरी तौर से खण्डन किया और बताया कि जिन कार्यों के लिए उनको बदनाम किया जाता है उन सबकी जिम्मेदारी केवल उन्हीं पर नहीं है, क्योंकि लार्ड फ़िशर की स्वीकृति से ही सारा काम हुआ था। फिर भी जो कुछ अपने ऊपर लगाये गये आरोपों के सम्बन्ध में वे कहना चाहते थे वह न कह सके क्योंकि ऐसा करने से बहुत सम्भव है अनिष्ट होता। उन्होंने तो अपने ऊपर लगाये गये आरोपों का खण्डन उसी उपाय-द्वारा किया जिससे राष्ट्र का अहित न होने पाये। उन्होंने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा—"इस समय मैं किसी पर दोषारोपण करने के लिए नहीं खड़ा हुआ हूँ पर यह मुझे कहने के लिए बाध्य होना पड़ता है कि मुझे समुद्र के प्रथम लार्ड से न तो उचित निर्देश ही मिला और न उस घटना के सम्बन्ध में सहयोग ही। यदि उन्हें वह युद्ध स्वीकृत नहीं था तो वे इस सम्बन्ध में युद्ध-समिति के सामने

अपनी राय स्पष्ट रूप से रख सकते थे। यदि समुद्र के प्रथम लार्ड ने उस युद्ध को स्वीकार नहीं किया था, यदि वे यह समझते थे कि उससे हानि होने की सम्भावना थी तो उनका कर्त्तव्य था कि वे उसे स्वीकार न करते। उनकी अस्वीकृति को कोई रोक नहीं सकता था। वह आक्रमण उस दशा में हो ही नहीं सकता था। यथार्थ में वही समय उनके त्याग-पत्र देने का था। पर उन्होंने उस मार्ग को ग्रहण नहीं किया। मेरी भाँति उन्हें भी यही आशा थी, जैसी कि फ़्रेंच नौसेना को भी आशा थी, कि उस आक्रमण में सरलता और शीघ्रता से विजय प्राप्त होगी। यदि भाग्यवश वह सफलता मिल जाती तो मैं समझता हूँ कि उस विजय के गौरव का कुछ अंश उन्हें भी प्राप्त होता।"

यहाँ पर मिस्टर चर्चिल ने जिस आक्रमण का उल्लेख किया था वह दर्रेदानियल का आक्रमण था जिसके कारण उन्हें पद-त्याग देना पड़ा था। मिस्टर चर्चिल के शासन की सबसे बड़ी भूल यही समझी जाती थी। मिस्टर चर्चिल ने अपने भाषण में यह स्पष्ट कर दिया कि उस भूल की ज़िम्मेदारी केवल उन पर ही नहीं रखी जा सकती। इसी भाँति अपने ऊपर लगाये गये अन्य आरोपों के सम्बन्ध में भी उन्होंने अपनी सफ़ाई दी। मिस्टर चर्चिल की बिदा से सम्पूर्ण लिबरलदल को दुःख हुआ। स्वयं प्रधान-मंत्री ने अपने भाषण में मिस्टर चर्चिल की बड़ी प्रशंसा की। इस प्रकार एडमिरलटी के पदच्युत शासक ने हाउस आफ़ कामन्स से बिदा ली।

युद्ध-क्षेत्र में

मिस्टर चर्चिल युद्ध-क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने के लिए फ़्रांस गये। यद्यपि साधारण रूप में एडमिरलटी के मंत्री होने के नाते उन्हें किसी बड़ी सेना का सेनापति बनाया जाना चाहिए था पर उस समय इंग्लैंड में उनके विरोधियों की संख्या इतनी अधिक थी कि उनका सम्मान करने का

ध्यान किसी को न रहा। यहाँ तक कि प्रधानमंत्री ऐस्क्विथ तक ने, जो वर्षों तक उनके मित्र और सहयोगी रह चुके थे, मिस्टर चर्चिल की ओर तनिक भी ध्यान न दिया। अन्त में उन्हें एक मेजर का पद दिया गया। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐस्क्विथ के इस निश्चय का कारण चर्चिल के विरोधियों का भय ही था, फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि प्रधान-मंत्री ने पुरानी मित्रता का तनिक भी ध्यान न रक्खा।

मिस्टर चर्चिल के लिए, जो थोड़े दिनों पूर्व ही नौसेना के शासक रह चुक थे, सेना में मेजर का पद एक साधारण तथा अपमानजनक पद कहा जा सकता है परन्तु इससे उन्हें खेद नही हुआ। उनका उद्देश्य तो स्वदेश की किसी न किसी प्रकार से सेवा करना था। यदि उनकी सरकार तथा मातृ-भूमि उन्हें इसी योग्य समझती है तो इसमें एतराज़ करने की आवश्यकता उन्हें नहीं समझ पड़ी। मिस्टर चर्चिल ने हर्ष से उसी पद को स्वीकार किया।

फ़्रांस में मिस्टर चर्चिल के आगमन से ब्रिटिश-सेना में उत्साह और आश्चर्य दोनों हुआ। उत्साह इसलिए कि उनकी नौसेना का शासक स्वयं उनके बीच युद्ध करने के लिए आ पहुँचा था और आश्चर्य इसलिए कि मिस्टर चर्चिल ऐसे महान् व्यक्ति को वे एक साधारण मेजर के रूप में देख रहे थे।

सैनिक की हैसियत से मिस्टर चर्चिल ने जिस योग्यता का परिचय दिया उससे उनके विरोधियों की आवाजें कम हो गई। एक मास तक उन्होंने बड़े ही साहसपूर्ण कार्य किये और अन्त में उन्हें लेफ़्टीनेंट कर्नल के पद पर नियुक्त कर दिया गया। उन्हें छठवीं बैटेलियन रायल स्काट फ़ुसीलियर का चार्ज दिया गया। उस समय यह सेना हेज़ब्रोक (Hazebrouck) में थी। मिस्टर चर्चिल को एक नहीं अनेक युद्ध-क्षेत्रों का अनुभव प्राप्त हो चुका था, उन्होंने अपनी सेना को सबसे अधिक फ़ुर्तीली बनाने का निश्चय किया। सेना के प्रत्येक व्यक्ति से उन्होंने सम्पर्क बढ़ाया। प्रत्येक बात वे स्वयं देखते थे। सेना की सफ़ाई का भी सदा ध्यान रखते

थे। शीघ्र ही मिस्टर चर्चिल अपने सैनिकों के प्रिय हो गये। वे लोग उन्हें अपना आत्मीय-सा समझने लगे।

उनकी सेना को प्लोयग्सटियर्ट्स (Peoesteerts) के युद्ध-क्षेत्र में भेजा गया। वहाँ उनकी सर्वप्रियता और भी बढ़ गई। रात-दिन वे सैनिकों के साथ रहते, उन्हें आदेश देते, राय देते तथा उनकी सहायता करते थे। सेना का निरीक्षण करते हुए वे कभी किसी संतरी के पास खड़े हो जाते और उससे बातें करने लगते। इसका परिणाम यह हुआ कि सभी उनसे परिचित हो गये और सभी उनका आदर करने लगे।

उस समय की युद्ध-प्रणाली आज की-सी नहीं थी। उस समय युद्ध खाइयों-द्वारा होता था। सैनिक लोग खाइयों में रहते थे और अवसर पाकर शत्रु पर आक्रमण करते थे। इसका परिणाम यह होता था कि सैनिकों की जी भर युद्ध करने की इच्छा कभी न पूरी होती थी। थोड़ी देर तक युद्ध होता और फिर सब समाप्त हो जाता। मिस्टर चर्चिल अपने सैनिकों की इच्छा से परिचित थे। वे बहुधा रात में शत्रु पर गोलियों की वर्षा करने का आदेश दे देते। इससे उनके सैनिकों को तो आनन्द आता, वे प्रसन्न होते पर आस-पास की खाइयों के सैनिक जो शान्तिपूर्वक रात व्यतीत करने के इच्छुक होते मिस्टर चर्चिल की इस प्रकार की कार्यवाही पर खीझ उठते। पर मिस्टर चर्चिल के किसी भी सैनिक के मुँह से इस सम्बन्ध में कभी शिकायत न सुनी गई।

मिस्टर चर्चिल को अपनी सेना की रक्षा का बहुत ध्यान रहता था। परन्तु जहाँ अपने सैनिकों की रक्षा के लिए वे इस क़दर उत्सुक तथा चिन्तित रहते थे वहाँ उन्हें अपनी रक्षा का तनिक भी ध्यान न रहता था। अपना कैम्प उन्होंने एक खुले मैदान में लगवा रखा था। एक बार जब एक सैनिक अफ़सर सेना का निरीक्षण कर रहा था तब मिस्टर चर्चिल के कैम्प को एक ऐसी खुली जगह में देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा कि ऐसी खतरनाक जगह कैम्प के उपयुक्त

नहीं है। पर मिस्टर चर्चिल ने मुसकराकर उत्तर दिया--पर क्या यह ख़तरनाक युद्ध नहीं है?

मिस्टर चर्चिल की सेना अभी लाम पर ही थी कि इसी समय पार्लियामेंट का अधिवेशन शुरू हो गया। पार्लियामेंट में ब्रिटिश नौसेना के सम्बन्ध में व्यय का प्रश्न था। मिस्टर चर्चिल ने पार्लियामेंट के अधिवेशन में भाग लेने के लिए युद्ध-क्षेत्र से छुट्टी प्राप्त की और अधिवेशन में उपस्थित हुए।

अधिवेशन में उन्होंने अपनी उसी पुरानी प्रवृत्ति का परिचय दिया। साथ ही पार्लियामेंट के सदस्यों के लिए एक नया शिगूफ़ा छोड़ने से भी वे न चूके। उन्होंने जहाँ नौसेना के कार्यों की आलोचना की वहाँ यह भी कहा कि लार्ड फ़िशर को पुनः नौसेना का अध्यक्ष बनाया जाना चाहिए। राजनैतिक दृष्टि से उनकी इस बात का चाहे जो कुछ महत्त्व न रहा हो, पर इससे इतना तो प्रकट ही है कि मिस्टर चर्चिल स्वदेश के हित के लिए व्यक्तिगत-विरोध की तनिक भी परवाह नहीं करते हैं। जिस लार्ड फ़िशर के कारण उन्हें पद-त्याग करना पड़ा उन्हीं की पुनः सिफ़ारिश करना उनकी विशाल-हृदयता का परिचायक है। मिस्टर चर्चिल के इस प्रस्ताव पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया।

मिस्टर चर्चिल जिस समय युद्ध-क्षेत्र में लौटे उनकी सेना एक अन्य बड़ी सेना में मिला दी गई थी; उनका स्थान भी न रह गया था। इधर राजनैतिक परिस्थिति भी बदल रही थी; इसलिए मिस्टर चर्चिल ने युद्ध-क्षेत्र से फिर राजनीति में आने का निश्चय किया। उनके इस निश्चय के कुछ और भी कारण थे। पहला कारण तो यह था कि उस समय ब्रिटिश पार्लियामेंट के सम्मुख अनिवार्य भर्ती का प्रश्न पेश था। युद्ध की गम्भीरता ने अनिवार्य भर्ती शुरू करने पर सरकार को बाध्य कर दिया था। मिस्टर चर्चिल सदा से अनिवार्य भर्ती के समर्थक थे अतएव उन्होंने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करने का निश्चय किया। इँग्लैंड से अनेक मित्रों के पत्र बराबर उनके

पास इस सम्बन्ध में आ रहे थे कि उन्हें ऐसे अवसर पर पार्लियामेंट में अवश्य उपस्थित रहना चाहिए। दूसरी बात यह थी कि दर्रेदानियल के सम्बन्ध में जो जाँच हो रही थी उसके लिए उन्हें अपनी सफ़ाई भी तैयार करनी थी।

इन्हीं कारणों से मिस्टर चर्चिल ने सेना से अवकाश ग्रहण किया। पार्लियामेंट के सदस्य होने के नाते प्राप्त विशेषाधिकार के कारण उन्हें सेना से छुटकारा मिला और वे इँग्लैंड वापस आकर फिर राजनीति में कार्य करने लगे।

टैंक का आविष्कार

इस समय योरप में जर्मनी और ब्रिटेन के साथ जो युद्ध हो रहा है उसमें अनेक प्रकार के टैंकों का प्रयोग सुना जाता है। फ़्रांस पर विजय प्राप्त करने के लिए जर्मनी ने टैंक-सेना से ही कार्य लिया है। टैंक एक प्रकार का स्थल-जहाज कहा जा सकता है। गत महायुद्ध के समय में जब पहले-पहल टैंक-सेना का प्रयोग ब्रिटिश फ़ौज ने शत्रु पर किया तो जर्मन उसे देखकर इतना घबड़ा गये कि सिवा हथियार छोड़-कर भागने के उनको कोई अन्य उपाय ही नहीं सूझता था।

टैंक-सेना के सरकारी इतिहास का कहना है कि जैसे ही टैंक आगे बढ़े, उनके पीछे-पीछे पैदल सेना भी थी, वैसे ही शत्रु घबड़ा गये। जो लोग भाग नहीं सके उन्होंने डर के मारे आत्म-समर्पण कर दिया। विरोध करने की तो उनमें शक्ति ही नहीं थी।

पर इन टैंकों के जन्मदाता कौन हैं? हम पिछले अध्यायों में बतला चुके हैं कि मिस्टर चर्चिल ने एडमिरलटी के मंत्री होते हुए सशस्त्र मोटरों के निर्माण के लिए आदेश दिया था। उन दिनों महायुद्ध नहीं शुरू हुआ था पर मिस्टर चर्चिल ने भावी युद्ध की भयंकर ज्वाला को देख लिया था और शत्रु का सामना करने के लिए एक घातक उपाय

सोच निकाला था। उस समय उन मोटरों को टैंक नाम न दिया गया था। पहले उन्हें स्थल-जहाज़ कहा जाता था क्योंकि इनका निर्माण बहुत कुछ जल में चलनेवाले जंगी जहाज़ों के ही सिद्धान्तों पर किया गया था परन्तु बाद में जब उनकी उपयोगिता का प्रमाण मिल गया तब उनको शत्रु की जानकारी से छिपाने के लिए इम्पीरियल डिफ़ेन्स कमेटी ने उसका नाम टैंक रखा। सौभाग्य से जर्मन टैंक को देखने के बाद भी उस प्रकार के टैंक बनाने में असफल रहे और ब्रिटिश सेना को युद्ध में टैंकों की सहायता से भारी विजय प्राप्त हो गई।

टैंकों के निर्माण में मिस्टर चर्चिल ने किस गुप्त रीति से कार्य किया था यह भी एक मनोरंजक कहानी है। बेल्जियम में सशस्त्र मोटरों का प्रयोग नौसेना के डिवीज़नों ने किया था पर उन्हें खाइयों को पार करने में भारी कठिनाई उठानी पड़ी थी। इन सब कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए मिस्टर चर्चिल ने रायल नौसेना की हवाई सर्विस के प्रधान एडमिरल मरे सुइटर से टैंक के निर्माण के सम्बन्ध में विचार-विनिमय किया। अन्त में दोनों इस निर्णय पर पहुँचे कि एक ऐसी सशस्त्र मोटर बनाई जाय जो ट्रैक्टर के ढंग की हो। इस प्रकार नौसेना ने नमूने का टैंक बनवाने का निश्चय किया। पर उस समय मिस्टर चर्चिल के इस प्रयोग पर लोग हँसते थे। युद्ध-विशारद तो इसमें मिस्टर चर्चिल की मूर्खता ही समझते थे पर मिस्टर चर्चिल इससे निराश होनेवाले न थे। वे जानते थे कि ये टैंक ही किसी न किसी समय युद्ध के प्रधान आयुध हो जायँगे।

अन्त में स्थल-जहाज़ों के सम्बन्ध में एक कमेटी क़ायम हुई जिसके अध्यक्ष ब्रिटिश नौसेना के ठेकेदार सर टेनीसन दि आयनकोर्ट थे। इस कमेटी ने निर्णय किया कि ये स्थल-जहाज़ ऐसे बनने चाहिए जो ४½ फ़ुट ऊँची और ५½ फ़ुट चौड़ी खाई को पार कर सकें। साथ ही ये दलदल में भी चलनेवाले हों और अपने सामने लगे हुए कटीले तारों को तोड़कर कुचल डालने की शक्ति भी इनमें होनी चाहिए।

निर्णय तो हो गया पर इन टैंकों की उपयोगिता के सम्बन्ध में लोगों को इतना सन्देह था कि मिस्टर चर्चिल को इनके निर्माण के लिए व्यय नहीं दिया जा सका। यदि वे इस सम्बन्ध में सेना-समिति से बातचीत करते तो उन्हें सिवा निराश होने के और कोई लाभ न होता। पर मिस्टर चर्चिल को टैंकों की उपयोगिता पर पूरा विश्वास था। उन्होंने बिना सेना-समिति या एडमिरलटी बोर्ड को सूचित किये हुए ही १८ स्थल-जहाज़ों को बनवाने का आर्डर दे दिया।

इन अठारह टैंकों के निर्माण के लिए ७,००,००० पौंड की आवश्यकता थी। सरकार का अर्थ-विभाग इतनी बड़ी रक़म देने के लिए कभी तैयार नहीं हो सकता था। साथ ही यदि उसे मिस्टर चर्चिल के इस अवैधानिक कार्य का पता चलता तो सम्भवतः और भी झगड़ा पैदा होता। पर मिस्टर चर्चिल का आत्म-विश्वास इतना अटल था कि कि उन्हें इस सम्बन्ध में तनिक-सी भी परवाह न थी। पर इसी समय लार्ड फ़िशर ने इस्तीफ़ा दे दिया। ब्रिटिश मंत्रिमंडल में एक विकट संकट उपस्थित हो गया और उसका परिणाम यह हुआ कि मिस्टर चर्चिल को मंत्रिपद से बिदा लेनी पड़ी। जिस पौधे को उन्होंने अपने हाथों लगाया था और जिसे सींच-सींच कर उन्होंने बड़ा किया था, जब उसीके फल देने का समय आया तब उन्हें बिदा लेनी पड़ी।

उनके बाद ए० जे० बालफ़ोर ने एडमिरलटी का चार्ज अपने हाथों में लिया। उन्होंने अठारह स्थल-जहाज़ों के आर्डर को घटाकर तुरन्त ही एक का आर्डर कर दिया। पर मिस्टर चर्चिल की सूझ की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए एक टैंक ही काफ़ी था।

फ़रवरी १९१६ ई० में यह पहला टैंक बनकर तैयार हो गया। इसका नाम था 'बिग विली'। हैटफ़ील्ड में पहली बार इसकी परीक्षा की गई। सम्राट् जार्ज पंचम इस नये जहाज़ को देखने के लिए मौजूद थे। सेना के प्रधान अफ़सरों के अतिरिक्त मिस्टर लायड जार्ज

भी वहाँ पर मौजूद थे। किचनर को इस नये जहाज की सफलता पर सन्देह था; फिर भी अभी तक उन्होंने अपने सन्देह को प्रकट नहीं किया था। 'बिग बिली' में १५० घोड़े की शक्ति का इंजन लगा था पर इसकी गति दो मील प्रतिघंटे से अधिक न बढ़ सकी। फिर भी परीक्षा में 'बिग बिली' सफल हुआ। युद्ध-विभाग ने तुरन्त ही १५० स्थल-जहाजों के लिए आर्डर दिया जो कि अब टैंक कहलाने लगे थे।

मिस्टर चर्चिल ने प्रधान मंत्री से अनुरोध किया कि टैंकों का प्रयोग सेना में तब तक न किया जाय जब तक उनकी संख्या बहुत अधिक न हो जाय। पर सेना-विभाग उनके प्रयोग के लिए उतावला हो रहा था। अतएव शीघ्र ही १५ सितम्बर को ४९ टैंक थीपवाल के युद्ध में भेजे गये। वहाँ उन्होंने जैसी आशा थी शत्रुओं में उसी प्रकार का प्रलय-दृश्य उपस्थित कर दिया। एक के बाद दूसरी खाईं पर वे विजय करते हुए चले जाते थे। उसके बाद तो टैंकों के प्रयोग में ब्रिटिश-सेना की ओर से इतना उत्साह दिखाया गया कि उनकी एक अलग सेना ही तैयार कर दी गई। सन् १९१४-१८ के महायुद्ध में इन टैंकों ने निर्णयात्मक कार्य किया। आधुनिक युद्ध में भी उनका स्थान कम महत्त्व का नहीं है।

फिर मंत्रिमण्डल में

युद्ध-काल में परिवर्तन एक साधारण-सी बात है। युद्ध प्रारम्भ होने के समय ब्रिटिश सरकार लिबरलदल की थी पर शीघ्र ही परिस्थितियों ने संयुक्त मंत्रिमंडल की स्थापना करने पर मजबूर किया। युद्ध के आधी दूर तक पहुँचते-पहुँचते मंत्रिमंडल में आमूल परिवर्तन हो चुका था। जिनका पहले प्रभुत्व था, जिनका पहले जनता पर प्रभाव था, वे लोग अब हटकर पृष्ठभूमि में पड़ गये थे। कारण यह है कि असफलता ही मनुष्य की लोकप्रियता का हरण करती है और युद्ध

के दिनों में सदैव सफलता की आशा करना असम्भव है। क्योंकि कितना ही कोई व्यक्ति योग्य क्यों न हो पर युद्ध में सभी बातें उसी प्रकार नहीं हो सकतीं जैसी पहले से सोच ली जाती हैं।

ब्रिटिश मंत्रिमंडल की बागडोर ऐस्क्विथ के हाथ थी पर वे भी अधिक समय तक जनता की इच्छा की पूर्ति न कर सके और अन्त में उन्हें बिदा लेनी पड़ी। उनके बाद मिस्टर लायड जार्ज ने नया मंत्रिमंडल बनाया। इधर टैंकों की सफलता तथा दर्रेदानियाल की रिपोर्ट ने मिस्टर चर्चिल की परिस्थिति को स्पष्ट कर दिया था। मिस्टर चर्चिल पर जो दोष लगाये गए थे उनका निराकरण हो चुका था अतएव उनके विरोधियों की संख्या भी कम हो गई। यद्यपि मिस्टर चर्चिल का विरोध बिलकुल शान्त नहीं हो गया था फिर भी यह आशा की जाने लगी थी कि समय पाकर मिस्टर चर्चिल फिर लोकप्रिय हो सकेंगे।

मिस्टर चर्चिल ने पार्लियामेंट के गुप्त अधिवेशन की माँग पर बहुत अधिक ज़ोर दिया। अन्त में उनकी इच्छा पूर्ण हुई और मई सन् १७ के एक दिन पार्लियामेंट का गुप्त अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। मिस्टर चर्चिल तो यह चाहते ही थे। उन्होंने सोमे के युद्ध के सम्बन्ध में एक मेमोरैंडम तैयार किया था और पश्चिमी मोर्चे पर आत्मरक्षा के साधनों को तब तक खूब दृढ़ रखने की माँग की जब तक अमरीका युद्ध में प्रवेश न करे और अमरीका के लाखों सैनिक युद्ध-क्षेत्र में न आ जायें। अमरीकन सेनाओं के आ जाने के बाद ही अन्य बातों की ओर ध्यान दिया जा सकता है।

मिस्टर चर्चिल के भाषण से बड़ा प्रभाव पड़ा। साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया कि पार्लियामेंट में उनके सम्बन्ध में जो दुर्भावना उत्पन्न हो गई थी, उनका जो विरोध बढ़ गया था वह सहसा शान्त हो गया और अब वह समय दूर नहीं है जब कि वे पुनः मंत्रिमंडल में प्रवेश करेंगे।

अधिक समय नहीं बीता। चन्द महीनों बाद ही १६ जुलाई १९१७ ई० को मिस्टर चर्चिल युद्ध-सामग्री के मंत्री नियुक्त किये गये। इसके पहले

डाक्टर एडीसन युद्ध-सामग्री के मंत्री थे। उस समय इस विभाग में १२,००० सिविल सर्वेंट थे जो लगभग ५० विभागों के अन्तर्गत कार्य करते थे। यह संख्या अत्यधिक थी। मिस्टर चर्चिल ने देखा कि इस प्रकार पचास विभागों में काम बाँट देने में न तो अधिक काम ही होता है और न किसी काम में विशेषज्ञों का सहयोग ही प्राप्त होता है। इसलिए उन्होंने विभागों की संख्या कम कर दी और एक सलाहकार समिति स्थापित की। इसके अर्थमंत्री सर लैमिंग वर्थिंगटन इवान्स और पार्लियामेंट्री सेक्रेटरी मिस्टर केलेवे थे। कमेटी में ब्रिटेन के प्रमुख व्यक्ति शामिल थे जिनमें कुछ तो विस्फोटकों के विशेषज्ञ थे और कुछ प्रमुख व्यवसायी थे। यह कमेटी क्लैम्पिग कमेटी (Clamping Committee) कहलाई।

मिस्टर चर्चिल को इस कमेटी से बड़ी सहायता मिली। उनका कार्य आसानी से और अधिक अच्छा होने लगा। साथ ही उनके पूर्वाधिकारी को जो कठिनाइयाँ उठानी पड़ी थीं वह भी मिस्टर चर्चिल को न उठानी पड़ीं। मिस्टर चर्चिल को एक साफ़ रास्ता मिल गया जिसमें उन्हें विशेषज्ञों की राय प्राप्त थी।

उन्हें सेना की आवश्यकताओं के सम्बन्ध में भी अंधकार में न रहना पड़ा। कारण यह था कि कमेटी की व्यापकता उनके लिए बड़ी सहायक सिद्ध हुई। उधर ब्रिटिश सेना को भी समय पर रणसामग्री मिल जाने के कारण बड़ी सहायता मिली। मिस्टर चर्चिल ने अपने इस नये पद पर जिस योग्यता और लगन से काम किया वह आश्चर्य-जनक था। उन्होंने यह दिखला दिया कि किस प्रकार वे लगनशील व्यक्ति हैं।

मिस्टर चर्चिल का कार्य-क्षेत्र विस्तृत था। वे बहुधा फ़्रांस और फ्लैंडर्स के युद्ध-क्षेत्रों की यात्रा करते और वहाँ सर डगलस हेग के पास रहकर सेना की आवश्यकताओं का अनुभव करते। जैसी भी आवश्यकता सेना को पड़ती उसको तुरन्त ही पूरी करने का वे सदैव प्रयत्न करते।

अनेक अवसरों पर तो वे सुबह मंत्रिपद के कामों का लन्दन में सम्पादन करते और फिर वायुयान-द्वारा फ़ांस की यात्रा करते। वहाँ की आवश्यकताओं का अनुभव करने के पश्चात् वे फिर शाम को अपना कर्त्तव्य-पालन करने के लिए लन्दन आ जाते। इस प्रकार के कठिन परिश्रम ने उन्हें और भी लोकप्रिय बना दिया।

मिस्टर चर्चिल ने केवल ब्रिटिश सेना की आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं की बल्कि फ़्रेंच प्रधान मंत्री क्लीमैण्टर के साथ युद्ध के मोर्चे की भी यात्रा की और किस प्रकार युद्ध की कार्यवाही करनी चाहिए इस सम्बन्ध में वार्तालाप किये। मिस्टर चर्चिल ने अपने शासनकाल में रणसामग्री का उत्पादन बहुत तीव्र गति से किया। जिस समय अमरीकन सैनिक योरप के युद्ध-क्षेत्र में युद्ध करने के लिए आये उनके पास युद्ध-क्षेत्र के उपयुक्त हथियार न थे। मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही उन्हें हथियारों से लैस कर दिया।

इसी समय इँगलैंड के सैनिक-सामान तैयार करनेवाले कारखानों के मज़दूरों ने हड़तालें करनी शुरू कर दीं। पर मिस्टर चर्चिल हड़ताल से हतोत्साह नहीं हुए। उन्होंने मज़दूरों की हड़ताल को दमन करने के लिए कड़े से कड़े नियमों का उपयोग किया। लायड जार्ज का सहयोग उन्हें प्राप्त था। उन्होंने तुरन्त ही यह आदेश निकाला कि यदि मज़दूर लोग अपने काम शुरू नहीं कर देंगे तो उन्हें सेना की अनिवार्य भरती से जो बरी कर दिया गया है वह नियम रद्द कर दिया जायगा और उन्हें सेना में भरती होने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त उनके नेताओं के साथ अधिक से अधिक कड़ाई का व्यवहार किया जायगा। बस फिर क्या था, मज़दूरों का हड़ताल-आन्दोलन मिस्टर चर्चिल के दमन-चक्र में पिसकर चूरचूर हो गया।

मिस्टर चर्चिल ने रणसामग्री उत्पादन के मंत्री के पद पर आरूढ़ होते ही टैंकों को बहुत बड़ी संख्या में बनाने का प्रबन्ध किया। टैंकों को युद्ध में जो सफलता मिली थी उससे सभी का ध्यान अधिक से अधिक

टैंक के प्रयोग की ओर आकर्षित हुआ था। यह बात सन् १९१८ की है जब जर्मनों की शक्ति क्षीण हो चली थी, अमरीका युद्ध में प्रविष्ट हो चुका था और यह आशा की जाती थी कि इस वर्ष से अधिक युद्ध न चल सकेगा। परन्तु मिस्टर चर्चिल इस प्रकार की आशा-मात्र पर ही कैसे निर्भर रह सकते थे। उन्हें तो आगे के लिए तैयारी करनी ही थी। उन्होंने सन् १९१९ ई० के वर्ष के लिए भी योजना तैयार की। सन् १९१८ ई० तक ही टैंक बहुत अधिक संख्या में बन चुके थे पर उनके प्रयोग का अवसर ही न आया और वर्ष के अन्त में ११ नवम्बर को विराम-संधि पर हस्ताक्षर होने के साथ ही साथ वह कार्य ही समाप्त हो गया।

सन् १९१८ ई० के खाकी निर्वाचन के बाद मिस्टर चर्चिल पर युद्ध-विभाग और वायुसेना की जिम्मेदारी डाल दी गई। अब वे दो-दो विभागों के मंत्री थे। मिस्टर चर्चिल को दो विभागों का चार्ज देने के निर्णय का हाउस आफ़ कामन्स में बहुत विरोध हुआ। यहाँ तक कि वायुसेना के अंडर सेक्रेटरी जनरल सीले ने इस प्रबन्ध के विरोध में अपने पद से इस्तीफ़ा दे दिया। रूस के सम्बन्ध में युद्धमंत्री की हैसियत से मिस्टर चर्चिल ने जो रुख ग्रहण किया था, उसका भी बड़ा विरोध किया गया।

वह समय युद्ध के अवसान का था। उसी समय रूस में क्रांति की लहर बह चली। बोल्शेविक आन्दोलन का ज़ोर बढ़ने लगा। मित्र-राष्ट्रों की सेना ने आर्कंजेल और मरमांस्क के बन्दरगाहों को अपने अधिकार में कर लिया था। वहाँ ब्रिटिश सेनायें भी रख दी गई थीं। लार्ड मिल्नर ने, जो कि मिस्टर चर्चिल के पद के पूर्वाधिकारी थे, श्वेत रूसियों को सहायता करने का वचन दिया था।

मिस्टर चर्चिल ने तुरन्त ही पद ग्रहण करने के बाद इम्पीरियल जनरल स्टाफ़ के अध्यक्ष सर हेनरी विल्सन की राय से ब्रिटिश सेना से बची हुई युद्ध-सामग्री श्वेत रूसियों को दे दी। इतना ही नहीं, ब्रिटिश

कैबिनेट के निर्णय-द्वारा रूसी अफ़सर जनरल कोलचक और जनरल डेनेकिन को २,८०,००,००० पौंड की रक़म भी दी गई।

सन् १९१९ में ब्रिटिश मंत्रिमंडल श्वेत रूसियों की ओर से निरपेक्ष हो गया और अन्त में उसने यह निर्णय किया कि मित्रराष्ट्रों की जो फ़ौजें रूस में हैं वे वहाँ से हट आवें। मिस्टर चर्चिल को अधिकार दिया गया कि इसके लिए वे जो प्रबन्ध आवश्यक समझें, करें। मिस्टर चर्चिल ने ८,००० स्वयंसेवक तैयार किये और बहुत अधिक अस्त्र-शस्त्र भी भेजे गये। यह सब काम मिस्टर चर्चिल ने मंत्रिमंडल की राय से तथा अपने पूर्वपदाधिकारी की प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए ही किया।

मई के अन्त में पेरिस में मित्रराष्ट्रों की सुप्रीम कौंसिल में यह निर्णय हुआ था कि यदि रूसी नेता यह वादा करें कि वे ज़ार-सरकार को फिर से रूस में स्थापित न करके उसके स्थान पर प्रजातंत्र सरकार क़ायम करेंगे तो उनको सहायता दी जा सकती है। इसी निर्णय के आधार पर मिस्टर चर्चिल ने रूसी नेताओं को सहायता दी थी। सुप्रीम कौंसिल का निर्णय पहले ही जनरल कोलचक को सूचित कर दिया गया था।

गर्मियों भर युद्ध ज़ोरों का चलता रहा। जाड़ा आते ही जनरल डेनेकिन का भाग्य-सितारा पलटता दिखाई पड़ा और उनको विजय मिलती दिखाई दी पर शीघ्र ही उनका विरोध भंग हो गया और श्वेत रूसी पराजित हो गये।

विरोधीदल इसी अवसर की ताक में था। उधर रूसी पराजित हुए, इधर सरकार के विरोधीदल को अवसर मिला और उसने सरकार का विरोध करना शुरू किया। मिस्टर चर्चिल ने बोल्शेविक आन्दोलन की सदैव ही निंदा की थी। अब उन पर यह आरोप लगाया गया कि उन्होंने मुट्ठी भर विद्रोहियों को दबाने के लिए ब्रिटिश सेना को भंग कर दिया। मिस्टर चर्चिल ने अपने ऊपर लगाये गये आरोप

का उत्तर उसी जोश के साथ दिया। बोल्शेविज़्म को योरप की शान्ति के लिए भयंकर वज्राघात तो वे सदैव से समझते थे।

मामला यहीं समाप्त हो जाता, पर मिस्टर चर्चिल के दुर्भाग्य से लेबरपार्टी का एक प्रतिनिधिमंडल जुलाई १९२० ई० में रूस गया। वहाँ सोवियट सरकार के पास एक ऐसा काग़ज़ पाया गया जिसने मिस्टर चर्चिल के विरुद्ध वातावरण तैयार कर दिया। यह पत्र सोवियट सरकार को उस समय मिला था जब सोवियट सेनाओं ने आर्कैंजल पर अधिकार किया था। बाद में यह पत्र गाल्विन मेमोरैंडम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस पर ६ मई १९१९ की तारीख पड़ी थी। यह ज़ार-सरकार के अन्तिम प्रतिनिधि सजानाफ़ को लिखा गया था और इसमें कर्नल गाल्विन की उस भेंट का उल्लेख किया गया था जो उसने मिस्टर चर्चिल से की थी। इसमें कहा गया था कि मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटिश फ़ौजों की रवानगी को अनिश्चित काल तक के लिए स्थगित करने का वचन दिया है। साथ ही १२,५०० स्वयंसेवक भी देने को कहा गया था जो कि एक नई फ़ौज का कार्य करेंगे।

इस पत्र के प्रकाशित होते ही ब्रिटिश जनता में एक सनसनी फैल गई। मिस्टर चर्चिल के विरुद्ध वातावरण तैयार हो गया। पार्लियामेंट में मिस्टर चर्चिल के विरोधियों ने उन पर यह दोष लगाया कि मिस्टर चर्चिल ने अपने पद का दुरुपयोग किया। लेबरपार्टी मिस्टर चर्चिल की सदा से विरोधी रही थी। उसने मिस्टर चर्चिल के इस कार्य की अत्यधिक कटु आलोचना की। मिस्टर चर्चिल ने इस पत्र के कथन का विरोध किया और कहा कि उनकी भेंट कर्नल गाल्विन से तब हुई थी जब उन्हें इस सम्बन्ध में आदेश नहीं मिले थे। पत्र की तारीख़ से मिस्टर चर्चिल के कथन की पुष्टि होती थी पर मिस्टर चर्चिल के विरोधियों के लिए तो यह स्वर्ण-अवसर था और उन्होंने उनका परी तौर से विरोध किया।

इसी समय एक और घटना हुई। मेसोपोटामिया या इराक़ में एक

बहुत बड़ी ब्रिटिश फ़ौज थी जिसका व्यय ४,००,००,००० पौंड प्रति-वर्ष पड़ता था। इस ख़र्च में कमी का प्रश्न था परन्तु इसका विरोध इराक़ में अनेक हितों के संरक्षण से सम्बन्ध रखता था। मिस्टर चर्चिल की तजवीज के आधार पर मध्यपूर्व की स्थिति के सम्बन्ध में एक अलग औपनिवेशिक विभाग स्थापित किया गया। परन्तु मध्यपूर्व की समस्या का हल न हो सका। मिस्टर चर्चिल ने जैसा सोचा था वह न हो सका। समस्या ज्यों की त्यों बनी रही। इसलिए बाध्य होकर मिस्टर चर्चिल को सन् १९२० में स्वयं ही औपनिवेशिक मंत्री का पद ग्रहण करना पड़ा। मिस्टर चर्चिल ने कैरो में एक कान्फ्रेंस बुलाई। इस कान्फ्रेंस में यह निर्णय हुआ कि ब्रिटिश सेना के स्थान पर एक रायल हवाई सेना रखी जाय। इस निर्णय-द्वारा खर्च ४,००,००,००० पौंड से घटकर ५०,००,००० पौंड हो गया।

लायड जार्ज-मंत्रिमण्डल का अन्त

मिस्टर लायड जार्ज के मंत्रिमंडल के समय में सबसे बड़ा कार्य जो हुआ वह आयर्लैंड की समस्या का हल है। आयर्लैंड की समस्या दिन पर दिन जटिल होती जा रही थी। मिस्टर चर्चिल और आयरिश नेता कालिन्स में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध हो गया। दोनों के जीवन के इतिहास में ऐसी घटनायें आ चुकी थीं जब उनको गिरफ़्तार करने-वाले के लिए इनाम घोषित किया गया था। समझौते के समय इसी बात का उल्लेख करते हुए मिस्टर चर्चिल ने कहा था कि हमने तो आपके सिर का मूल्य उससे कहीं अधिक देने की घोषणा की थी जितना कि बोयरों ने मेरे सिर के लिए घोषित किया था।

बात ठीक थी। जिस समय मिस्टर चर्चिल बोयरों के कैम्प से छूटकर भाग निकले थे, बोयरों ने यह घोषणा की थी कि जो भी व्यक्ति मिस्टर चर्चिल को जीवित या मरा हुआ लाकर हाज़िर करेगा

उसे पचीस पौंड पुरस्कार दिया जायगा। पर दुर्भाग्य से कोई बोयर २५ पौंड का वह पुरस्कार प्राप्त न कर सका। ब्रिटिश सरकार ने कालिन्स को गिरफ़्तार करने के लिए दस हज़ार पौंड पुरस्कार की घोषणा की थी।

मिस्टर चर्चिल की स्पष्टवादिता का आयरिश-नेता पर बड़ा प्रभाव पड़ा और शीघ्र ही समझौते पर हस्ताक्षर हो गये। एक कैबिनेट कमेटी भी बनाई गई जिसका कार्य समझौते की शर्तों की पूर्ति की देख-रेख करना था। इस कमेटी के चेयरमैन मिस्टर चर्चिल हुए।

मिस्टर चर्चिल का कहना था कि यदि और कोई दूसरा रास्ता न होता तो ब्रिटिश सरकार आयरिश आन्दोलन को दबाने के लिए रक्तपात भी करती। परन्तु चूँकि दूसरा रास्ता मिल गया है इसलिए उसकी आवश्यकता नहीं है।

आयर्लैंड में स्वतंत्र सरकार स्थापित हो गई थी और वह शर्तों का पालन भी उसी प्रकार कर रही थी। मिस्टर चर्चिल ने पार्लियामेंट से यह अनुरोध किया कि आयर्लैंड सम्बन्धी बिल शीघ्र ही पास कर दिया जाय क्योंकि कुछ न कुछ विरोधी लोग सरकार के विरुद्ध वातावरण तैयार करने की अन्दर ही अन्दर कोशिश कर रहे होंगे। इसलिए उनके उपायों के सफल होने के पहले ही बिल का पास हो जाना आवश्यक है।

इसी समय एक दु:खद घटना घटी। डब्लिन में विरोधियों ने उपद्रव कर दिया। मिस्टर चर्चिल को कालिन्स की सरकार पर पूरा विश्वास था इसलिए उन्होंने दमन की राय दी। इसी समय फ़ील्ड-मार्शल सर हेनरी विल्सन की लन्दन में किसी ने हत्या कर दी। सर हेनरी युद्ध में जनरल स्टाफ़ के प्रधान थे और अलस्टर के पक्के पक्षपाती थे।

बाद में पता चला कि हत्या का सम्बन्ध दो आयरिशों से है। आयर्लैंड का विद्रोह बढ़ता ही गया। विद्रोहियों ने कालिन्स की सेना के सेनापति जनरल ओ' कोनेल का अपहरण कर लिया। अस्थायी आयरिश

सरकार ने ब्रिटिश सैनिक विभाग से युद्ध-क्षेत्र की तोपें लेकर विरोधियों के अड्डों को तहस-नहस कर दिया। विरोधी दब तो गये पर कुछ सप्ताह बाद ही माइकेल कालिन्स की भी हत्या हो गई।

इस घटना के बाद ही लायड जार्ज मंत्रिमंडल का पतन प्रारम्भ हुआ। इस बार घटना टर्की को लेकर हुई। मामला इस प्रकार था कि कमालपाशा टर्की को पुनर्जन्म प्रदान कर रहे थे। लायड जार्ज यूनान के समर्थक थे। कमालपाशा ने यूनानी आक्रमणकारियों को अपने देश से भगाने का प्रयत्न किया। लायड जार्ज की यूनानियों के साथ नैतिक सहानुभूति थी। पर यह ख़तरनाक बात थी क्योंकि यूनान को ब्रिटिश सरकार का नैतिक सहयोग स्पष्टरूप से प्राप्त होने से भी यह निश्चित था कि वह टर्की के विरुद्ध युद्ध शुरू करने को तैयार हो जाता और इस प्रकार योरप में फिर एक बार युद्ध की ज्वाला जल उठती। मिस्टर चर्चिल ने लायड जार्ज का ध्यान आकर्षित करते हुए यह प्रकट किया कि यदि ब्रिटिश सरकार ने टर्की का विरोध किया तो उसे साम्राज्य के मुसलमानों को असन्तुष्ट करना पड़ेगा। परिस्थिति सचमुच बड़ी भयंकर थी।

ब्रिटिश सरकार का निर्णय देर से हुआ। इधर टर्किश सेना ने युद्ध शुरू कर दिया। यूनानियों को भीषण हार खानी पड़ी। यह भी प्रतीत होने लगा कि तुर्क लोग बाल्कन में अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश करेंगे। मिस्टर चर्चिल ने निश्चय किया कि किसी प्रकार से हो टर्की को आगे बढ़ने से रोकना होगा।

पर यदि युद्ध शुरू हुआ तो ब्रिटिश सेनाओं को लड़ना पड़ेगा। इसके लिए उपनिवेशों की राय मालूम करना आवश्यक था। एक सन्देश भेजा गया पर इसके पहुँचने के पहले ही मिस्टर चर्चिल का सन्देश अखबारों में तथा उपनिवेशों के मंत्रिमंडल के पास पहुँच गया।

इस सन्देश में मिस्टर चर्चिल ने यह स्पष्ट रूप से कह दिया था कि ब्रिटेन पूरी तौर से युद्ध के लिए तैयार है और ब्रिटिश नौसेना को

आज्ञा दे दी गई है कि यदि तटस्थ राष्ट्रों से किसी प्रकार का हस्तक्षेप किया जाय तो वह हर प्रकार उसको रोकने का प्रयत्न करे।

मिस्टर चर्चिल को आलोचनाओं का शिकार होना पड़ा। अनुदार-दल के नेता बोनर लॉ ने कहा कि ब्रिटन दुनिया भर का पहरेदार नहीं हो सकता। चर्चिल पर यह आरोप लगाया गया कि वे लायडजार्ज के सहयोग से ब्रिटिश साम्राज्य को फिर युद्ध में ढकेलना चाहते हैं।

इस घटना से अनुदारदल सावधान हो गया। आयरिश समझौते से पहले ही संयुक्त मंत्रिमंडल के प्रति अच्छी भावना नहीं रह गई थी। अब इस घटना ने स्थिति को और भी खराब कर दिया। कार्लटन में अनुदारदल की मीटिंग में व्यापारिक बोर्ड के प्रेसीडेंट स्टैंली बाल्विन ने संयुक्त मंत्रिमंडल का विरोध किया। परिणाम यह हुआ कि उनके भाषण से प्रभावित होकर अनुदारदल ने मंत्रिमंडल से अपना सहयोग हटा लिया।

संयुक्त मंत्रिमंडल की इमारत ढह गई। बोनर लॉ ने दूसरा मंत्रिमंडल बनाया और मिस्टर लायड जार्ज अपने सहयोगियों के साथ, जिसमें मिस्टर चर्चिल भी थे, राजनैतिक अंधकारपूर्ण क्षेत्र में चले जाने को बाध्य हो गये।

उद्देश्यहीन जीवन के कुछ वर्ष

संयुक्त मंत्रिमंडल के भंग हो जाने पर लिबरल मंत्रियों की दशा बड़ी ही चिन्तनीय हो गई। कारण यह था कि अनुदारदल के मंत्री तो अपने दल में सम्मिलित हो गये पर बेचारे लायड जार्ज के साथियों को कहीं जाने का मार्ग न मिल रहा था। लिबरलदल में वे स्वागत के साथ लिये न जा सकते थे क्योंकि वहाँ ऐस्क्विथ भला उन्हें कब पसन्द करते और न वे अनुदारदल में ही प्रवेश कर सकते थे। मिस्टर लायडजार्ज के

लिए तो किसी दल विशेष की परवाह थी नहीं क्योंकि उन्हें वेल्स की जनता का पूरा सहयोग प्राप्त था; अपने निर्वाचन में तो उन्हें सन्देह था नहीं। इसलिए वे स्वतंत्र रेडिकल बने रहे। पर मिस्टर चर्चिल की परिस्थिति बड़ी ही चिन्ताजनक थी। उनका समर्थन करने के लिए कोई ऐसा निर्वाचन-क्षेत्र न था। डैंडी में उन्हें अत्यधिक वोटों से हारना पड़ा।

यद्यपि जिस समय उनका चुनाव डैंडी में हो रहा था उस समय वे बहुत अधिक बीमार थे। उनका आपरेशन हुआ था। इसलिए वे अपने निर्वाचन के लिए प्रयत्न भी न कर सकते थे। परन्तु सच बात तो यह है कि यदि उनका स्वास्थ्य ठीक भी होता तब भी वे विजय नहीं प्राप्त कर सकते थे। जनता के मस्तिष्क में उनके विरुद्ध अनेक बातें भरी हुई थीं जिन्हें लाख कोशिश करने पर भी वे नहीं निकाल सके थे। जनता में उनका प्रभाव नहीं रह गया था। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल को संयुक्त मंत्रिमंडल के भंग होने पर मंत्रिपद से ही नहीं हटना पड़ा, बल्कि हाउस आफ़ कामन्स से भी बिदा लेनी पड़ी।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह सबसे बड़ी असफलता थी। पर मानव-जीवन में यह स्वाभाविक भी है कि जो शक्ति मनुष्य को उच्च से उच्च पद प्रदान करने में सहायक होती है वही कभी-कभी उसे नीचे भी गिरा देती है। मिस्टर चर्चिल को अपनी भाषणकुशलता के कारण ही सदैव सफलता मिली थी पर अब उनकी वह भाषणकुशलता भी अधिक कारगर सिद्ध न हुई। यह घटना सन् १९२२ की है। कामन्स सभा की सदस्यता से वंचित होकर मिस्टर चर्चिल को राजनैतिक अंधकार में अपना मार्ग स्वयं खोजने के लिए बाध्य होना पड़ा। पर उन्हें कोई भी मार्ग उस समय सूझ नहीं रहा था।

कुछ महीनों बाद ही पश्चिमी लीसेस्टर के मेम्बर का स्थान रिक्त हुआ। मिस्टर चर्चिल ने वहाँ के निर्वाचन-क्षेत्र से निर्वाचन लड़ने का निश्चय किया। पर वहाँ भी उन्हें मिस्टर पेथिक लारेंस के मुक़ाबिले में

विजय न मिल सकी। इस अवसर पर मिस्टर चर्चिल ने स्वतंत्र व्यापार के समर्थक की हैसियत से निर्वाचन लड़ने का प्रयत्न किया था।

मिस्टर चर्चिल अपनी दो पराजयों से इस निश्चय पर पहुँचे कि अब संसार बहुत कुछ बदल गया है। इस समय केवल दो ही दल प्रभावशाली कहे जा सकते हैं—समाजवादी तथा असमाजवादी। मिस्टर चर्चिल ने अपने को विधानवादी घोषित किया। इस प्रकार वे अनुदार-दल के बहुत निकट पहुँच गये।

मिस्टर चर्चिल के लिए यह सौभाग्य की बात हुई कि अनुदारदल के पुराने नेता बोनर लॉ की मृत्यु हो गई और उनके स्थान पर बाल्डविन अनुदारदल के नेता तथा अनुदार मंत्रिमंडल के अध्यक्ष हुए। बोनर लॉ को मिस्टर चर्चिल से बड़ी चिढ़ थी। यदि वे जीवित होते तो मिस्टर चर्चिल लाख प्रयत्न करने पर भी सम्भवतः अनुदारदल में स्थान न प्राप्त कर सकते। पर बाल्डविन सदा से मिस्टर चर्चिल के व्यक्तिगत स्वभाव के समर्थक थे अतएव उन्होंने मिस्टर चर्चिल को अनुदारदल में ले लिया। अपने को विधानवादी कहने में भी मिस्टर चर्चिल का यही उद्देश्य था कि अवसर पड़ने पर वे यह कह सकें कि उनका उचित स्थान अनुदारदल में ही है।

फ़रवरी १९२४ में वेस्टमिन्स्टर के ऐबी डिवीज़न की सीट खाली हो गई। इसके सदस्य ब्रिगेडियर जनरल निकोल्सन की मृत्यु हो गई। ब्रिगेडियर जनरल निकोल्सन के भतीजे औ० डब्ल्यू० निकोल्सन उस निर्वाचन-क्षेत्र से अनुदारदल के सदस्य के रूप में खड़े हुए। मिस्टर चर्चिल का भी नाम प्रस्तुत किया गया। मिस्टर चर्चिल का नाम प्रस्तुत करने वाले वे ही व्यक्ति थे जिनका विश्वास था कि सोसलिज्म बुरी चीज है और उसे दबाना सबसे पहला काम है। कैप्टेन निकोल्सन को एक बड़ी राजनैतिक पार्टी का सहयोग प्राप्त था पर मिस्टर चर्चिल एक स्वतंत्र उम्मीदवार की हैसियत से खड़े हुए थे। मिस्टर चर्चिल के दो और

विपक्षी उम्मीदवार थे। फ़ेनर ब्राकवे को एक समाजवादी और स्काट-डकर्स को एक रैडिकल राजनैतिक संस्था का सहयोग प्राप्त था।

मिस्टर चर्चिल के जिन मित्रों ने उनके पक्ष में बड़ी कोशिश की उनमें सर आर्चीबाल्ड सिंकलेयर, जेम्स रैन्किन (अनुदारदल के सदस्य) तथा दो और अनुदारदल के सदस्यों—सर फ़िलिप सैसून, कैप्टेन एफ़० ई० गोस्ट और सर एरिकगेडेस, के नाम उल्लेखनीय हैं।

समाजवादियों के मारे मिस्टर चर्चिल को अपनी सभायें करना कठिन हो रहा था। वे लोग मिस्टर चर्चिल की सभाओं को भंग कर देते, पर मिस्टर चर्चिल को उस समय पत्रों का सहयोग मिला। उन्होंने पत्रों में अपने वक्तव्य प्रकाशित करके काफ़ी लोकप्रियता प्राप्त की। लेकिन ऐसे संघर्षपूर्ण चुनाव के लिए केवल इतना ही पर्याप्त न था। मिस्टर चर्चिल के मित्रों ने कहा कि यदि बाल्फ़ोर मिस्टर चर्चिल को इस प्रकार का एक पत्र दे दें कि अनुदारदल ने उनकी उम्मीदवारी को स्वीकार कर लिया है, तो जनता पर बहुत प्रभाव पड़ सकता है। बाल्फ़ोर ने पत्र देना स्वीकार कर लिया पर शर्त यह थी कि अनुदारदल के नेता बाल्डविन को इसमें आपत्ति न हो।

पर बाल्डविन को आपत्ति थी। उनका कहना था कि अनुदार-दल की ओर से एक सदस्य को पत्र दे दिया गया है। अब यदि बाल्फ़ोर मिस्टर चर्चिल को सिफ़ारिशी पत्र दे देंगे तो अनुदारदल में दो पार्टियाँ हो जायेंगी। इस कारण अनुदारदल के नेता ऐबी के चुनाव से अपने को अलग ही रख रहे हैं। पर यदि उनमें से कोई निकल्सन का समर्थन करे तो बाल्फ़ोर भी मिस्टर चर्चिल को सिफ़ारिशी चिट्ठी दे सकते हैं।

मिस्टर चर्चिल का रहा-सहा आधार भी जाता रहा; फिर भी वे निराश न हुए। अपने लिए वोट प्राप्त करने की वे बराबर कोशिश करते रहे। अनुदारदल का कोई सदस्य निकल्सन का समर्थन करता न दिखाई पड़ता

था। इसी में बहुत अधिक समय व्यतीत हो गया और चुनाव का दिन निकट आगया।

इसी बीच में मिस्टर अमेरी ने निकल्सन के पक्ष में पत्रों में एक पत्र प्रकाशित कराया। बस फिर क्या था, चर्चिल तथा उनके मित्र इसी अवसर की तो प्रतीक्षा कर रहे थे। बाल्फ़ोर ने चर्चिल की सिफारिश में पत्र लिख दिया। बाल्फ़ोर के पत्र की प्रतिलिपि बड़े-बड़े अक्षरों मे छापकर तमाम निर्वाचन-क्षेत्र मे बाँटी और चिपकाई गई। मिस्टर चर्चिल के पुराने मित्र मिस्टर एफ़० ई० स्मिथ, जो अब लार्ड बर्कनहेड हो गये थे, और मिस्टर आस्टेन चेम्बरलेन ने भी मिस्टर चर्चिल की उम्मीदवारी की सिफ़ारिश की। इतना सब होते हुए भी मिस्टर चर्चिल को सफलता न प्राप्त हो सकी। कैप्टेन निकल्सन से उन्हें ४३ वोट कम मिले।

मिस्टर चर्चिल की यह पराजय विजय से कुछ कम न थी। अनुदारदल में उनका स्थान एक नेता का हो गया और शीघ्र ही एपिंग की जो सीट ख़ाली थी उसी से मिस्टर चर्चिल बहुत अधिक बहुमत से चुने गये।

मिस्टर चर्चिल के असफल वर्ष बीत चुके थे। सफलता अब उनकी ओर बिना बुलाये आ रही थी। लिबरलदल से अलग होकर फिर से अनुदारदल मे प्रवेश करने के लिए उन्हें बहुत प्रयत्न करना पड़ा पर उनका प्रयत्न सफल हो गया। इतना ही नही, जब बाल्डविन ने मंत्रिमंडल का निर्माण किया और मंत्रियों के नाम सुनाये गये तो लोगों को यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि मिस्टर चर्चिल का भी नाम उसमें था। वे एक्सचेकर के चांसलर निर्वाचित किये गये थे। मिस्टर चर्चिल के लिए यह सबसे बड़ी सफलता थी। उनके इस निर्वाचन से पार्लियामेंट में बड़ा आश्चर्य प्रकट किया गया क्योंकि मिस्टर चर्चिल ने अनुदारदल में अभी प्रवेश ही किया था। अतएव इतनी शीघ्र इतना महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया जाना आश्चर्यजनक था!

इस प्रकार मिस्टर चर्चिल ने कुछ समय तक पार्लियामेंट से बाहर रहकर एक बार फिर राजनीति में प्रवेश किया। उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि वे जिस स्थान पर रहे हैं वहीं उन्हें अत्यधिक गौरव प्राप्त हुआ है।

राष्ट्रीय सम्पत्ति के सञ्चालक

वाल्डविन मंत्रिमंडल में मिस्टर चर्चिल को ख़ज़ाने का अध्यक्ष तो बनाया गया पर उन्हें अपने इस नये पद में अधिक सफलता न मिल सकी। मिस्टर चर्चिल संघर्षशील स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनके स्वभाव का मनुष्य अर्थशास्त्र की राजनीति में कभी सफल नहीं हो सकता। कारण यह है कि अर्थशास्त्र के लिए तो ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो शान्ति के साथ सोच-विचार करे तथा दूर तक विस्तृत दृष्टिकोण से कार्य करे। कुछ थोड़े-से नये करों को लागू कर देने या किसी वस्तु विशेष पर से चुंगी हटा देने से ही राष्ट्रीय अर्थ-शास्त्र का नियंत्रण नहीं किया जा सकता। यही कारण है कि मिस्टर चर्चिल की अर्थनीति सफल न हो सकी।

इधर सन् १९२६ की गर्मियों में संसार में व्यावसायिक संकट उपस्थित हो गया। इँग्लैंड की इस संकट की बहुत कुछ ज़िम्मेदारी एक्सचेकर के चांसलर की 'गोल्ड स्टैंडर्ड' की नीति थी। 'गोल्ड स्टैंडर्ड' की नीति अत्यन्त जटिल है तथा उसे समझने के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्रीय अर्थशास्त्र का पूरा ज्ञान रक्खा जाय। 'गोल्ड स्टैंडर्ड' के क्या अर्थ हैं, इससे क्या लाभ और हानियाँ हैं; इन सभी प्रश्नों पर सरकार के अर्थ-विभाग ने विचार किया और उसका कहना था कि 'गोल्ड स्टैंडर्ड' से हानि की अपेक्षा लाभ अधिक है।

पर यथार्थ में मिस्टर चर्चिल की इस नई अर्थ-नीति का प्रभाव इँग्लैंड के व्यवसाय पर बड़ा घातक पड़ा। 'गोल्ड स्टैंडर्ड' का परिणाम

यह हुआ कि विदेशों में ब्रिटेन की बनी हुई चीज़ें महँगी बिकने लगीं जिससे उनकी खपत कम हो गई। जब खपत कम हो गई तो यह भी स्पष्ट ही है कि व्यवसायियों को लाभ भी कम होने लगा। फलतः कारख़ानेदार अपने मज़दूरों की तनख़्वाहों में कमी करने पर बाध्य हुए। इन सबका परिणाम वही हुआ जो होना था। मज़दूर-पेशा जनता असंतुष्ट हो गई। हड़तालें होने लगीं पर हाँ, इन सबकी ज़िम्मेदारी इस बार मिस्टर चर्चिल के सिर नहीं मढ़ी गई, यद्यपि यह उन्हीं की ग़लत नीति के कारण हुई थी। इस प्रकार सन् १९२६ में मजदूरों की हड़ताल शुरू हो गई।

देश के लिए यह एक विकट परिस्थिति थी। कारख़ानेवाले मजदूरों की मजदूरी बढ़ा नहीं सकते थे क्योंकि उनकी आमदनी कम हो गई थी और इधर मजदूर भी कम वेतन पर काम नहीं कर सकते थे। अन्त में सरकार ने जब देखा कि समझौता कराने की तमाम कोशिशें बेकार चली गईं तब कोयले के कारखानों के लिए थोड़ी-सी आर्थिक सहा-यता प्रदान की। जब तक वह रक़म रही तब तक कारख़ानेवाले मजदूरों को अधिक वेतन दे सके और तभी तक हड़ताल भी होने से बची रही। इसी बीच में सरकार ने जाँच शुरू की पर उसका कुछ परिणाम न निकला। कारख़ानेवाले वेतन बढ़ाने को तैयार न हो रहे थे और हड़ताल के पक्षपातियों की संख्या भी दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थी।

अन्त में हड़ताल शुरू ही हो गई। मजदूरदल के नेताओं ने सोचा कि यदि आम हड़ताल हो जाय और सभी लोग एक साथ काम छोड़कर घर बैठ जायँ तो निश्चय ही उनका उद्देश्य शीघ्र पूरा हो सकता है। पर यह साधारण भूल न थी। इससे राष्ट्र का कार्य रुक गया, परिणाम यह हुआ कि जो लोग मजदूरों से सहानुभूति रखते थे वे भी उनके विरोधी हो गये।

मिस्टर चर्चिल ने परिस्थिति पर गम्भीररूप से विचार किया।

इंग्लैंड की यह आम हड़ताल अत्यन्त भयानक सिद्ध हुई। सारा काम बन्द हो गया था। मिस्टर चर्चिल ने उस समय अपने को राष्ट्रीय काम में लगा दिया। 'ब्रिटिश गज़ट' नाम का एक पत्र भी उन्होंने प्रकाशित किया। हड़ताल के कारण अन्य सभी पत्रों का प्रकाशित होना बन्द हो गया था। 'मार्निंग पोस्ट' ने सरकारी समाचार-पत्र को प्रकाशित करने के लिए अपना दफ़्तर तथा सामान प्रदान कर दिया। मिस्टर चर्चिल ने पत्र का सम्पादन-कार्य स्वयं अपने हाथ में लिया। ब्रिटिश गज़ट प्रथम बार ५ मई को प्रकाशित हुआ। उसी दिन उसकी २,३०,००० प्रतियाँ जनता में खप गईं। इसके बाद दिन पर दिन इसका प्रचार तथा ग्राहक-संख्या बढ़ती गई और अन्त में यहाँ तक परिस्थिति पहुँच गई कि ग्राहक-संख्या की दृष्टि से कोई भी अँगरेज़ी पत्र उसका मुक़ाबिला करने में समर्थ नहीं था। लगभग तीस लाख प्रतियाँ तक इस समाचार-पत्र की बिकती थीं। मिस्टर चर्चिल ने पत्रकार-कला से ही अपना जीवन प्रारम्भ किया था और उसमें उन्होंने अत्यधिक सफलता भी दिखाई।

जहाँ पत्र का इतना प्रचार था वहाँ उसके आलोचकों की संख्या भी कम न थी। अन्य अँगरेज़ी पत्रों ने उसका विरोध किया पर यथार्थ बात यह थी कि 'ब्रिटिश गज़ट' के प्रकाशन का उद्देश्य ही प्रचार करना था।

मज़दूरों की हड़ताल अधिक समय तक न चल सकी। आम हड़ताल तो शीघ्र ही भंग हो गई और कोयले की खानों के मज़दूरों की हड़ताल भी ठीक तौर से न चल सकी। कारण यह था कि यद्यपि कोयला ठीक तौर से बिक नहीं पा रहा था फिर भी सरकार अपनी नीति पर अटल रही। मिल-मालिकों ने भी किसी प्रकार निर्वाह किया और अन्त में परिणाम यह हुआ कि मज़दूर भूखों मरने लगे। फलतः हड़ताल का अन्त हो गया।

आम हड़ताल के समाप्त होते ही परिस्थिति बदल गई। इसी समय

निर्वाचन आगया। मिस्टर बाल्डविन को बिदा लेनी पड़ी और उनके स्थान पर मिस्टर मैकडानल्ड आये। मिस्टर चर्चिल भी खज़ाने के चांसलर के पद पर न रह सके। एक्सचेकर के चांसलर मिस्टर फ़िलिप हुए। उनकी नीति मिस्टर चर्चिल से बिलकुल अलग ही थी।

आर्थिक संकट से सारा संसार इस समय पीड़ित था। बेकारी बढ़ रही थी। चारों ओर परिवर्तन ही दृष्टिगोचर हो रहे थे। जर्मनी में नाज़ी लोग शक्ति में आगये थे, जिसके फलस्वरूप इँग्लैंड में भी सोशलिस्ट सरकार न रह सकी। मिस्टर रामसे मैकडानल्ड और बाल्डविन ने एक बार फिर संयुक्त मंत्रिमंडल क़ायम किया। इस मंत्रिमंडल में मिस्टर चर्चिल को स्थान न मिल सका। कारण यह था कि मिस्टर चर्चिल सोशलिस्टों के विरोधी थे, इसलिए उन्होंने यह स्पष्टरूप से कह दिया कि जिस मंत्रिमंडल में सोशलिस्ट मंत्री होंगे उसमें वे मिस्टर चर्चिल को कदापि न रहने देंगे। इधर अनुदारदल भी उन्हें मंत्रिमंडल में रखने के लिए बहुत उत्सुक नहीं था। इसी परिस्थिति में जब संयुक्त मंत्रिमंडल की स्थापना हुई तब मिस्टर चर्चिल फिर एक बार मंत्रिमंडल से अलग हो गये। इस समय इँग्लैंड को ऐसे मंत्रियों की आवश्यकता थी जो राष्ट्र के स्तम्भ हों और मिस्टर चर्चिल वक्ता चाहे जितने बड़े रहे हों पर वे राष्ट्र के स्तम्भ नहीं समझे जाते थे।

इसी समय भारत में वैधानिक संकट उपस्थित हो गया था। ब्रिटिश सरकार कुछ वैधानिक सुधार करने का विचार कर रही थी। मिस्टर चर्चिल ने देखा कि विरोधीदल की स्थापना करने का यह अच्छा अवसर है। उन्होंने तुरन्त ही भारत को स्वराज्य देने का विरोध प्रारम्भ कर दिया। उनका कहना था कि यदि भारत को स्वराज्य दे दिया गया तो ब्रिटिश साम्राज्य की शक्ति क्षीण हो जायगी; उसका पतन निश्चित हो जायगा।

मिस्टर चर्चिल ने इस अवसर पर अपनी सम्पूर्ण भाषणकला का उपयोग किया और सरकार को अपने तर्कों से अनेक बार हिला

दिया। भाषणकला की दृष्टि से मिस्टर चर्चिल का यह कार्य चाहे कितना ही ऊँचा समझा जाय पर राजनीतिक दृष्टि से उनकी स्थिति कुछ अधिक दृढ़ नहीं हुई। हाँ, यह अवश्य हुआ कि मिस्टर चर्चिल के भाषणों का प्रभाव सरकार पर अधिक पड़ा। इंडिया बिल पास न हो सका। मिस्टर चर्चिल ने अन्त में साम्राज्य के भावी विनाश की ओर इशारा करते हुए अपने भाषण को समाप्त किया।

राजनैतिक दृष्टिकोण से यह मिस्टर चर्चिल की कोई बड़ी सफलता न थी। भारत-सम्बन्धी बिल का विरोध करके वे इँग्लैंड की जनता में अधिक सम्मान का स्थान नहीं प्राप्त कर सके। केवल उन्हें विवाद के लिए एक अवसर मिल गया, जिसका उन्होंने जी भरकर उपयोग किया।

जर्मनी और ब्रिटेन के युद्ध शुरू होने के पाँच वर्ष पूर्व मिस्टर चर्चिल की पार्लियामेंट में बड़ी विचित्र अवस्था थी। उनके पीछे कोई सहायक राजनीतिक दल नहीं था और न कोई पत्र ही था जो उनका प्रचार करता। परन्तु इससे मिस्टर चर्चिल की कोई हानि नहीं हुई। वे अपनी भाषणकला के बल पर शीघ्र ही ब्रिटिश जनता के बीच वह स्थान प्राप्त कर सके जो प्रमुख नेताओं को भी सरलता से नहीं प्राप्त हो सकता।

प्रत्येक राजनीतिक नेता के लिए यह आवश्यक होता है कि वह देश में जागृति पैदा करने के लिए कोई न कोई सन्देश दे। इसी सन्देश की व्यापकता पर उसका राजनैतिक अस्तित्व निर्भर होता है। मिस्टर चर्चिल ने इंडिया बिल के विवाद से अवकाश पाकर देखा कि इस प्रकार कोई भी सन्देश अब उनके सामने नहीं है। जर्मनी में नाज़ी लोग शक्ति में आगये थे। मिस्टर चर्चिल ने नाज़ियों-द्वारा उत्पन्न होने-वाले संकट का अनुमान बहुत पहले ही कर लिया और ब्रिटिश जनता को उससे सावधान करने लगे। उन्होंने बहुत पहले ही यह स्पष्ट कर दिया था कि यदि नाज़ियों का प्रभुत्व बढ़ने दिया गया तो एक दिन फिर युद्ध निश्चित है, और वही हुआ। जर्मनी में नाज़ियों का प्रभुत्व बढ़ता गया और अन्त में सन् १९३९ में योरप में फिर एक बार

महायुद्ध की ज्वाला धू-धू करके जल उठी। मिस्टर चर्चिल की भविष्यवाणी सही निकली।

यद्यपि उस समय उनकी चेतावनी पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया था पर वे जानते थे कि शीघ्र ही समय आयेगा जब उनकी बातों पर ब्रिटिश जनता को विश्वास करना पड़ेगा। इसलिए बराबर ही वे देश को नाज़ी आतंक से सचेत करते रहे। पुनः शस्त्रीकरण की पुकार उन्होंने ज़ोरों से की पर दुर्भाग्यवश उस समय परिस्थिति अनुकूल नहीं थी।

बाल्डविन और मैकडानल्ड दोनों ही शान्ति के पुजारी थे। युद्ध की अपेक्षा वे समझौते के पक्षपाती थे। शस्त्रीकरण का अभिप्राय था युद्ध के लिए तैयार होना और उन शान्ति के पुजारियों से भला इसकी कैसे आशा की जा सकती थी? फिर भी मिस्टर चर्चिल ने अपना प्रयत्न न छोड़ा।

इतना ही नहीं, बाल्डविन और मैकडानल्ड के बाद मिस्टर चेम्बरलेन प्रधान-मंत्री हुए। मिस्टर चेम्बरलेन उनसे भी अधिक शान्तिवादी थे। उन्होंने जिस शान्तिप्रियता का परिचय दिया उसके सम्बन्ध में अनेक लोगों को यह विश्वास है कि उसी का परिणाम है कि ब्रिटेन आज युद्ध में संलग्न है।

जब मुसोलिनी ने अबीसीनिया पर आक्रमण किया तब ब्रिटेन ने कुछ कड़ा रुख अवश्य प्रदर्शित किया था पर अन्त में जब आक्रमण रोकने का प्रश्न आया तब राष्ट्रसंघ ने कायरता का परिचय दिया। मुसोलिनी को अबीसीनिया में मनमानी करने के लिए छोड़ दिया गया। परिणाम यह हुआ कि एक बार राष्ट्रसंघ का भय जब जाता रहा तब सभी अन्य राष्ट्रों ने दूसरी प्रवृत्ति का परिचय दिया। थोड़े दिनों बाद जापान ने चीन पर आक्रमण किया और राष्ट्रसंघ चुपचाप चीनी-जनता का विनाश देखता रहा।

इसके बाद स्पेन का गृह-युद्ध प्रारम्भ हुआ। मुसोलिनी और हिटलर ने जनरल फ़्रांको को सहायता देना प्रारम्भ कर दिया। दुर्भाग्य-

वश ब्रिटेन ने इस बार भी दृढ़ता का परिचय न दिया। यद्यपि इन सभी अवसरों पर मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटिश सरकार को सचेत करते हुए कड़ा रुख ग्रहण करने का अनुरोध किया परन्तु शान्ति के वे वर्ष ऐसे थे जब इस प्रकार की चेतावनी भी बुरी समझी जाती थी।

हर हिटलर के जर्मनी के चांसलर होने के कुछ सप्ताह बाद ही जब मिस्टर मैकडानल्ड जेनेवा में निःशस्त्रीकरण का प्रस्ताव पेश कर रहे थे, तभी मिस्टर चर्चिल ने इँग्लैंड में यह सिफ़ारिश की थी कि ब्रिटिश सरकार को अपनी हवाई शक्ति अधिक दृढ़ करनी चाहिए। मिस्टर चर्चिल की दूरदर्शिता का इसी से परिचय मिलता है। यदि उस समय ब्रिटिश सरकार ने मिस्टर चर्चिल की चेतावनी पर ध्यान दिया होता और अपनी हवाई सेना दृढ़ कर ली होती तो आज जर्मनी को जो कुछ सफलता मिली है वह कदापि न मिलती। पर दुर्भाग्यवश ब्रिटिश सरकार ने समय पर मिस्टर चर्चिल की चेतावनी पर ध्यान न दिया।

सन् १९३२ में जर्मनी निःशस्त्रीकरण की कान्फ्रेंस से अलग हो गया और राष्ट्रसंघ से भी उसने इस्तीफ़ा दे दिया। मिस्टर चर्चिल ने इस घटना को बहुत महत्त्वपूर्ण समझा और उसी समय यह चेतावनी दी थी कि जर्मनी अपना पुनः शस्त्रीकरण कर रहा है। रक्त की पिपासा जर्मन युवकों के हृदय में उत्पन्न की जा रही है।

मिस्टर चर्चिल की चेतावनी और परिस्थिति की गम्भीरता ने अनुदारदल का ध्यान भी इस ओर आकर्षित किया। ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा के साधनों के अभाव की ओर उनकी दृष्टि गई। इससे मिस्टर चर्चिल को अपनी बात पर और अधिक ज़ोर देने का अवसर प्राप्त हो गया। मिस्टर चर्चिल ने सरकार से रक्षा के साधनों को दृढ़ करने की माँग पेश की और कहा कि ब्रिटेन को अपनी हवाई सेना जर्मनी और फ़्रांस की हवाई सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली बनानी चाहिए।

बाद में मार्च के महीने में पार्लियामेंट के विवाद में मिस्टर चर्चिल ने जर्मनी के शस्त्रीकरण की नीति का फिर उल्लेख किया। बात स्पष्ट थी, जर्मनी बराबर अपनी शक्ति बढ़ा रहा था और उसे रोकनेवाला कोई नहीं था। राष्ट्रसंघ से उसने इस्तीफ़ा दे दिया था। वर्साई की संधि को भी वह भंग कर रहा था। परन्तु ब्रिटिश और फ़्रेंच सरकारें चुप थीं। हिटलर पर किसी प्रकार का दबाव नहीं पड़ रहा था। ब्रिटेन में शान्ति-प्रिय सरकार के होने का जर्मनी ने पूरा लाभ उठाया और अपने को सशस्त्र करने की पूरी तौर से कोशिश की।

मिस्टर चर्चिल ने अपनी चेतावनी में सरकार से स्पष्टरूप से कह दिया था कि अब वह दिन दूर नहीं है जब ब्रिटेन अन्य राष्ट्रों को युद्ध की ज्वाला भड़काने से रोक नहीं सकेगा। वह दिन शीघ्र ही आ जायगा जब स्वयं ब्रिटेन को जर्मनी के शासक आतंकित करने का आयोजन करेंगे। मिस्टर चर्चिल की यह चेतावनी ठीक थी और यदि ब्रिटेन ने उस पर ध्यान दिया होता तो आज परिस्थिति कुछ दूसरी ही होती।

मिस्टर चर्चिल के अधिक उद्योगों तथा अनुदारदल के कारण जुलाई सन् १९३४ ई० में मिस्टर बाल्डविन ने यह घोषणा की कि ब्रिटेन की सीमा राइन तक है और इसी लिए उन्होंने हवाई सेना के ४१ स्क्वेड्रन की वृद्धि करने की घोषणा की परन्तु मिस्टर चर्चिल को ८६० वायुयानों से कैसे सन्तोष हो सकता था। वे तो अपनी हवाई सेना को इतना दृढ़ बनाना चाहते थे कि शत्रु का साहस ही ब्रिटेन के विरुद्ध कोई कार्य करने का न पड़े।

मिस्टर चर्चिल बराबर ब्रिटेन की रक्षा के साधनों की वृद्धि के लिए ज़ोर देते रहे। जिस समय हिटलर ने आस्ट्रिया को अपने राज्य में मिला लिया उस समय भी उन्होंने ब्रिटिश सरकार को चेतावनी दी। इसके बाद ही चेकोस्लोवाकिया का मामला खड़ा हो गया। मिस्टर चर्चिल चेतावनी देते हुए बराबर ब्रिटिश रक्षा-साधनों को दृढ़ करने की माँग करते रहे। उनकी चेतावनी पूर्ण भी होती दिखाई पड़

रही थी। जर्मनी का आतंक बढ़ता जा रहा था अतः ब्रिटिश जनता को मिस्टर चर्चिल की बातों में कुछ तथ्य दिखाई पड़ने लगा था।

चेम्बरलेन मंत्रिमंडल की शान्तिप्रियता का परिणाम म्यूनिक-कांड हुआ। हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया को अपने राज्य में मिलाने की माँग की। चेकोस्लोवाकिया का सम्बन्ध फ़ांस से था अतएव फ़ांस का इस सम्बन्ध में सचेत होना स्वाभाविक ही था। मिस्टर डलेडियर उस समय फ़ांस के प्रधान-मंत्री थे। उस समय ब्रिटेन में इस मत के माननेवालों की संख्या कम थी कि चेकोस्लोवाकिया का प्रश्न ब्रिटिश सरकार के झुकने का लक्षण नहीं है। मिस्टर चर्चिल ने भी इस सम्बन्ध में अपनी चेतावनी दे दी थी।

परन्तु परिणाम कुछ न हुआ। प्रधान-मंत्री मिस्टर चेम्बरलेन ने म्यूनिक की यात्रा की और वहाँ चेकोस्लोवाकिया की हत्या के लिए हिटलर ने एक समझौते का बहाना किया। मिस्टर चेम्बरलेन और मिस्टर डलेडियर ने एक झूठे की प्रतिज्ञाओं पर विश्वास कर लिया। हिटलर ने उस समझौते के अनुसार योरप में और अधिक माँग न पेश करने की प्रतिज्ञा की। मिस्टर चेम्बरलेन ने यह आशा की थी कि इससे युद्ध के बादल योरप के नभमंडल से हट जायँगे। पर बात यह न हुई। मिस्टर चेम्बरलेन ने जो सोचा था वह न हुआ। हिंसक पशु को जब नर-रक्त का स्वाद एक बार प्राप्त हो जाता है तब क्या वह फिर उसका स्वाद लेना चाहता है ?

मिस्टर चर्चिल ने व्यक्तिगत रूप से चेम्बरलेन की सरकार का विरोध करना प्रारम्भ किया। ब्रिटिश पत्रों ने चेम्बरलेन की सरकार से बार-बार मिस्टर चर्चिल को मंत्रिमंडल में ले लेने के लिए माँग की पर मिस्टर चेम्बरलेन ने उस ओर ध्यान भी नहीं दिया।

अन्त में मिस्टर चर्चिल की चेतावनी पूरी हुई। हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण करने की योजना बनाई। ब्रिटेन और फ़ांस अब जर्मन डिक्टेटर की ललकार को अधिक नहीं सह सकते थे। यद्यपि ब्रिटिश

मंत्रिमंडल शान्ति का उपासक था और सब कुछ गँवाकर भी योरप में शान्ति की रक्षा करना चाहता था। किन्तु नाज़ी डिक्टेटर का यह नृत्य किसी को भी सह्य नहीं हो सका। फ़्रांस और ब्रिटेन ने जर्मनी को पोलैंड के विरुद्ध कार्यवाही करने की चेतावनी दी पर हिटलर तो अपनी शक्ति के गर्व में भूला हुआ था, रक्त की प्यास उसकी तीव्रतम हो गई थी। उसकी शान्ति के लिए युद्ध अवश्यम्भावी था। उसने मित्रराष्ट्रों की चेतावनी की परवाह न की। पोलैंड पर नाज़ी आक्रमण हो गया। मित्रराष्ट्रों ने पोलैंड को रक्षा का जो आश्वासन दे रखा था वह उन्हें पूरा करना पड़ा। महायुद्ध की ज्वाला धू-धू करके जल उठी।

युद्ध के प्रारम्भ होते ही जनता ने मिस्टर चर्चिल के युद्ध मंत्रिमंडल में सम्मिलित करने की माँग की। अन्त में मिस्टर चेम्बरलेन ने उन्हें युद्ध केबिनेट में ले लिया। उन्हें उनका वही पुराना पद दिया गया। वे एडमिरलटी के प्रधान नियुक्त किये गये। मिस्टर चर्चिल पर जनता को इतना विश्वास हो गया था कि जब वे एडमिरलटी के प्रधान निर्वाचित हो गये तब जनता को शान्ति मिली। युद्ध के प्रारम्भिक महीनों में जब तक मिस्टर चर्चिल किसी घटना से सशंक न हो जाते तब तक ब्रिटिश जनता यह समझती कि अभी कोई ख़तरा नहीं है। मिस्टर चर्चिल को लगभग बीस वर्ष पूर्व इसी पद पर जो विरोध सहना पड़ा था वह आज न था। आज वे जनता के सबसे अधिक विश्वासपात्र मंत्री थे।

मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटिश नौसेना के अध्यक्ष के पद पर प्रशंसनीय कार्य किया। ब्रिटिश नौसेना, युद्ध के प्रारम्भ में जब मिस्टर चर्चिल उसके प्रधान थे, बहुत ही उत्साहपूर्ण थी। 'ग्राफ़स्पी' और 'आल्टमार्क' की घटनायें मिस्टर चर्चिल के शासनकाल में ही हुईं।

इसके बाद ही नार्वे की घटना हुई। जर्मनी ने नार्वे पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश सेनायें अधिक दृढ़ता न दिखा सकीं। मिस्टर चेम्बरलेन के मंत्रिमंडल के प्रति जनता में अविश्वास उत्पन्न हो गया। यद्यपि नार्वे का पतन ही चेम्बरलेन मंत्रिमंडल के पतन का कारण नहीं कहा

जा सकता क्योंकि चेम्बरलेन-मंत्रिमंडल के विरुद्ध वातावरण तो उनकी 'तुष्टि नीति' के कारण ही तैयार होने लग गया था।

युद्ध की स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो गई। ऐसी दशा में केवल मिस्टर चर्चिल ही एक ऐसे व्यक्ति थे जिनके ऊपर जनता का विश्वास था और जिनसे यह आशा की जाती थी कि वे युद्ध को दृढ़तापूर्वक संचालित कर सकेंगे। मिस्टर चेम्बरलेन के इस्तीफ़ा देने पर मिस्टर चर्चिल ने अपना मंत्रिमंडल निर्माण किया।

प्रधान-मंत्री का पद ग्रहण करने के बाद मिस्टर चर्चिल ने जो भाषण दिया उसमें उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य किसी भी तरह से विजय प्राप्त करना है, क्योंकि बिना विजय प्राप्त किये ब्रिटिश साम्राज्य का जीवित रहना असम्भव है। जनता को मिस्टर चर्चिल पर पूर्ण बिश्वास है और वह जानती है कि ब्रिटेन इस युद्ध में मिस्टर चर्चिल के ही कारण दृढ़तापूर्वक टिका रहकर विजय प्राप्त कर सकता है।

युद्ध-काल में

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं मिस्टर चेम्बरलेन का मंत्रि-मंडल शान्तिप्रिय था। मिस्टर चर्चिल सदैव ही इसके विरोधी रहे। उनका कथन था कि ब्रिटेन को भावी संग्राम के लिए तैयार होना चाहिए। उन्होंने पार्लियामेंट के अधिवेशनों में सदैव ही इसी बात पर जोर दिया था। परन्तु उनकी इस चेतावनी का प्रभाव ब्रिटिश मंत्रि-मंडल पर न पड़ा। कारण यह था कि उस समय सार्वजनिक वाता-वरण ही इस प्रकार का था जो युद्ध नहीं चाहता था। इसी कारण जब हिटलर ने युद्ध शुरू कर दिया तब ब्रिटेन ने चर्चिल की उस भविष्यवाणी में सत्यता का अनुभव किया। मिस्टर चेम्बरलेन के मंत्रि-मंडल ने मिस्टर चर्चिल को युद्ध-समिति में रख लिया। परन्तु मिस्टर चेम्बरलेन के मंत्रिमंडल से जैसी आशा की जाती थी वह न हुआ।

मिस्टर चर्चिल युद्ध-समिति में रहते हुए भी बराबर इसी बात पर ज़ोर देते रहे कि इस समय ब्रिटेन के लिए एक यही रास्ता है कि वह ज़ोरों से युद्ध करे और इस काम के लिए मिस्टर चेम्बरलेन का मंत्रिमंडल उपयुक्त नहीं है। युद्ध शुरू होने के चन्द महीनों बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि मिस्टर चर्चिल का कथन ठीक है और जनता को मिस्टर चेम्बरलेन की सरकार के प्रति असंतोष ज़ाहिर होने लगा। जनता मिस्टर चर्चिल के हाथों में अपने को सौंपने के लिए उद्यत हो गई। परिस्थितियाँ मिस्टर चर्चिल के अनुकूल होने लगीं। अन्त में जनता में असंतोष बढ़ता हुआ देखकर तथा यह अनुभव कर कि युद्ध-संचालन का कार्य किसी दृढ़ हाथों में सौंपा जाना चाहिए। मिस्टर चेम्बरलेन ने प्रधान-मंत्री के पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उस समय ब्रिटिश जनता की दृष्टि में मिस्टर चर्चिल के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था जो प्रधान-मंत्री के उपयुक्त होता। फलतः युद्धग्रस्त ब्रिटेन के एकमात्र प्रतिनिधि मिस्टर चर्चिल प्रधान-मंत्री निर्वाचित हुए। इन थोड़े-से वर्षों में मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटेन की जनता में अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया था।

प्रधान-मंत्री निर्वाचित होने के उपरान्त ही मिस्टर चर्चिल ने अपना जो प्रथम भाषण दिया वह ब्रिटेन के इतिहास में अमर रहेगा। अब तक चेम्बरलेन की सरकार ने ब्रिटेन की सैनिक-स्थिति के संबंध में इतना स्पष्ट भाषण नहीं दिया था। मिस्टर चर्चिल ने ब्रिटिश हार पर पूरा प्रकाश डाला और यह स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया कि ब्रिटेन पर अभी भारी विपत्ति आ सकती है। उनके भाषण की प्रतिक्रिया भी अच्छी ही हुई। ब्रिटिश जनता अपनी स्थिति पर स्पष्ट वक्तव्य पाकर संतुष्ट हो गई और यह समझ गई कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके ऊपर वह इस संकट के समय में अपने भाग्य को निर्भर कर सकती है तो वह चर्चिल ही हैं।

फ्रांस का पतन हुआ और उसके साथ ही साथ युद्ध का रुख भी

बदल गया। फ़्रांस में मार्शल पेतां की सरकार अत्यन्त कमज़ोर प्रमाणित हुई। यद्यपि फ्रेंच जनता ब्रिटेन के साथ युद्धक्षेत्र मे तब तक युद्ध करने को प्रस्तुत थी जब तक संसार से नाज़ीवाद का नामोनिशान न मिट जाय परन्तु पेतां ने हिटलर के सम्मुख घुटने टेक दिये और संधि कर ली। जनरल डि गाले ने स्वतंत्र फ्रेंच जनता का नेतृत्व ग्रहण किया और संधि को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उन्होंने अन्त तक ब्रिटेन का साथ देने का निश्चय प्रकट किया है। पेतां और हिटलर की संधि ने फ़्रांस के आत्माभिमान तथा गौरव को नष्ट कर दिया। फ़्रांस का अधिकांश हिटलर ने अपने क़ब्ज़े में कर लिया। इधर इटली ने भी युद्ध शुरू कर दिया था। फलतः अब ब्रिटेन को दो मोर्चों पर लड़ना था। फ़्रांस के पतन के बाद पहला काम जो आवश्यक था वह यह था कि ब्रिटिश सेनाओं को पश्चिमी युद्धक्षेत्र के मोर्चे पर से वापस लाना। ब्रिटिश मंत्रिमंडल ने इस कार्य को बड़ी ही सफलतापूर्वक किया। फ़्रांस के मोर्चे से ब्रिटिश सेना का सुरक्षापूर्वक वापस आना एक ऐतिहासिक घटना है। परन्तु इसके बाद भी ब्रिटिश मंत्रिमडल के सम्मुख कठिनतर परीक्षा-काल उपस्थित था।

फ़्रांस के पतन के पश्चात् लोगों का ध्यान हिटलर के आगामी आक्रमण पर केंद्रित हो गया। मिस्टर चर्चिल यह जानते थे कि हिटलर अब एक बार ब्रिटेन पर आक्रमण करने का प्रयत्न करेगा। बात भी वही हुई। हिटलर ने शीघ्र ही ब्रिटेन पर आक्रमण करने का निश्चय किया। परन्तु उसके सम्मुख कठिनाई यह थी कि वह ब्रिटिश नौसेना से लोहा नहीं लेना चाहता था और बिना ब्रिटिश नौसेना को परास्त किये ब्रिटेन की भूमि पर पहुँचना असम्भव है। फलतः उसे हवाई आक्रमणों का ही आश्रय लेना पड़ा। उसने ब्रिटेन पर जोरदार हवाई हमले प्रारम्भ किये। मिस्टर चर्चिल की सरकार ने हिटलर के इन हमलों से देश की रक्षा का पूरा प्रबंध किया और जैसा कि यह अनुमान किया जाता था यदि मिस्टर चेम्बरलेन का मंत्रिमंडल होता तो

जनता अपने को कदापि सुरक्षित न समझती परन्तु हिटलर के हवाई हमलों का सामना करने के लिए मिस्टर चर्चिल ने पूरी ताक़त से काम लिया। उन्होंने पहले भी यह आशंका प्रकट की थी कि ब्रिटेन पर हिटलर हवाई जहाजों-द्वारा आक्रमण करेगा। ब्रिटिश हवाई सेना ने हिटलर की सारी योजना मिट्टी में मिला दी। जाड़ों की ऋतु में भी हिटलर अपने हवाई हमले करता रहा परन्तु फिर भी बड़े पैमाने पर कोई हमला वह न कर सका। ऐसा कहा जाता है कि हिटलर यदि संसार में किसी से भय करता है तो वह व्यक्ति मिस्टर चर्चिल ही हैं। वह जानता है कि मिस्टर चर्चिल युद्धप्रेमी व्यक्ति हैं और जब तक सरकार की बागडोर उनके हाथों में रहेगी तब तक ब्रिटेन किसी प्रकार भी पराजित नहीं किया जा सकता। अन्त में बड़े पैमाने पर हवाई हमला करने का उसका साहस न हुआ और वह छिटपुट हवाई हमले ही करता रहा। इसका यद्यपि कोई अधिक महत्त्व-पूर्ण परिणाम न हुआ पर इतना अवश्य हुआ कि ब्रिटेन को धन-जन की काफ़ी क्षति उठानी पड़ी। बहुत-से व्यक्ति हवाई हमलों के शिकार हुए। अनेक इमारतें मलबे में परिणित हो गई।

मिस्टर चर्चिल ने ईंट का उत्तर पत्थर से दिया। उन्होंने ब्रिटिश हवाई सेना को जर्मनी के औद्योगिक केन्द्रों तथा जर्मन अधिकृत स्थानों पर जोरदार हवाई हमले करने की आज्ञा दी। चर्चिल की इस आक्र-मणकारी नीति ने हिटलर का रहा-सहा साहस भी नष्ट कर दिया। बर्लिन पर अनेक भयंकर हवाई हमले हुए जिनसे जर्मनी को भारी क्षति उठानी पड़ी।

जब हिटलर ने देखा कि उसका यह वार खाली गया तब उसने दूसरा उपाय सोचा। इधर इटली भी युद्ध में उतर आया था। इटली ने अफ़्रीका में ब्रिटेन के उपनिवेशों पर हमले शुरू कर दिये। पहले तो मिस्टर चर्चिल ने वहाँ आत्मरक्षा की नीति ग्रहण की जिसका परिणाम यह हुआ कि इटली को काफ़ी विजय प्राप्त हुई। इस प्रकार की नीति

ग्रहण करने का एक और कारण था। ब्रिटिश सरकार दो मोर्चे नहीं तैयार करना चाहती थी परन्तु अन्त में मिस्टर चर्चिल ने अफ़्रीका में आक्रमण की नीति ग्रहण की। परिणाम यह हुआ कि इटली की सेना तुरन्त पीछे हटने लगी। जनरल वावेल अफ़्रीका-स्थित ब्रिटिश सेना का संचालन कर रहे थे। ब्रिटिश सेनाओं के सम्मुख इटली के सैनिक न ठहर सके और उन्हें क़दम-क़दम पर पराजय उठानी पड़ी। हिटलर को सम्भवतः ऐसी आशा न थी। वह इटली की शक्ति को इतनी कम नहीं समझता था। हिटलर-मुसोलिनी-मिलन हुआ, और अन्त में हिटलर ने यह देखा कि इस समय इटली की सहायता यदि न की जायगी तो धुरी-गुट्ट के एक सदस्य का पतन ही हो जायगा।

यह थी ग्रीस के युद्ध की भूमिका। इटली ने ग्रीस पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश मंत्रिमंडल में, ग्रीस को किस प्रकार सहायता दी जाय इस प्रश्न पर काफ़ी विवाद हुआ। मिस्टर चर्चिल ने ग्रीस को पूरी सहायता देने की घोषणा की। वीर ग्रीक साहस और शक्ति के साथ लड़े और इटैलियनों की पराजय पर पराजय होने लगी। अन्त में हिटलर को नाज़ी सेना भेजकर मुसोलिनी की सहायता करनी पड़ी। हिटलर तो यह अवसर चाहता ही था कि बाल्कन में उसका प्रभुत्व हो जाय उसने यूगोस्लेविया पर आक्रमण कर दिया। ब्रिटिश फ़ौजें वहाँ पहुँच न सकीं और उसका पतन हो गया। यूगोस्लेविया के बाद जर्मनी ने ग्रीस पर आक्रमण किया। ब्रिटिश सैनिक वीरता से लड़े परन्तु सैनिक कारणों से यह अनिवार्य हो गया कि ब्रिटिश सेनायें ग्रीस से हट आयें। इस प्रकार ग्रीस का पतन हो गया।

ग्रीस के पतन के बाद यह निश्चित था कि हिटलर क्रीट पर हमला करेगा। ब्रिटिश सेनाओं ने क्रीट में अपना अड्डा जमाया था। हिटलर ने क्रीट पर हवाई आक्रमण किया। बहुत अधिक संख्या में पैराशूट-द्वारा सैनिक उतारे गये। क्रीट का सैनिक-महत्त्व बहुत अधिक है। क्रीट

में घमासान युद्ध हुआ परन्तु अन्त में ब्रिटिश सेना की हार हो गई और उसे वहाँ से हटना पड़ा।

क्रीट का युद्ध वर्तमान युद्ध का एक भयंकर अंग है। मिस्टर चर्चिल ने हाउस आफ़ कामन्स में एक प्रश्न का उत्तर देते हुए बताया कि इस युद्ध में ब्रिटेन के १५,००० सैनिक मारे गये या घायल हुए। उनके अतिरिक्त ग्रीक तथा क्रीटन सैनिकों की संख्या भी कुछ कम न थी। परन्तु जर्मनी को इस छोटे-से द्वीप को प्राप्त करने में एड़ी चोटी का पसीना एक कर देना पड़ा। उसके बहुत अधिक सैनिक काम आये। इस युद्ध में जर्मनी के १२,००० सैनिक मारे गये तथा घायल हुए। १८० लड़ाकू वायुयान तथा २५० सेनावाहक नष्ट हुए।

क्रीट के पतन से ब्रिटेन की जनता क्षुब्ध हो उठी। हाउस आफ़ कामंस में मिस्टर चर्चिल की सरकार के प्रति असंतोष भर गया। उनके विरोधियों के लिए यह अच्छा अवसर था और उन पर यह दोष लगाया गया कि उन्होंने क्रीट में पूरी तौर से सेना नहीं भेजी। होर बेलिशा ने कहा—"हवाई अड्डों के अभाव के कारण हम इटली पर उतनी बम-बाज़ी नहीं कर सकते थे जितना कि हम चाहते थे। परन्तु ग्रीस के युद्ध में प्रवेश करने के कारण हमें सूडा की खाड़ी और क्रीट के हवाई अड्डे प्राप्त हो गये। क्रीट के ब्रिटिश हाथों में होने से पश्चिमी मरुस्थल में स्थित शाही सेना के हित में सुरक्षा थी परन्तु उसके शत्रु के हाथों में चले जाने से उनके लिए भयंकर खतरा उपस्थित हो गया। एक सौ हरीकेन और होने से हम क्रीट पर शत्रु का अधिकार न होने देने में समर्थ हो सकते थे।"

अनुदारदल के सदस्य अर्ल विंटरटन ने कहा कि सरकार साम्राज्य के साधनों के संबंध में काफ़ी दूरदर्शिता से कार्य नहीं कर रही है। अनुदारदल के ही दूसरे सदस्य कर्नल मैकनमारा ने तो यहाँ तक भविष्यवाणी की कि हिटलर शान्ति-प्रस्ताव करेगा परन्तु उसमें असफल

होने पर वह ब्रिटेन पर भीषण बमबाज़ी करेगा और जाड़ों से पहले ब्रिटेन पर भी आक्रमण करेगा।

अनुदारदल के अन्य कई सदस्यों ने मिस्टर चर्चिल की सरकार की कटु आलोचना की। मिस्टर चर्चिल इस प्रकार की आलोचनाओं के लिए तैयार थे। उन्होंने कामन्स सभा के विवाद के विषय को सीमित नहीं किया परन्तु यह अवश्य कहा कि सरकार प्रश्नों का उत्तर अपनी सुविधा से देगी। मिस्टर चर्चिल ने क्रीट के पतन के सम्बन्ध में अपना जो भाषण दिया उसका कामन्स सभा के सदस्यों पर बहुत प्रभाव पड़ा। उनके विरोधियों ने जो असंतोष उत्पन्न किया था और जो यह आशा की जाती थी कि मिस्टर चर्चिल की सरकार से लोग असंतुष्ट हो रहे हैं वह सब हवा हो गया। मिस्टर चर्चिल ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया कि "कोई भी सरकार तब तक युद्ध-संचालन नहीं कर सकती जब तक कि वह दृढ़ आधार पर न खड़ी हो। उसे बार-बार पीछे मुड़कर यह देखने के लिए बाध्य न होना चाहिए कि उसकी पीठ में कोई छूरा तो नहीं मार रहा है।"

मिस्टर चर्चिल का यह कथन सत्य ही है। युद्ध के दिनों में प्रजातंत्र सरकार के सम्मुख अनेक कठिनाइयाँ होती हैं। युद्ध की नीति को गुप्त रखना आवश्यक होता है अन्यथा उससे शत्रु लाभ उठा सकता है। परन्तु प्रजातंत्र सरकार के सम्मुख यह कठिनाई होती है कि उसे जनता को भी संतुष्ट करना होता है। यदि वह पूरी सूचना जनता को नहीं देती तो जनता का उस पर विश्वास क़ायम नहीं रह सकता और यदि वह सूचना दे देती है तो शत्रु उससे लाभ उटा लेता है। हिटलर की युद्ध-नीति की सफलता का एक बड़ा कारण यह भी है कि जो कुछ वह करना चाहता है उसे केवल वही जानता है; जो कुछ वह करता है उसके लिए वह किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि उसकी योजनाओं का पता तब लगता है जब उनका प्रयोग किया जाता है।

मिस्टर चर्चिल ने अपने भाषण में यह स्पष्ट करते हुए बताया कि "मध्य पूर्व मे हम हर मार्ग से तथा हर तरह से बराबर सेना तथा युद्ध-सामग्री भेजते रहे। जनरल वावेल और अन्य अफ़सरों को क्रीट के युद्ध मे विजय प्राप्त करने की बड़ी आशा थी, सम्भवतः अन्त मे इसका परिणाम इतना बुरा न निकलेगा।"

मिस्टर होर बेलिशा ने अपने भाषण में कहा था कि ब्रिटिश कारखानों की उत्पादन-शक्ति दिन पर दिन घटती जा रही है। मिस्टर चर्चिल ने इसका विरोध करते हुए बताया कि "उत्पादन हवाई आक्रमणों के कारण कम नही हुआ बल्कि बढ़ ही रहा है। १९४० के अन्तिम तीन महीनों मे बंदूक़ों तथा टैंकों का निर्माण सन् १९४१ के प्रथम तीन महीनों के मुक़ाबिले में ५० प्रतिशत बढ़ गया है।"

यह बात ठीक भी है। मिस्टर चर्चिल ने युद्ध-सामग्री तैयार कराने की ओर बहुत ध्यान दिया है।

क्रीट से जो ब्रिटिश सेनाये हटी थीं इराक़ होकर उनको हटाया गया था। परन्तु इराक़ के तत्कालीन शासक ने हिटलर के बल पर उस समझौते के दूसरे ही अर्थ लगाये जो पहले ही ब्रिटेन और इराक़ मे हुआ था। फलतः ब्रिटिश सरकार को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए इराक़ के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करनी पड़ी। सरकार के इस दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए मिस्टर चर्चिल ने कहा कि "सीरिया या अन्य फ़्रेंच उपनिवेश में हमारा उद्देश्य राज्य प्राप्त करना नही है। हम उपनिवेश नहीं चाहते और न इस युद्ध से अपना कोई लाभ ही चाहते है।"

मिस्टर चर्चिल के भाषण का बहुत प्रभाव पड़ा। जनता में मिस्टर चर्चिल पर जो विश्वास पहले था वही बना रहा। मिस्टर चर्चिल की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वे साहस तथा धैर्य कभी नही छोड़ते। अपने विश्वासों पर वे अटल रहना जानते है।

जो कुछ वे करते हैं उसे खूब विश्वास के साथ करते हैं और फिर कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो उन्हें अपने निश्चय से विचलित कर सके। उनकी सफलता का यही रहस्य है। जीवन में बड़े से बड़े विरोधियों का उन्हें सामना करना पड़ा, कठिन से कठिन अवसर आये पर वे सदैव उसी भाँति अटल बने रहे।

रूस और जर्मनी का युद्ध

युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व एक दिन सहसा लोगों ने रूस और जर्मनी के बीच अनाक्रमण-संधि की सूचना बड़े आश्चर्य से पढ़ी थी। ठीक वही बात एक बार फिर हुई और बिना किसी प्रकार की घोषणा किये हुए ही जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर दिया। यद्यपि यह बात सभी स्वीकार करते थे कि रूस और जर्मनी में इतने सैद्धान्तिक मतभेद हैं कि यह कदापि नहीं हो सकता कि उनकी मित्रता अधिक समय तक चल सके पर इतनी शीघ्र यह आशा नही की जाती थी कि दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हो जायँगे। फिर भी इधर कुछ दिनों से रूस और जर्मनी के बीच मनमुटाव और मतभेद की खाई बढ़ रही थी। इस सम्बन्ध में यह अनुमान किया जाता है कि ब्रिटेन के साथ युद्ध जारी रखने के लिए हिटलर को यह अनिवार्य जान पड़ने लगा था कि रूस उसकी पूरी सहायता करे। यह सहायता रूस से उसे उस सीमा तक नहीं प्राप्त हो रही थी जितनी वह चाहता था। इसलिए उसे बाध्य होकर रूस को आक्रमण की धमकी देनी पड़ी। परन्तु मालूम होता है इससे भी उसका यह उद्देश्य पूरा न हुआ और अन्त में आक्रमण हो ही गया।

ब्रिटेन के लिए यह अच्छा अवसर था। हिटलर के इस नये आक्रमण ने ब्रिटेन की विजय निश्चित कर दी। जिस काम को अब तक अकेले ब्रिटेन को करना था वही अब उसे रूस के साथ मिलकर

करना है। हिटलर ने इस आक्रमण के सम्बन्ध में चाहे जो सोचा हो पर यह निश्चित है कि यह उसका एक जुआरी का-सा दाँव है जिसमें कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

मिस्टर चर्चिल को पहले ही यह अनुमान हो गया था कि हिटलर रूस पर आक्रमण करनेवाला है और उन्होंने उसकी सूचना भी रूस को दे दी थी। यही नहीं हिटलर के इस प्रकार सभी आक्रमणों की चेतावनियाँ चर्चिल ने उनसे सम्बन्ध रखनेवाले राष्ट्र को दी थी। फ्रांस के पतन के बाद ब्रिटेन को अकेले ही युद्ध में जर्मनी का सामना करना पड़ रहा था परन्तु रूस के युद्ध में प्रवेश करने से उनको एक और साथी मिल गया।

मिस्टर चर्चिल कम्यूनिज्म के सदा से विरोधी रहे हैं परन्तु जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया तब उन्होंने सारा विरोध भूल-कर रूस को पूरी सहायता देने का वचन दिया। रेडियो पर दिये गये अपने एक भाषण में उन्होंने कहा--

"नाज़ीवाद के विरुद्ध लड़नेवाले प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र की हम सहायता करेंगे। हिटलर के साथ चलनेवाला प्रत्येक व्यक्ति और राष्ट्र हमारा दुश्मन है।

यह बात एक संगठित राष्ट्र के लिए ही ठीक नहीं है बल्कि उन देशद्रोहियों के लिए भी है जिन्होंने अपने आपको अपने देशवासियों तथा मातृभूमि के विरुद्ध नाज़ी शासन का हथियार तथा एजेंट बनाया है। ये देशद्रोही लोग भी नाज़ी नेताओं की तरह वहाँ के देशवासियों-द्वारा नहीं हटाये जा सके। विजय के दिन हम इन राष्ट्रों को भी देशद्रोहियों से स्वतंत्र करेंगे और मित्रराष्ट्रों की अदालतों में उनका फ़ैसला होगा। यही हमारी नीति है और यही हमारी घोषणा है। इसका यह अर्थ है कि जितना हमसे बन पड़ेगा उतनी सहायता हम रूस तथा रूस की जनता को देंगे। यह रास्ता ग्रहण करने तथा पालन करने के लिए हम दुनिया के अपने सब दोस्तों

और सहयोगियों से कहेंगे तथा इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए दृढ़ता से प्रयत्न करेंगे। हमने रूस को टेक्नीकल तथा आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव किया है। इस प्रकार की सहायता हम अपनी शक्ति और रूस की आवश्यकता के अनुसार देंगे।

हिटलर का रूस पर आक्रमण करना ब्रिटिश द्वीप पर आक्रमण करने के प्रयत्न की एक भूमिका के रूप में है। निःसंदेह हिटलर को यह आशा है कि जाड़े के पहले रूस को परास्त कर दिया जायगा और वह ग्रेट ब्रिटेन पर संयुक्त-राष्ट्र अमरीका के जंगी बेड़े और हवाई फ़ौजों के आने के पूर्व ही चढ़ाई कर देगा। उसे आशा है कि वे एक बार फिर पहले की अपेक्षा कहीं ज़्यादा भारी पैमाने पर अपने शत्रु को एक-एक करके नष्ट करने का काम आरम्भ कर सकता है क्योंकि अभी तक वह इसी से फूला-फला है और तब अन्तिम कार्य के लिए रास्ता साफ़ होगा जिसके बिना उसकी पहले की सारी विजय बेकार जायगी और वह अन्तिम कार्य है पश्चिमी गोलार्द्ध को अपनी इच्छा के और अपनी शासन-पद्धति के अनुकूल बनाने का।

इसलिए रूस का खतरा हमारा खतरा है। संयुक्त-राष्ट्र अमरीका भी उसे अपना खतरा समझेगा। हमें चाहिए कि हम दुगुनी शक्ति के साथ प्रयत्न करें और ऐसे समय में ही जब कि हमारी जीवन और आशा बनी हुई है अपनी संयुक्त शक्ति-द्वारा वार करें।"

कौटुम्बिक जीवन

जो सफल राजनीतिज्ञ होगा वह सफल पति अवश्य होगा यह कथन मिस्टर चर्चिल के सम्बन्ध में बहुत ही ठीक उतरता है। उन्हें अपने कौटुम्बिक जीवन में पूरी सफलता मिली है। यौवन के प्रारम्भ में वे बड़े ही भावुक प्रकृति के व्यक्ति थे। अपने कपड़ों तथा फ़ैशन की तो उन्हें परवाह ही न थी। फिर भी वे बड़े ही मिलनसार थे, इस कारण समाज में उनकी जान-पहचान भी काफ़ी थी। उन दिनों यद्यपि

मिस्टर चर्चिल के वैवाहिक सम्बन्ध की चर्चा कहीं नहीं चल रही थी फिर भी इस सम्बन्ध में दो महिलाओं के नाम लिये जाते थे। उनमें से एक तो अमरीकन अभिनेत्री थी। परन्तु बाद की घटनाओं ने इस अफ़वाह को ग़लत प्रमाणित कर दिया।

जिन दिनों मिस्टर चर्चिल डंडी के निर्वाचन-क्षेत्र में अपने लिए वोट माँग रहे थे उन्हीं दिनों उनका परिचय कुमारी क्लेमेंटाइन होज़ियर से हुआ। कुमारी क्लेमेंटाइन होज़ियर के पिता उस ज़िले के प्रभावशाली व्यक्ति समझे जाते थे। परिचय ने शीघ्र ही प्रणय का रूप धारण कर लिया। मिस्टर चर्चिल की मा लेडी रैंडोल्फ़ तथा लेडी ब्लांचे होज़ियर में पहले से ही मित्रता थी। इस कारण यह सम्बन्ध होने में कोई कठिनाई न पड़ी। जिस समय मिस्टर चर्चिल का विवाह कुमारी क्लेमेंटाइन होज़ियर के साथ होना निश्चित हुआ था उस समय चर्चिल की आर्थिक परिस्थिति कुछ बहुत अच्छी न थी। वे ब्रिटिश मंत्रिमंडल में थे जिससे प्राप्त वेतन पर ही उन्हें निर्भर रहना पड़ता था। अवकाश के समय में केवल उनकी लेखनी ही उन्हें जीविकोपार्जन करने में सहायता करती थी। ऐसी परिस्थिति में यह विवाह एक प्रकार से योग्यता का विवाह था। कुमारी होज़ियर को मिस्टर चर्चिल की योग्यता पर विश्वास था।

विवाह बड़ी ही धूम-धाम से हुआ। सम्राट् तथा सम्राज्ञी ने नव-दम्पति के पास उपहार भेजे। श्रीमती चर्चिल अपने पति की महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सदैव प्रेरणा-शक्ति बनी रहीं। परन्तु फिर भी प्रचार से वे सदैव दूर रहीं। विवाह के बहुत दिनों तक तो वे कभी अपने पति के साथ सार्वजनिक उत्सवों में जाती तक न थीं। जिन राजनैतिक तथा सरकारी कार्यों में मिस्टर चर्चिल सदैव अपने को व्यस्त रखते हैं उनसे वे सदैव अलग रहीं परन्तु फिर भी अपने विश्वासों पर वे सदैव दृढ़ रहीं। ऐसे अवसर बहुधा आये हैं जब उन्हें अपने पति के विश्वासों के विरुद्ध पक्ष का समर्थन करना पड़ा है परन्तु उन्होंने अपने व्यक्तित्व

को कभी पति के व्यक्तित्व में घुल-मिल नहीं जाने दिया। महिला-आन्दोलन के अवसर पर वे पति के विचारों के विरुद्ध आन्दोलन का समर्थन करती रहीं। स्त्रियों के अधिकारों पर वे सदैव अटल बनी रहीं।

विवाह के थोड़े समय बाद ही डियना और रैन्डाल्फ़ का जन्म हुआ। श्रीमती चर्चिल का अधिकांश समय घर के काम-काज और बच्चों की देख-रेख में व्यतीत होता रहा है। मिस्टर चर्चिल के पारिवारिक जीवन में केवल एक ही 'ट्रैजिडी' है और वह है उनकी पुत्री मेरी गोल्ड की मृत्यु। मेरी गोल्ड की मृत्यु तीन वर्ष की अवस्था में निमोनिया से हुई थी। परन्तु उसके एक वर्ष बाद ही मेरी का जन्म हुआ जिससे दुखी परिवार के कष्ट कुछ कम हो गये।

मिस्टर चर्चिल का कौटुम्बिक जीवन बड़ा सफल रहा है। उनके एक पुत्र है तथा दो पुत्रियाँ। पुत्र रैन्डाल्फ़ चर्चिल ने पहले राजनीति में प्रवेश किया और पार्लियामेंट में प्रवेश करने का भी प्रयत्न किया। उनसे भी पिता की ही भाँति आशा थी परन्तु शीघ्र ही रैन्डाल्फ़ ने राजनीति के संघर्षपूर्ण क्षेत्र को छोड़कर पत्रकार-जीवन ग्रहण कर लिया। युद्ध के प्रारम्भ होने पर रैन्डाल्फ़ अपने देश की सेवा करने के उद्देश्य से सेना में भर्ती हो गये।

मिस्टर चर्चिल की दो पुत्रियों में एक सराह, प्रसिद्ध अभिनेता विक ओलीवर को ब्याही है। सराह स्वयं भी एक प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। दूसरी पुत्री डियना का विवाह पहले सर अबेबेले के पुत्र से हुआ था पर तलाक़ के बाद वह पार्लियामेंट के सदस्य मिस्टर डंकन सैन्डीस की पत्नी हुई।

व्यक्तित्व

मिस्टर चर्चिल का व्यक्तित्व अत्यन्त सरल तथा प्रभावशाली है। उनके शरीर की बनावट भी इस प्रकार की है कि जो भी उन्हें देखता है उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। चेहरे से सरलता, होठों से

हँसी और आँखों से गम्भीरता टपकती रहती है। मिस्टर चर्चिल का जीवन सदैव से संघर्ष का जीवन रहा है। जीवन का उन्होंने एक सैनिक की भाँति ही सदैव सामना किया है। उनका यह विश्वास रहा है कि जिस कार्य में उन्हें संघर्ष तथा कठिनाइयों का सामना न करना पड़े वह कदापि आनन्ददायक नहीं हो सकता। जिस समय उन्होंने राजनीतिक-क्षेत्र में प्रवेश किया उसी समय उन्होंने अपनी इस प्रवृत्ति का परिचय दिया। अनुदारदल उनका अनेक निर्वाचन-क्षेत्र में स्वागत करने के लिए तैयार था परन्तु उन्होंने ओल्डम के निर्वाचन-क्षेत्र को इसी लिए चुना क्योंकि उसमें उन्हें बहुत अधिक संघर्ष का सामना करना था।

मिस्टर चर्चिल एक प्रभावशाली वक्ता हैं। जीवन में उन्हें सबसे बड़ी सफलता अपनी भाषण-शक्ति-द्वारा ही प्राप्त हुई है। उनके भाषण देने का ढंग इतना प्रभावोत्पादक होता है कि जिस समय वे भाषण देने लगते हैं श्रोता मंत्रमुग्ध-से सुनते रह जाते हैं। बड़ी से बड़ी श्रोतामंडली के सम्मुख भी वे उसी प्रकार शान्ति और निर्भयता से भाषण देते हैं जैसे एक साधारण-सी बैठक में दे रहे हों। पार्लियामेंट के सदस्य निर्वाचित होने के पश्चात् जब उन्हें अपना प्रथम भाषण करना पड़ा था उस समय उन्होंने जिस योग्यता का परिचय दिया वह निःसंदेह उनकी तेजस्विता का परिचायक है। पार्लियामेंट में केवल वे ही व्यक्ति प्रथम भाषण में सफल हो सकते हैं जो कुछ समय तक पार्लियामेंट के विवाद में भाग ले चुके हों तथा उनके बोलने का साहस खुल गया हो। परन्तु मिस्टर चर्चिल को उस प्रथम अवसर पर ही प्रसिद्ध वक्ता लायड जार्ज के बाद भाषण करना था। पहले तो उन्हें कठिनाई मालूम पड़ी परन्तु ज्यों ही उन्हें भाषण प्रारम्भ करने के लिए एक वाक्य मिल गया उन्होंने अपना ओजस्वी भाषण शुरू कर दिया। उनको उस भाषण में सफलता भी खूब मिली। अपनी भाषण-शक्ति के कारण मिस्टर चर्चिल योरप के सर्वश्रेष्ठ वक्ता समझे जाते हैं।

मिस्टर चर्चिल के भाषणों का विषय अधिकतर कटु आलोचना होता है। वे पार्लियामेंट में जिस भी पक्ष की आलोचना करते हैं। उसकी एक-एक बातों पर इस क़दर प्रकाश डालते हैं जिससे कोई भी उनके तर्कों को काट न सके। यही कारण है कि जिस पार्टी में वे रहे उनका सदैव ही बहुत आदर हुआ और वे उसके सर्वश्रेष्ठ वक्ता बने रहे। ब्राड्रिक योजना के अवसर पर उन्होंने सरकार की जो कटु आलोचना की थी वह पार्लियामेंट के इतिहास में अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है। उसके बाद जब इंडिया बिल पर पार्लियामेंट में विवाद चल रहा था उस अवसर पर भी उन्होंने बड़े ही जोश के साथ उसका विरोध किया। अपनी उन आलोचनाओं के कारण वे इँगलैंड और भारत में लोकप्रिय हो गये। उस समय की सरकार ने भारत के सम्बन्ध में जो योजना तैयार की थी उसका चर्चिल ने बड़ा विरोध किया।

श्रेष्ठ वक्ता तथा आलोचक होने के अतिरिक्त मिस्टर चर्चिल एक श्रेष्ठ पत्रकार तथा लेखक भी हैं। राजनैतिक जीवन के प्रारम्भिक काल में वे अपनी जीविका अपनी लेखनी-द्वारा उपार्जित करते थे। सैनिक जीवन के साथ ही साथ उन्होंने अपने पत्रकार-जीवन का प्रारम्भ किया था। पत्रकार की हैसियत से उनका उद्देश्य सदैव ही आलोचना करना रहा है। । उन्होंने सेना-सम्बन्धी विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इसके अतिरिक्त वे समय-समय पर पत्रों में बराबर लेख आदि लिखते रहे हैं। अपनी पहली पुस्तक 'मालकन्द युद्धक्षेत्र' (The Malkand Field Force) द्वारा ही उन्होंने काफ़ी ख्याति प्राप्त कर ली थी। उसके बाद 'नदी का युद्ध' (The River War) प्रकाशित हुई जिसने उनके नाम को और भी लोकप्रिय बना दिया। इन दो पुस्तकों के बाद अन्य बहुत-सी पुस्तकें प्रकाशित हुईं जिनमें कई तो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। राजनीति-सम्बन्धी पुस्तकों में 'विश्व संकट' (The world crisis), The After math, Thought

and Adventures, और Great contemporaries अधिक उल्लेखनीय हैं।

मिस्टर चर्चिल की लेखनशैली अत्यन्त प्रभावपूर्ण है। जिस तर्कशीलता का अवलम्बन वे अपने भाषणों में लेते है उसी का अपनी पुस्तकों में भी लेते हैं। उनकी भाषा अत्यन्त प्रभावपूर्ण तथा परिमार्जित होती है। अँगरेज़ी गद्य-साहित्य मे मिस्टर चर्चिल अपनी तर्कपूर्ण शैली के लिए एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। थोड़े-से शब्दों मे चुभती हुई बात कह देने में वे अपना सानी नहीं रखते। मिस्टर चर्चिल की शैली की यह विशेषता है कि जो कुछ वे कहना चाहते है उसे वे अत्यन्त थोड़े में तथा सीधे-सादे शब्दों में इस प्रकार कह देते हैं कि पढ़नेवाले पर उसका बहुत प्रभाव पड़ता है। अपनी इसी विशेषता के कारण वे शीघ्र ही एक श्रेष्ठ लेखक समझे जाने लगे। मिस्टर चर्चिल के पुत्र रैन्डाल्फ़ चर्चिल में भी अपने पिता के इस गुण के दर्शन हमें होते हैं।

मिस्टर चर्चिल को बाग़बानी से बड़ा प्रेम है। उनकी पत्नी भी फूलों से बहुत प्रेम करती हैं। बहुधा अवकाश के समय में वे अपने देहात के मकान में जाते हैं। वहाँ उन्होंने एक बहुत सुन्दर बाग़ तैयार कर रखा है। मिस्टर चर्चिल स्वयं बाग़ में एक-एक पौधे की देखभाल करते हैं; बाग़ के सौंदर्य का वे सदैव ध्यान रखते हैं। अपने हाथों से उन्होंने बाग़ में छोटे-छोटे झरने बनाये है। राजनैतिक कामों से अवकाश प्राप्त करके अपने थके हुए मन को बहलाने का उनका यह अच्छा साधन है। मिस्टर चर्चिल को सदैव ही कुछ न कुछ करते रहना पसन्द है। ख़ाली बैठना तो वे जानते ही नहीं। उन्होंने काम को ही अपना एकमात्र जीवन-साथी समझा है। छुट्टियों के दिनों में वे बाहर जाकर शिकार का शौक़ पूरा करते हैं। मिस्टर चर्चिल को घर के बाहर का जीवन बहुत पसन्द है। परन्तु कार्य के आधिक्य के कारण ऐसे कम अवसर आते हैं जब वे बाहर जा सकें।

मिस्टर चर्चिल की पत्नी सदैव उनके सुख का ध्यान रखती है। अपनी तरफ़ से मिस्टर चर्चिल लापरवाह व्यक्ति कहे जा सकते हैं। उनका सारा ध्यान स्वयं उनकी पत्नी को करना पड़ता है। मिस्टर चर्चिल अपनी पत्नी का बड़ा ध्यान रखते हैं। जब कभी उन्हें कोई महत्त्वपूर्ण भाषण देना होता है तब वे उसकी रूप-रेखा पहले अपनी पत्नी को सुना देते हैं। बहुधा उनकी पत्नी उसके संबंध में कुछ सम्मति भी दे देती हैं। जब कभी उन्हें हाउस आफ़ कामंस में कोई महत्त्वपूर्ण भाषण देना होता है तब उनकी पत्नी, अपनी लड़कियों के साथ, वहाँ अवश्य उपस्थित होती हैं। मिस्टर चर्चिल की प्रारम्भ से ही, जब वे पार्लियामेंट के युवक सदस्य थे, यह आदत रही है कि जब वे पार्लियामेंट में भाषण देने उठते हैं तब पहले अपनी पत्नी की ओर देखकर आदरपूर्वक हाथ उठा देते हैं। उनके इस क्रम में आज तक कभी बाधा नहीं पड़ी।

मिस्टर चर्चिल ने सुख-दुःख, अच्छी और बुरी परिस्थितियों तथा संघर्ष और आराम का सदैव प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया है। परिस्थितियों से लड़ते रहना ही उनका उद्देश्य रहा है। हार उन्होंने कभी नहीं मानी और न हताश ही हुए हैं। उनके वर्तमान गौरव का बहुत कुछ श्रेय उनकी संघर्षप्रियता को ही है।

मेरा संघर्ष

हिटलर आज के सभ्य संसार के लिए हौआ बन गया है। यहूदी उसके नाम से काँपते हैं; अँगरेज़ उससे घृणा करते हैं; शेष राष्ट्रों में से कोई उसे नृशंस हत्यारा कहता है; कोई सुनहले स्वप्न देखनेवाला तानाशाह ! कोई उसके गुट्ट में शामिल होकर उसके नाम के पीछे निर्बल राष्ट्रों का शिकार करना चाहता है; कोई उसकी सत्ता को सभ्यता के लिए ख़तरा समझता है।

पर हिटलर स्वयं क्या है और क्या करना चाहता है, इसका वर्णन उसने अपनी 'मेनकेम्फ़' में किया है। कहते हैं कि 'मेनकेम्फ़' की बिक्री बाइबिल के बाद संसार में सबसे अधिक हुई है। 'मेरा संघर्ष' उसी मेनकेम्फ़ का अनुवाद है।

इसे पढ़िए और निर्णय कीजिए कि हिटलर की सत्ता और नीति वर्त्तमान संसार के लिए कितने बड़े ख़तरे की चीज़ है।